

091029



Indira Gandhi National
Centre for the Arts

॥ हिताधीन विनाशाय चोक्तः ॥

सं० २०११-१२ २२५२८

की लाश गिराई गई।

॥ हिताधीन विनाशाय चोक्तः ॥



सं० प०

॥ २ ॥

प्र०

०

तिपि तिमं जुष्टममिति जुष्टमं देवदूतममिति देवदूतं अदूतं असिह
विहीनमिहिविः धानं दृढहस्वामाकाः मातयज्ञपतिरितियज्ञपतिः का
नृपविष्णुः स्वाकमता उरुवाताया अपहतमित्यपहते रक्षः यक्षेतां पंचादेव
स्यत्वा सवितुः प्रसवइति सवे अश्विनो वाङ्म्यामिति वाङ्म्यां प्रध्नः ॥ ६ ॥
साम्यां ॥ ६ ॥ अग्नये जुष्टं गङ्गामि अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं गङ्गामि भूताया त्वा
ता अरानये स्वः अमि विरव्येषमित्समि विरव्येषं ॥ ७ ॥ दृढेहतां दुर्गः एयि
व्या उरु अंतरिक्षं अनु एमि एयि व्या त्वा नाभौ सादयामि अदित्या उप
स्यइत्युपस्य अग्ने हव्यं रक्षस्वा ॥ ८ ॥ पवित्रे इति पवित्रे स्यः त्रैलोक्यं सवितुः
वः प्रसवइति प्रसवे उरु पुनामि अछिदेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिरिति

२

रश्मिः ॥ १ ॥ देवी आपः श्वग्ने गुवइत्यग्ने गुवः अग्ने पुवइत्यग्ने पुवः अग्ने
उमं अद्या यज्ञं नयत सुधातुमिति सुधातुं यज्ञपतिमिति यज्ञपतिं देवायुवं देव
युवमिति देवयुवं ॥ २ ॥ युष्मा इन्द्रः अवणीत वृत्रतूर्यइति वृत्रतूर्यं प्रयइन्द्रं अ
वणीधं वृत्रतूर्यइति वृत्रतूर्यं प्रोसिता इति प्रोसिता स्या अग्नये त्वा जुष्टं प्र
उसा मि अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्राउसामि ॥ ३ ॥ दैव्याया कर्मणे शुधधुं
दिवयत्या काइति देवयज्ञायै यत्वावः अभ्युक्षः पराजघानेति पराजघाना
एतत्वावः तत्वा शुधामि ॥ ४ ॥ रश्मि असि अवधूतमित्यवधूतं रक्षः अवधूता
इत्यवधूता अरानये अदित्या त्वका असि प्रतिवा अदिति वेतु ॥ १ ॥
अदिः असि वानस्पत्यः गावा असि एथुवुं इति एथुवुं ध्रः प्रतिवा अ

11. 11. 11
11. 11. 11

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

जिययुजः न्ये ॥ ३ ॥ नाणायात्वा। उदानायेत्युनः आनाये। व्यानायेति विः आसीनाये
 दीक्षा। अनु। प्रसितिमिति प्रः स्थिति। आयुषा। धा। वक्षुषे। ला। महीना। पयः। अ
 सि ॥ ४ ॥ वेदः। अमि। वेदः। अनात्वं। देवा। वेदः। देवेभ्यः। वेदः। अमवः। तेना। मद्ये। वेदः।
 भुवः ॥ ५ ॥ सावरासि। सं। आपः। जेदधीभिः। सं। उ। पधयः। रमेना। सं। रेवती। ज
 गतीभिः। सं। मधमतीरिति मधुः मतीः। मधमतीभिः रिति मधुः मतीभिः। एच्या
 तो। जनयमे। ला। सं। योमि ॥ २ ॥ इदं। अग्नेः। इदं। अग्नी। योमयाः। इपो। ला। घर्मे। अ
 सि। विद्यायु रिति विश्वः आयुः। उरुप्रयाडकुरुडनेय। उरुप्रयस्वा। उरुने। यजपति
 रितियुजः पतिः। प्रयतो ॥ ३ ॥ अग्निः। तेत्त्ववर्मादि ॥ सीवा। अंतरितमि स्यतः ॥ इने
 ॥ गस्यः। अंतरिताइत्येतः। इताः। अगतयः। देवः। ला। सविता। अपययुवविष्ट। अवि

धिनार्कः ॥ ३ ॥ माभुः। मा। सं। विख्याः। अनेमरुः। यजः। अनेमरुः। यजमानस्य। प्रसे
 तिप्रः जा। श्रयाव। विताया। दिताया। एकतायात्वा ॥ ४ ॥ आ। इदं। अधरकृतमित्य
 धुरः कृतो देवः यः। इंदर्या। बाहुः। अमि। दक्षिणः। सदस्यमृष्टि रिति सदस्यः मृष्टि
 शानतेजा इति शानतेना। वायुः। असि। तिग्मतेजा इति तिग्मतेजाः। विषतः। वधः
 ॥ १ ॥ एथिव्ये। वमः। असि। एथिविदेवयजुनीति देवः यजनिर्दुषेध्याः। ते। मूलः। मा।
 हि ॥ सिधे ॥ २ ॥ ब्रजे। गच्छ। गो। धानं। गोस्थानमिति गोः स्थानं। वपैतु। ते। द्यौः।
 बधानादेवा। सवितरिति सवितः। परमस्यो। एथिव्यो। शनेना। याशैः। यः। अस्मान्
 धिष्टि। यः। च। वयः। द्विष्मः। ते। अतः। मा। मौकु ॥ ३ ॥ अयः। अरुः। वध्यासमा। एथिव्ये।
 देवयजनादिति देवः यजनात्वा। अरुः। इत्यरुः। दिवा। मा। पत्रः। इमः। ते। द्यौः। मासः।

सं० ५०
६

वह्निः अग्निः अस्मिन् इति स्मृकः म्याः लाज ए० प्राउस्मामि ॥ १॥ अदिसोः व्यंरुमि
ति विः उदने अग्निः विष्णोः स्मृपः अग्निः कर्त्तुं अदसमित्युक्तं अदसं वा स्मृ
णामि स्वासस्मामिति सुः आसस्मादिवेभ्यः ॥ १॥ भूपतय इति भूः पतये स्वाहा
भुवनपतय इति भुवनः पतये भूतानां पतये स्वाहा भूध्रुवः स्वाविश्वावेभ्यः
विष्वक्पूरिति विष्वक् वेभ्यः परिधिधातु विश्वस्या अदिसो ॥ ३॥ यजमानस्य परि
धिरिति परिधिः अग्निः अग्निः इक्षुः इक्षितः इन्द्रिया वाहुः अग्निः दक्षिणः
मित्रावरुणो वा उन्नरतः परिधतो ध्रुवण धर्मणा ॥ ४॥ वीति होत्रमिति वी
ति होत्रां वा कवेः धर्मतमिति द्युमंतो सं इधीमहि अग्ने बृहंतो अध्वरो ॥ ५॥
समिदिति सं इत् अग्निः सूर्यः स्वा पुरस्तात् पावाकस्याः विवा अभिशस्या

इयमिः शस्ये सवितुः याहु इति वाहुः स्मृः ॥ ६॥ कर्त्तुं अदसमित्युक्तं अदसं वा
स्मृणामि स्वासस्मामिति सुः आसस्मादिवेभ्यः आत्मा वसवः रुद्रा आदित्याः
सदंतु ॥ ७॥ धृतावी अग्निः जुहुः नामासा इदं प्रियेण धाम्ना प्रिये सदसि सी
दा उपभृदित्युपभृत् क्रवा प्रियेण धाम्ना प्रिये सदसि सीदा ॥ ८॥ क्रवा अस्म
दना कृतस्य योनो ना विष्णो इति विष्णो पादि पादि यज्ञोपाहि यज्ञयतिमिति
यज्ञः पति पाहि मां यज्ञस्यमिति यज्ञः न्ये ॥ ९॥ अग्ने वाजजिदिति वाजः तवा
जं वा सव्येन वज्रजितमिति वाजः जितं सांमि नमः देवेभ्यः स्वाधा प्रि
भ्य इति प्रिभ्यः सुयमे इति सुयमे मा भूयास्तं ॥ १०॥ अस्वतो अवा आज्ये दे
वेभ्यः संप्रिया मां अग्निं विष्णो इति विष्णो मात्मा अवाकमियं ॥ ११॥ वसुमती

सं० ४०० ॥ मित्रं स्यात्वा चक्षुषा। प्रति। ईक्षे। प्रति। गृह्णामि ॥४॥ आ। दे। अने। त्वा।
 आख्येन। प्रा। अज्जामि। बृहस्पतेः। मुखेन। या। अस्वित्प० सु। अंतः। देवताः। ताः। इ
 दे। रामयेतु ॥५॥ स्वाहा कृतमिति स्वाहाः कृतं। जटरे। ईदस्य। गच्छ। घसिना। मे। मा
 । मे। एकस्मिन्। ऊर्ध्वे। मे। नाभेः। सीद ॥६॥ ईदस्य। वा। जटरे। सादयामि। प्रजापते। रि
 ति प्रजाः पते। भागः। असि। ऊर्जं स्वान्। पयस्वान् ॥७॥ प्राणायानौ। मे। पाहि
 । समानव्यानौ। उदानव्यानौ। ऊर्कं। असि। ऊर्जं। मयि। धेहि। अस्मि। ति। अ। मि। मा
 । मे। सिंहाः। अमुत्रा। अमुष्मिन्। लोके। उह। व। एका। ने। अने। समिदिति सं। इत ॥
 । तथा। वर्षस्व। वा। च। प्यायस्व। वर्षिषीमहि। च। वयं। आ। च। प्यासिषीमहि ॥
 । एतन्। ति। देवा। म वितः। यज्ञे। प्रा। आहुः। बृहस्पतेये। ब्रह्मणे। तेन। यज्ञे। अवा। तेन। य

इ पतिमिति यज्ञः पतिनेन मा। अवा। १०० मनः। ज्योतिः। जुषता। आ। ज्यस्यः। बृह
 स्पतिः। यज्ञोऽमीनो नोनु। अरि। ए। यज्ञे। सं। उगं। रधानु। विश्वे। देवाः। सः। इदं। मादयेनो।
 । बुध्नि। निधु। ११ अग्नीषोमयोः। उज्जिनि। मित्युतः। जिनि। अनु। उना। ते। पावाजस्य। मा
 । प्रसवेनेति प्रः सवेन। प्रा। ऊहामि। अग्नीषोमौ। तौ। अपा। नुदतो। यः। अस्मात्। देष्टि। य
 । च। वयं। द्विषः। वाजस्य। एने। प्रसवेनेति प्रः सवेने। अपा। ऊहामि। इदं। ज्योः। इदं
 । ग्री। इती। द्वा। ग्री। १२ वसुभ्य इति वसुः भ्यः। त्वा। रुद्रभ्यः। आदित्यभ्यः। सो। जानाथा
 । धावो। ए। यीवी। इति धावो। ए। यीवी। मित्रावरुणौ। त्वा। वृथा। अवतो ॥२॥ व्यंनु। व
 । यः। रि। प्रः। रिहा। एही। मरुतो। ए। यती। गच्छ। वरा। ए। त्रिः। भूत्वा। दिवं। गच्छ। नते। न
 । वष्टि। आविह। १३ वसुभ्यः। चक्षुषा इति वसुः पा।

सं०६० अस्मिन्वक्तुः। मे। पदित्यो। परिधि। मिति। परिधिः। पुनर्धत्वा। इति। परिधिः। अधत्वाः। अवे
 दिवा। युष्मिन्। मिति। परिधिः। मितिः। गुह्यमानः। ४१। नं। ते। एते। अनु। जोषा। भरा। मि। एषः
 । ना। इति। वतः। अपचतया। ता। इत्यपचतयाते। अन्नि। मियो। पायः। अपि। इति। ४२। स०
 स्रवभागा। इति। स० सुवभागाः। त्या। दृषा। वृहते। प्रसरं। दृषा। प्रसरं। त्या। इति। प्रसरं
 । त्या। परिधयदति। परिधयः। च। देवाः। इमा। वाचः। अमि। विध्वे। गुणं। ते। आस
 ये। त्या। सद्यः। अस्मिन्। बहिः। पा। दयधं। स्वाहा। वाटा। घना। ची। इति। घृता। वी। ४३। धु
 यो। पाते। सुने। इति। सुने। ४४। मुने। मा। धने। ४५। अने। अदत्ता। यो। इयदत्तः। आ
 यो। अ। गति। सा। पा। हि। मा। दिद्योः। पा। हि। प्रसिया। इति। प्रसिया। इति। दुरि। द्या। इति। दुः
 द्यो। दुः। प्रन्या। इति। दुः। अने। अविषे। नः। पितुं। कृणु। सुयरा। सुसदे। ते। सुसरा।

। यानो। स्वाहा। वाटः। ४६। अग्नये। मे। वे। गपत। यदति। संवराः। पतयो। स्वाहा। सरस्वत्ये।
 । यशो। भगिन्यो। इति। यशः। भगिन्ये। स्वाहा। उलूखले। सुसले। यन्। च। अर्षी। आशिश्ने
 । प्रत्या। शिश्ने। पद। यन्। कपाले। ४७। उष्टृषडस्युः। ए। यः। विप्रुपदति। विप्रुषः। मे
 । जुहो। मि। सत्याः। मनु। यन्। मानस्या। कामाः। स्वाहा। आ। प्यायतो। ध्रुवा। दविषा। धृ
 ते। यज्ञये। जमिति। यज्ञः। यज्ञः। प्रति। देवयज्ञः। इति। देवयज्ञः। म्यः। मृयायाः। रुधः
 । अदित्याः। उपरु। इत्युप० छे। उरुधारे। सुरुः। धाग। पृथिवी। यज्ञः। अस्मिन्। ४८। देवाः
 । गावृषिद। इति। गोवृ० विदः। गावृ०। इत्या। गावृ०। इतां। मनसं। सहा। पते। इमं। देवा। यज्ञो। स्वा
 हा। वाते। धाः। ४९। स० बहिः। अ०। दविषा। घृते। न। मे। आ। दिद्योः। वसु। भिरिति। वसुः
 भिः। स०। मरुद्विरिति। मरुतुः। भिः। स०। इदः। विध्वे। देवे। भिरिति। विध्वः। देवेभिः। अ०।

द्वितीयं नमः। गच्छतु यदा सा दृष्टा कः। त्ववि। मुचति। सः। कस्मै। तस्मै। पोषाय। रसः।
 सं। भागः। अस्मि। दावेयः। अस्मि। नृपतपइत्युपवेयः। द्रिषतः। ग्रीवाः। उपवेविद्धि।
 वेगान्। अन्तः। सुभगतिः। सुभग। धारया। इहा॥ सदाः। कमेण्याः। अनवाभिनइ
 त्यनयः। अयिनः। यथा। अमनः। नृहमि। वा। सुभोति। सुभग। सोभेगाया। पुरुत
 सं। पुरुतममि। निपुरुः। तमः। पुरुदूतेति। पुरुदूत। अवस्यन्॥ सं। ववसा। मयसा
 सं। तनूभिः। भगनहि। मनसा। संशिवेन। त्वष्टा। सुदत्रइति। सुदत्रः। वि। दधातु
 रायः। अनु। साहु। तनूः। यत्। विलिष्टमिति। विः। लिष्टं॥ यज्ञः। सं। चति। उपे।
 वा। शिवे। मे। संतिष्ठस्व। अरिष्टे। श्विष्टइति। सुः। ईष्टं। मे। संतिष्ठस्व॥ इति। वि।
 द्युः। नि। अक६ स्तु। जागत्तन। छंदसा। ततः। निर्मकइति। निर्मकः। कः। अस्मा

न। देधियां। च। वयं। द्विष्मः। अंतरिक्षे। त्रैष्टुभेन। त्रैस्तुभेनेति। त्रैस्तुभेन। एयिष्या
 । गायत्रेण। ३॥ अस्मान्। अन्तान्। अख्ये। प्रतिष्ठायाः। प्रतिष्ठायाइति। प्रतिः।
 स्थायाः। अगन्तु। स्वरिति। स्वः। सं। त्योतिषा। अभूम्। ४॥ स्वयंभूतिरि। स्वयंभूः
 । अस्मि। श्रेष्ठः। रस्मिः। वज्रोदाइति। वज्रः। दाः। अस्मि। वज्रः। मेदेहि। स्वयंस्या। आ
 वृतमित्याः। वृत्ते। अनु। आ। वर्ते। ५॥ अग्ने। गृहपतेइति। गृहः। पते। सुगृहपतिरि
 तिसुः। गृहपतिः। अहं। त्वया। गृहपत्येति। गृहः। पत्या। भूयासु। सुगृहपतिमिति। सु
 ऽगृहपतिः। त्वं। मया। गृहपत्येति। हे। शः। पत्या। भूयाः। ६॥ अस्तूरिनः। गार्हपत्या
 नीति। गार्हऽपत्यानि। संनु। शतं। हिमाः। निमिना। न। तेजसा। सं। शिवाधि। स्वयं
 स्या। आवृतमित्याः। वृत्ते। अनु। आ। वर्ते। ७॥ उरु। विलोइति। विलो। वि। क्रमस्व।

उरु। क्षयायानः। रुधि। घृते। घृतयो न इति घृतः योने। पिब। प्रप्रेति प्रः। यत्तप
 तिमिति यत्तपति। तिरु। ततः। अस्मि। तंतुः। अस्मि। अर्धु। मा। तनुहि। अस्मि
 न। यत्तपे। अस्या। साधु। कृत्यायामिति साधुः कृत्याया। अस्मिन्। अने। अस्मि
 न। लोके॥९॥ इदं मे। कर्म। इदं। वीर्यं। पुत्रः। अनुसंतनो बल्यनुः संतनो नुत्य
 मे। व्रतयत इति व्रतः यते। व्रते। अचारिषं। ततः। अशकं। ततः। मे। अराधि। इदं
 । अहं। यः। एव। अस्मि। सः। एव। अस्मि॥१०॥ अग्नये। कथवाहनायेतिकथ्यः
 वाहनाय। स्वाहा। सोमाय॥ पितृ मन इति पितृः मनो। स्वाहा। अपहता इत्यप
 ऽहताः। असुराः। रसाः। सि। वेदिषट्। वेदि सट् इति वेदिः सदः॥११॥ ये। रुपाणि
 । प्रतिबुधमाना इति प्रतिबुधमानाः। अस्मराः। संतः। स्वधया। चरति। परापु

रइति परः। पुरः। निपुर इति निःपुरः। ये। भरति। अग्निः। तान्। लोकात्। प्रानुरति।
 अस्मात्। अत्र पितरः। अनमः। वः। पितरः। शुभ्रायातपसे। यत्त। जीवातस्मे।
 रसाय। घोरया। मन्यवै। स्वधायै। वः पितरः। नमः। एतत्। वः पितरः। वासः। गृहा
 नानः। पितरः। इत्त॥४॥ उत। आयुषा। स्वायुषेति सुः। आयुषा। उत। पर्जन्यस्य। धा
 मभिरिति धामः। मिः। उत। अस्थ्या। अमृताना। अनुः। पः। आधन। पितरः। गर्भं। कु
 मारं। पुष्करज्जमिति पुष्करः। स्वजं। यथा। इहा। पुरुषाः। सतः। ह। ऊर्जः। वहती
 । अमृतं। घृते। पयः। कीलो। परिस्फुटमिति परिः। स्फुटं। स्वधा। स्थातर्पयता मे।
 पितृन्॥५॥ ॥ ६॥ ॥ इक्षिपदपादे द्वितीयोऽव्यायः॥७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ स
 मिधेति सः। इधा। अग्निः। दुवस्यता। घृतेः। बोधयता। अतिथि। आ। अस्मिन्। ह

व्या। जुहोतन॥ सुसमिदायेतिसुऽसमिदाय। शोचिषे। घृतं। नीत्रं। जुहोतना॥ अग्न
 ये। जातवृदसइति जातऽवेदसं। शनं। त्वा। समिद्धि रितिसमितऽभिः। अंगिरः। घृ
 तेन। वदया। मसि। वृदता। गोच। यविष्ट। ३॥ उप। त्वा। अग्ने। हविष्मती। घृतावी
 यं। हयं। न। जुषस्व। समिधु इतिसं। रधः। मम। भू। भुवः। स्वः। द्यौरिवेति
 धोः। इवा। भूमा। भूमिरिवेति भूमिः। इव। रि। मृगा। तस्माः। ते। एधि वि। देवय
 जनीति देवऽयजनि। एषे। अग्निः। अन्नादमित्यनऽअदः। अन्नाद्यायेत्यनऽअ
 द्याया। दधे। प। आ। अयं। गोः। एभिः। अकमीत। असदं। मातरं। पुरः। पि
 तरं। चाप्रय जिति प्रऽयनः। स्वरिति स्वः। ६॥ अतरित्यनः। चरति। रोचना। अस्या।
 प्राणा। अपानतीत्यपऽअनती। वि। अरव्यन्तः। महिषः। दिवो। जनिऽजाताधा

स। वि। रा। मति। वाक्। पातं। गाय। धीयेत। प्रति। वस्तोः। अहः। द्युमिरिति द्युऽभिः। ८॥ अग्निं
 ज्योतिषमित्यग्निऽज्योतिषं। त्वा। वायुमतीमिति वायुऽमती। प्राणवतीमिति प्राणऽ
 वती। स्वर्ग्यमित्यस्वऽग्यां। स्वर्गयेति स्वऽगायं। उप। दधामि। भास्वती। अग्निः
 ज्योतिऽज्योतिः। अग्निः। स्वाहा॥ १॥ सूर्ययेति प्रमितिसूर्यऽज्योतिषा। त्वा। वायुम
 तीमिति वायुऽमती। प्राणवतीमिति प्राणवती। स्वर्ग्यमित्यस्वऽग्यां। स्वर्गये
 तित्वऽगायं। उप। दधामि। भास्वती। सूर्यऽज्योतिः। ज्योतिः। सूर्यः। स्वाहा॥ २॥
 सज्जरिति सऽज्जः। देवेन। सवित्रा। सज्जरितिसऽज्जः। रात्र्या। इंदवत्येतींद्रवत्या। जु
 षाणः। अग्निः। वेतु। स्वाहा॥ ३॥ सज्जरिति सऽज्जः। देवेन। सवित्रा। सज्जरिति सऽज्जः।
 उपसा। इंदवत्येतींद्रवत्या। जुषाणः। सूर्यः। वेतु। स्वाहा॥ ४॥ इह। पुष्टि। पुतिरि

सं० ५०
१३

तिपुष्टिः पतिः दधातु इह प्रज्ञा मिति प्रज्ञा रमयतु प्रज्ञा पतिरिति प्रज्ञाः पतिः अय
येः गृहपतय इति गृहः पतये रयिमन इति रयिः मने पुष्टिपतय इति पुष्टिः पतये
स्वाहा ॥ ५ ॥
स्वाहा अग्नये अन्नादायेत्यन्नः अदाया अन्नपतय इत्यन्नः पतये स्वाहा ॥ ५ ॥
अन्नमित्रं मे अथराका अन्नमित्रो उदकं रुधि इन्द्र अन्नमित्रं पश्वात् मे अन
मित्रं पुरः रुधि ॥ ६ ॥ इन्द्रः पश्वात् इन्द्रः पुरस्तात् इन्द्रः अस्मान् अभि पातु वि
श्वतः इन्द्रः जिघा ७ सतां मना ७ सि विष्णुवी ना वि अस्त्यता ७ ॥ समिदितिसं
इत् असि समिदितिसं इवः मे अग्ने दीदिहि समिदितिसं धेद्वा ते अग्ने ॥ १३ ॥
दीद्या सं ८ उपप्रयं न दुक्यः प्रयंतः अधुरं मंत्रं वोचेना अग्नये आरे अस्मि
त्यस्मे ॥ १० ॥ एवते ॥ ११ ॥ अग्निः मूर्धा दिवः ककुनु पतिः पृथिव्याः अया अपाः

रेता ७ सि जिन्वति ७ ॥ उभा वो इन्द्राग्नी इतीन्द्राग्नी आदुवध्या इत्याः दुवध्या
उत्ताराधसः सहा मादयध्या उभा दातारो इषो रयीणा उभा वाजस्य सातये
दुवे वो ३ अयो ते योनिः रुक्मियः यतः जाना अरीचयाः न जानन् अग्ने आ
रोहा अयातः वर्धयारयि ४ ॥ अयो इह प्रथमः धायि धातु मिरिनिधातु सि
होता यजिष्ठः अधुरेयु इन्द्रा यो अग्नेवानः भृगवः विरुरुचुरिति विरुरुचुः
वनेषु चित्रं विश्वमिति विश्वं विरो विशा इति विरो विशो ५ ॥ अस्या प्रतो
अनुः कृतोऽशुक्रो दुदुक्ते अक्यः पयः सहस्रसामितिसहस्रं सोऽरुधि ६ ॥ ननु
पादितिनः पाः अग्ने असि नन्व मे पाहि आयुर्दीप्त्या युः रा अग्ने असि आ
यु मे देहि दक्षो रो इति वर्चः ७ ॥ अग्ने असि वर्चः मे देहि ७ ॥ अग्ने यता मे

नयाः कृतानां मोक्षाः पूणाः दुधानाः त्वाः श्रुतेः हिमाः युमेतमिति द्युः मंतांसा इधी
 नहिः। वयस्वेतः वयस्सुतः वयस्सुतमिति वयः कृतः सहस्वेतः सहस्सुतः सहस्
 तमिति सहः कृतः अग्नेः सपत्न्यं भनमिति सपत्न्यं दमनं अदब्बा सः अदभ्यः।
 चित्रावसोः चित्रावसो इति चित्रः वसोः स्वस्तिने पारं अशीयाः संत्वाः अग्नेः सूर्य
 स्यावर्चसा अगाथाः कृषीणां सुकृतेन॥ १०॥ प्रियेणा धान्नाः अहं अयुषावर्च
 सा प्रजयेति प्रजयाः रायः योषेणा म्मिषीया अंधः स्था अंधः वः भक्षीय महः
 स्या महः वः भक्षीया ११ कृज्जः स्यः कृज्जः वः भक्षीया रायः योषः स्या रायः
 योषः वः भक्षीया रेवतीः रमं धां अस्मिन् योनीः गोष्ठे गोस्थ इति गोः स्तेः स
 यो लोके १२॥ इहा एवास्मः इतः अया गाता सः हि ते निसेः हिता असि विवः

१३॥ उपाः त्वाः अग्नेः दिवे दिव इति दिवे
 रोषावसु रिति रोषाः वसुः अधिया वयं नमः भरतः आः इमसि १४ राजंतां अ
 ध्वराणां गोपाः कृतस्य दी दिवि वर्द्धमानं खेदमे १५॥ सः नः पिते वेति पि
 ताः इवास्म नवे अग्नेः सृषाय न इति सुः उपाय न भवाः सचस्वः नः स्वस्व यै १६
 अग्नेः त्वं नः अंतमः उता ज्ञाता विवाः भवा वरुथ्यः वसुः अग्निः वसु अवा
 तवस्सु अवाः अकृ नक्षिः द्युमन्नमिति द्युमन्न तमं रयिं १७ नः चो
 गोविष्ठा दी दिव इति दी दिवः सुम्नाय नूनं इमहे सखि अदति सखिः भ्यः
 नः नो बोधिः अधि हवं उरुष्या नः अघायतः अघयत इत्यघः यतः समस्मान्
 १८ इहे आः इहि अदिने काम्ये आः इहि मयि कामं मधरंणमिति कामः

सं
१५

धर ण भूयान् ॥ १९ ॥ सोमानास्वरणां कृणुहि ब्रह्मणः पते कक्षीयन्ते यः श्रौमि
जः ॥ २० ॥ यः रिवानायः अमीव हेयमीव हा वसुविदिति वसुः विना पुष्टिर्वर्धन इति
पुष्टिर्वर्धनः सः ॥ नः सिक्नु सिमत्कि तिसिक्नु यः ॥ तुहः ॥ २१ ॥ मानः ॥ शः ॥
अरुणः ॥ धृतिः ॥ प्रणकामर्त्यस्यारक्षः ॥ नः ब्रह्मणः पते ॥ २२ ॥ महिः ॥ जीणाः ॥ अवः ॥
अस्कः ॥ दक्षः ॥ मित्रस्याः श्रयमाः ॥ दुराधर्षमिति दुः ॥ आधर्षः वरुणस्यो ॥ २३ ॥ न
हितोऽयमाचनः ॥ नाअधस्वित्यधः ॥ सुवारणेषु ईशेति पुः ॥ अघशः ॥ सः ॥
त्यघः ॥ शः ॥ २४ ॥ तोहि पुत्रासः ॥ अदितेः ॥ प्राजीवसे मर्त्यायाः ॥ लीतिः ॥ यच्छेति ॥ २५ ॥
अजस्रम् ॥ २५ ॥ कराचनः ॥ सरीः ॥ अक्षिनाः ॥ इन्द्रः ॥ सञ्चमिः ॥ राशुषे ॥ उपोपेत्युपः
उपा इन्द्रः ॥ नमधवन्निति मघः ॥ वनः ॥ भूयः ॥ इदानीते ॥ दानं देवस्य ॥ एव्यते ॥ २६ ॥

तदा सुविदुः वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयादिति प्रः चोद
याना ॥ २७ ॥ पतिंति ॥ इच्छमः ॥ दुर्दभ इति दुः ॥ इभः ॥ रथः ॥ अस्मान् ॥ अश्वानु विन्धन्ते ॥ यि
नारक्षसि ॥ दाशुषः ॥ समिद्ध इति संः ॥ इद्धः ॥ माः सं ॥ अर्धया प्रजयेति प्रः ॥ जया ॥ चा
धनेना ॥ २८ ॥ ॥ भः ॥ सुवः ॥ स्वरित्स्वेः ॥ सुप्रजा इति सुः ॥ प्रजाः ॥ जजायेति प्रः ॥ जया ॥
भूयासे ॥ सुवीर इति सुः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥ सुपोष इति सुः ॥ पोषः ॥ पोषेत् ॥ २९ ॥ नये ॥ प्रजामि
ति प्रः ॥ ज्ञा ॥ मेपाहि ॥ शः ॥ सः ॥ पशूनामेपाहि ॥ आश्वगन्धः ॥ विश्ववेदः ॥ समिति वि
श्ववेदसं ॥ अस्माभ्या वसुविन्नममिति वसुविन्नमं ॥ ३० ॥ अग्नेः सं प्राप्ति तिसं ॥
अभिः ॥ दुस्मा अभिः ॥ सहः ॥ चआयच्छस्वाभये ॥ अग्निः ॥ गृहपतिरिति गृहप
तिः ॥ गार्हपत्य इति गार्हः ॥ यत्यः ॥ प्रजावानिति प्रजाः ॥ वाना वसुविन्नम इति वसुवि

सं० ५७। नृत्ततः॥ ३॥ अने। गुरुपुत्र इति ग्रहः पते। शुभि। शुधुन्ना अभि। सह। आ। युष्स्व
१६। ॥ हा। माविभीतामावेष्ट्वा ऊर्जो विभ्रंत। आ। इससि। धाऊर्जो विभ्रंत। क
॥ सुमनाइते सुमनाः। सुमेधा इति सुमेधाः। गृहा च। आ। एभि। मनसा भोदमा
नयेषीम् प्रध्येतीत्यधिः॥ एति। प्रवसन्निति प्रवसन्। येषु। सैमनसः। बुद्धः
॥ ५॥ गृहाम्। उप। क्रयामहे ते। ज्ञाने तु। ज्ञानतः। उपद्रूता इत्युपद्रूताः। दु
हागा वः। उपद्रूता इत्युपद्रूताः। अज्ञा वयः॥ ६॥ अथो इत्यथो। अनस्था काका
लः। उपद्रूता इत्युपद्रूताः। गृहेषु। नः। सेमाया वः। शोखे। प्रापद्ये। शिवं। शम्भा १६
शोयो रितिवो यो मः॥ अरं योरिति शां यो॥ ७॥ प्रघासिन इति प्रघासिनः। ह
वामे हे। वरुतः। च रिशदसः। करं मेण। संजोषस इति संजोषसः॥ ९॥ यत्।

यामो अरण्या सभायां इदं दिवा एनं चक्रमावयं इदं तत्राश्वं यजामहे स्वा
हा ॥ २॥ मो इति मो । सुनिः इदं अत्र एष्विति एत् सुदेवः अस्ति हि स्मृते । शुक्रि
नश्च यदा त्ववः या ॥ ३॥ जित् । यस्यामीत्युच्यते । यस्या हविष्मत् । मरुतः वेदे
॥ ४॥ अक्रन । कर्मोक्तं इति कर्म । कृतं । सहवावा । मयो भुवेति मयः । भु
वा देवेभ्यः । कर्म । कृत्वा । अस्तं । प्रादुता सचा भुव इति सचा भुव ॥ ४॥ अवभृथे
त्यवः । भृथानि भुंयुणेति निः । भुंयुणा । निवेरुति । निः । वेरुः । अस्ति । निवुंयुणेति निः ।
भुंयुणा । अवदेवः । देवकृतमिति देवः कृतं । एनः । अयासि वं । अवं । मर्त्यः । मर्त्य
कृतमिति मर्त्यः कृतं । पुरुष इति पुरुः । गच्छ । देव । त्रिषः । याहि ॥ ५॥ पूर्णा ।
हविः । पुरा । पुरा । सुपूर्णं तिसुः पूर्णं । पूनः । पुरा । पतावस्वेवेति वस्वाः । इवा वि की

॥ १४ ॥ पातुते। दुष्कृत्तुः। अतः कृतो इति शतः कृतो॥ १५ देहि। मे। देहा मिते। नि। मे धे
 १५ ॥ नि। ते। देहो। नि। हार मिति निः। हारं। नि। हार मिते। नि। हार मिति निः। हारं। नि। हार
 सि। मे। स्वाहा॥ २॥ असन्। अमी मदेत। हि। अया। प्रिया। अधूषता। अस्तोषता। स्व
 भाव इति स्वः। भावः। वि। प्राः। न विष्ठया। मती। योज। नु। इन्द्र। ते। हरी इति हरी॥ १॥
 सुसंहरामिति सुः। संहरा। त्वा। वयं। मघवन्। निति मघः। वन्। वंदिषीमहि। प्रानूनं।
 पूर्णवंधुर इति पूर्णः। वंधुरः। स्तुतः। यासि। वशान्। अनु। योज। नु। इन्द्र। ते। हरी इति
 हरी॥ २॥ मनः। नु। आ। कुत्रामहे। नारायणः। सेत। स्तोमेन। पितृणां। चामन्तिरिति १७
 मन्त्रः। मिः॥ ३॥ आ। नः॥ एनु। मनः। पुनरिति पुनः। कृत्वो। दृष्टाय। जीवसे। ज्योक्। वासु
 र्ये। हि। शे॥ ४॥ पुनः। ना। पितरः। मनः। ददातु। दैव्यः। जनः। जीव। ब्राते। सवेमहि। ५॥ वे।

यो। सोमा। ब्रते। तवा। मनः। तनूषु। विभ्रतः। प्रजावंत इति प्रजाः। वंतः। सवेमहि। ६॥ ए
 षः। ते। रुद्रा। भागः। सहा। स्वस्वा। अं। विक्रयाते। जुषस्वा। स्वाहा। एषः। ते। रुद्रा। भागः। आ
 मु। ते। पशुः॥ १॥ अवारुद्रं। अहीमहि। अवारुद्रं। अंबकमिति त्रिः। अंबकं। यथा।
 नः। वस्यसः। करत। यथा। नः। श्रियसः। करत। यथा। नः। व्यवसाययादिति त्रिः। अव
 साययात। २॥ भेषजं। असिलेषजं। गवे। अश्वया। पुरुषाया। भेषजं। सुगमिति सु
 ३॥ मेषाया। मेष्म॥ ३॥ अंबकमिति त्रिः। अंबकं। यजामहे। सुगंधिमिति सुः। गंधि
 पुष्टिवर्द्धनमिति पुष्टिः। वर्द्धनं। उर्वारुकमिवेत्युर्वारुकं। इवा। बंधनात। मृत्याः। मुर
 पोया। मा। त्रमृतात॥ ४॥ अंबकमिति त्रिः। अंबकं। यजामहे। सुगंधिमिति सुः। गंधि
 धि। पुष्टिवर्द्धनमिति पतिः। वर्द्धनं। उर्वारुकमिवेत्युर्वारुकं। इवा। बंधनात। इतः।

स-

१८॥

मुहूर्त्तान्ताऽनुतः॥५॥ एतेन रुद्रा अवसेना पराभूजवत इति भूजवतः अतिरु-
द्रिः अवतन्तु ध्वेयवततः धन्वा पिनाका वस इति पिनाकः अवसः कृत्तिवासा इ-
ति कृत्तिवासाः अहिः सन्तः शिवः शतः अतिरुद्रिः ६॥ वाजिनो वाजः अ-
नुभसः अस्मत्पारेतः सिकः अमृतः बलाया विश्वे देवाः अभिपयतु संबभूवु-
रिति संबभूवुः नत्तमा धिनोतु प्रजयेति प्रजया धनेन १॥ वाजी अहं वाजि-
नस्य उपद्रुत इत्युद्रुतः उपद्रुतस्य सुपद्रुतस्य भसयामि वाजो वाजी भूया-
त् २॥ स विनापसूता इति प्रसूता देव्यः आपः आपः उदंतुति नत्तं दीर्घायु- १८
त्वायेति दीर्घायुः त्वाया वर्चसे ३॥ कस्य यस्यां व्यायुषमिति त्रिः आयुषं जम-
दग्नेरिति जमदग्नेः व्यायुषमिति त्रिः आयुषं यत्त देवानां व्यायुषमिति त्रिः

अयुषं नत्तमे अस्मा व्यायुषमिति त्रिः अयुषं ४॥ येन धाता ब्रह्मस्यते इदं स-
च आयुषं अवपत्तेनाते वपामि ब्रह्मणा जीवानवे जीवनाय ५॥ दी-
र्घायुत्वायेति दीर्घायुः त्वाया वर्चसे सुप्रजास्वायेति सुप्रजाः त्वाया-
वा असी अथो इत्यथो जीवा शरदः शतं ६॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥
ह्रिः ७॥ आ इदं भगन्मा देवयजनमिति देवयजनं एयिमा यजः देवा-
रा अनुषत विश्वे रुक्मान्भ्यामित्युक्त्वा माभ्यां संनरत इति संनरता-
यजुर्मितिरियजुःभिः रायः पोषणांसा इषा महेम १॥ इमाः आपः शोकं
इत्यमेतन्तु देवी ओषधे आयस्वा स्वधित इति स्वधिते मा एनं हि ६ सी १८
आपः अस्मा वामातरां सुधयंत घृतेन त घृतप्रद इति घनः घ्नः पुनंतु २॥

विश्वं हिरिप्रः प्रवहतीति प्रः वहति दिव्यः । उग्रः । इन्द्रः । आभ्यः । युधिः । आ । पूतः । एभिः ।
 २ । स्यात्पत्तेः । तनूः । असिः । तांत्वा । शिवां । शम्भो । परि । दधोमद्रौ वज्रं । पुथ्यन् ॥ ३ ॥
 महीनां । पयः । असिः । कर्चोदा इति कर्चः । दाः । असि कर्चः । मे । देहि । वृत्रस्य । कनीनका
 । असिः । चसुर्दा इति चसुः । दाः । असिः । चसुः । मे । देहि ॥ १ ॥ चित्यतिरिति चितः प
 तिः । मा । पुनानु । वाक्यतिरिति वाक् । पतिः । मा । पुनानु । देवः । मा । सविता । पुनानु
 । अछिद्रेण । पवित्रेण । सूर्यस्यारश्मिभिरितिरश्मिः । मिः । तस्मात्ते । पवित्रपतइ
 ति पवित्रः पते । पवित्रपूतस्येति पवित्रः पूतस्य । यत्काम इति यतः । कामः । पुनैत
 त् । श । केयां । आ । बः । देवासः । ईमहे । वामे । प्रयतीति प्रः यति । अध्ये । आ । बः । दे
 दासः । आ । शिषइत्यां । बः । यज्ञियासः । हवामहे ॥ ३ ॥ स्वां लायज्ञं । मनसः । उरोः ।

रिसात्। द्यावा एथिवीभ्यां वातात्। आरभे ॥ ४॥ आकृत्या इत्याः कृत्ये। प्रयुज
इति प्रयुजे। अन्नयोः स्वाहा मधे धायि। मनसे। दीप्ताये। नपसे। सरस्वत्ये। पूषे। अग
ये। स्वाहा। आपः। देवी। ब्रह्मन्। विश्वरांभुव इति विश्वः। रांभुवः। द्यावा एथिवी इति
द्यावा एथिवी। उरु। अंतरिक्षा। ब्रह्मस्य तये। हविषा। विधेमा। स्वाहा ॥ १॥ विश्वः
देवस्य। नउः। मत्तः। वुरीत। सरस्व्या। विश्वः। राये। इधु ध्यति। धुम्नः। वृणीत। पुष्य
ता। स्वाहा ॥ २॥ रुक्तामयोरित्युक्ः। सामयोः। शिल्प्ये इति शिल्प्ये। स्थः। ते इति
। वा। आरभे। ते इति तोमा। पातौ। आ। अस्त्य। यज्ञस्य। उदचदुत्युनः। रुचः। १॥ शमि
। असि। दनै। मे। यच्छानमः। ते। अस्तामा। मा। हि। ६। सीः। रुक्। असि। अंगिरसी।
ऊर्णः। प्रहा। रूर्णः। अराः। ऊर्जः। मे। यच्छ। आसोमस्यानीति। असि। विश्वो। रायै

अति। तामै। वज्रमानस्य। इन्द्रस्य। योनिः। असि। सुसखा। इति सु। तस्याः। कृषी। कृषि। ३॥
 २०॥ उन्नश्च। वनस्यते। कृष्ये। मायाहि। अ६६सः। आ। अस्या। यज्ञस्य। उन्नश्च। सुतः।
 रुचः॥ ४॥ व्रतं। कृणुत। व्रतं। कृणुत। अग्निः। ब्रह्म। अग्निः। यज्ञः। वनस्यतिः। यज्ञि
 यः॥ १॥ देवी। धियं। मनामहे। सुमुक्तीकामिति सुः। मुक्तीका। अभि। ह्ये। वर्चो। दामि
 निवर्चः॥ २॥ विश्वधा। यमिति विश्वः। धायसा। सुतीर्थेति सुः। तीर्थो। नः। असत्।
 वशः॥ २॥ ये। देवाः। मनोजातो। इति मनः। जाताः। मनोयुज इति मनः। युजः। दक्षकृत
 उदिति दक्षः। कृतयः। ते। नः। अवन्तु। ते। नः। पातु। ते। न्यः। स्वाहा॥ ३॥ स्वाहा। पीताः। २०
 भवता। यूयो। आपः। अस्माकं। अंतः। उदरे। सुशेवा इति सुः। शेवा। ताः। अस्मभ्यः।
 नयस्याः। अनमीवाः। अनागमः। स्वहृद। देवीः। अमृताः। अता हृदः। अतद्व

२०॥ ३॥ इयंति। यज्ञिया। तनुः। अयः। भुवामिन। प्रजामिति प्रः। जा। अ
 ६॥ होमुचः। इत्यर्हः। सुचः। स्वाहाकृता इति स्वाहाः। कृता। एषिती। आ। विगत। ए
 धिया। सं। भव॥ ५॥ अग्ने। त्वां सु। जागहि। वयं। सु। संदिषीमहि। रिक्षानः। अप्रयुक्त
 नित्यप्रः। युक्तन। प्रबुध इति प्रः। बुधेनः। पुनरिति पुनः। कृषि। ६॥ पुनः। मनः। पुनः।
 आयुः। मे। आ। अगात्। पुनरिति पुनः। चक्षुः। पुनरिति पुनः। श्रोत्रं। मे। आ। अ
 गात्। पुनरिति पुनः। प्राणः। पुनः। आत्मा। मे। आ। अगात्। विश्वानरः। अदक्षः। न
 नृपा इति नृः। पाः। अग्निः। मा। पातु। दुरितादिति दुः। इतात्। अत्रयात्॥ ७॥ त्वं
 अग्निः। तत्पा इति व्रतः। पाः। असि। देवः। श्रीमत्येषु। आ। त्वं। यज्ञेषु। ईश्या। षा
 संस्ते। इयता। तोमा। आ। भूयः। भूयः। देवः। नः। स्ववितः। वसोः। शाना। वसु। अदीत॥

॥१॥ गणाते। पुनः। एतदेवचे। नया। सौभवा। आता। गच्छात्। असि। धृत्वा। मन
 ता। नुष्टा। निषेवे॥१॥ तस्याः। ते। सत्यसवसदति। सत्यः। सवसः। प्रसवइति प्रः। सपे।
 तनु। यज्ञोअगीया। स्वाहा। चंद्रा। असि। युक्तं। अमृतं। वैश्वदेवमिति वैश्वः। देवः। शशि
 नामना। धीः। दक्षिणा। सत्रिया। यज्ञिया। अदितिः। उज्जयतः। शीर्षी। लुभयतः। शी
 र्षी। स्ता। नः। सुप्राचीति। सुप्राची। सुप्रतीचीति। सुप्रतीची। भवा॥३॥ मित्रः। त्वा। पु
 रि। वधीतां। पूषा। अधनः। पातु। इंद्राया। अध्यक्षावेत्यधिः। अक्षाया। अनु। त्वा। मा
 ना। मन्यतां। पिता। आतां। सगर्भ्यइति सः। गर्भ्यः। सखाः। सगर्भ्यः॥४॥ सादेविदि २१
 वं। प्रच्छा। इहि। इंद्राया। सोमो रुद्रः। त्वा। आ। वर्तयतु। स्वस्ति। सोमं सखेति सोमः। स
 र्वा। पुनः। आ। इहि। ५॥ वस्वी। असि। अदितिः। आदित्या। रुद्रा। चंद्रा। वृहस्पतिः।

॥ सुमो। रम्हातु। रुद्रः। वसुभिरिति वसुभिः। आ। चके॥१॥ अदित्या। त्वा। मूर्धनः।
 आ। जियति। देवयजनइति देवः। यजने। एधिव्याः। इत्थायाः। यदे। असि। घृतवदि
 ति घृतः। वतु। स्वाहा॥२॥ अस्मेदत्यस्मे। रमस्वा। अस्मेदत्यस्मेते। बंधुः। त्वेदइति वे
 रायः। अस्मेदत्यस्मे। रायः॥३॥ मा। वयः। रायः। योषेण। दि। योम्नातेतः। रायः। स। अ
 योदेव्या। धिया। सं। दक्षिण्या। कुरुचक्षसेयुरुचक्षसा। मा। मे। आयुः। प्रामोषी
 नोइति मो। अहे। तवा। वीरान्। विदेय। तवा। देवि। सेंदरीति सं। दक्षि॥४॥ एषः। ते।
 गायत्रः। भागः। इति। सोमोमाया। ब्रूतात्। त्रैष्टुभः। विस्तभइति त्रैस्तभः। जोगतः। छं
 देमानात्। मिनिष्ठदः। मानानां। सोमोऽयमिति सोमः। गंत्यो। गच्छतात्। इति। मो। सोमो
 यो ब्रूतात्॥१॥ आस्माकः। असि। युक्तं। ते। सद्यः। विवितइति विः। वितः। त्वा। वि।



धिन्वेनु॥३॥अमि।त्यादेवा।सत्तिनारं।ओ।एयो।कविकनु।मितिक।वे।क्रतु।अची।मि।सत्य
 रुदमिति।नृत्य।संवारल।धमिति।रल।धा।अमि।प्रिया।मति।कवि।उर्ध्वा।यस्य।अ
 मति।भा।अति।धुतन।सवीमनि।हिरण्यपाणि।रिति।हिरण्यपाणि।अमिमीत।
 तुक्रनुरिति।सुक्रनुर।कृपा।स्वरिति।स्व॥३॥प्रजात्यइति।प्रजात्य।त्वा।अनुप्राण
 त्वित्यनुःप्राणतु।प्रजाइति।प्रजा।त्वा।अनुप्राणि।हीत्यनुःप्राणिहि।४॥चंद्र।त्वा।चं
 देण।कीणा।मि।शुक्रं।शुक्रेण।अमृतं।अमृतेन।सम्मेति।गो।अस्ये।इत्यस्ये।ते।व
 द्राणि॥१॥नपसः।तक।असि।प्रजापतेरिति।प्रजापतेः।वर्णः।परमेण।पशुनाकी २०
 प्रसे।सहस्रपोषमिति।सहस्रपोष।या॥२॥मित्रः।नः।आ।इहि।सुमित्रधइतिसुः
 मित्रधः।इइत्य।कुरु।आ।विश।दसिणं।उशनु।उशते।स्योनः।स्योन॥३॥

द्यामृतामृतं ॥३॥

एताना।भ्राज।अंधारि।वंधारे।हस्त।सुहस्नेतिसुहस्त।कृशानोइतिकृशानो।
 एतेव।मोमकयणइतिसोमकयणः।तानारसधामावः।दभनू।४॥परि
 मा।अने।दुश्चरितादिति।दुश्चरितान्।बाधस्वाभा।मा।सुचरितइतिसुचरि
 तेभजाउत्।आयुषा।स्वायुषेति।सुआयुषा।उत्।अमृता।अमृतात्।अ॥५॥
 प्रति।पथो।अपप्रहि।स्वस्तिगामिति।स्वस्तिगो।अनेहसोयन।विश्वोः।परिदि
 पः।वृणक्ति।विंदते।वसु॥६॥अदित्याः।त्वक्।असि।अदित्ये।सदः।आ।सीद।
 अस्तंभाना।द्या।कृषमः।अंतरिंसं।अमिमीत।वरिमाणं।एथित्याः।आ।असी
 द्ना।विद्वा।भुवनानि।संभ्रातिसंभ्रातः।विश्वो।इत्।तानि।वरुणस्य।वृतानि।
 वनेधु।वा।अंतरिंसं।तनाना।वाजो।अवत्तित्वेन।सुषयः।सिंयासु।इतिवि

कृतः सुनेतुं वरुणः विष्णुः अग्निः दिविः सूर्यः जटधातुः सोमः अश्वः ॥ २॥
 यस्य च वृत्तः आगोहः अग्नेः अस्त्राः कनीनेका यज्ञी एतेशमिः ॥ इयं सेः आज्ञा
 मानः विपश्चितेति विपः चिता ॥ ३॥ इत्योः आः इतः ध्रुवात् इति ध्रुः वालो
 पुत्रोऽथः अमश्रु इत्यनः श्रुः अवीरहणोः अवीरहना इत्यवीरः हनौ ब्रह्मचो
 दना इति ब्रह्मः ब्रह्मोऽनौ स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छन्तः ॥ ४॥ भद्रः मिः अ
 सिः प्राच्यवस्वः भुवः पते विस्वानिः अग्निधामा निमात्वा चरिपरिण इति परि
 परिणः ॥ परिपयिन इति परिः पयिनः वक्ता ॥ अधायवः अद्ययव इत्यद्यय
 वः विद्वान् ज्येनः भूत्वा परा पता यजमानस्य गृहान् गच्छन्तः ॥ ५॥ म६ स्कन्ते
 ॥ ५॥ नमः मित्रस्या वरुणस्या च ससे महः देवाय नतुः ॥ नतं स पर्यता हरे हर

राः तिहरेऽदृशे देवजाता येति देवः जाता या कृतविदिवः पुत्रायाः सूर्यायाः ६ स
 तः ॥ ६॥ वरुणस्य उज्जमनो असिः स्कंभमज्जनी इति स्कंभः सर्जनीः स्यः नतसद
 नीत्युतः सदनीः अतसदनमित्युतः सदनः ॥ नतसदनीमित्युतः सदनीः आसी
 दः ॥ ७॥ यातेः धामानि हतिषा यजति नानि विस्वा परिभूरिति परिः अस्
 यज्ञः गयस्फान इति गयः स्फानः प्रतरण इति प्रः तरणः ॥ सुवीर इति सुवीरः
 अवीरह इत्यवीरः हाः प्राचरः सोमः दुर्यान् ॥ ८॥ ॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥
 हरिः ॥ मुमः अग्नेः नतः अग्निः विष्णोवात्वा सोमस्य अर्तियेः आतिथ्याः ज्ये
 नाथः सोमः इतः सोमः भूतेः अग्नयेः गयस्योषद इति गयस्योषदे विष्टवात्वा
 ॥ १॥ अग्नेः जनित्रः अग्निः वेषणोः स्वः उतः नीः अग्नेः पुस्तवाः अग्निः गायत्रे

सं० १४

तां वा छंदसां मया मित्रैर्हं मेन त्रैस्तु मेन जा गते नाना। छंदसां मया मि॥ २॥ न
वर्तमानं। तमेन सा इति सऽमनसौ। सचेतसा इति सऽचेतसौ। अरेपंसां मा। प्रज्ञा। हि
६ सिद्धं। मा। मयज्ञपतिमिति यज्ञऽपतिं। जातवेदसा इति जातऽवेदमौ। शिवौ। भुवन्।
अध्वानः॥ ३॥ अग्नौ। अग्निः। चरति। प्रविष्ट इति प्रऽविष्टः। अषीणां। पुत्रः। अग्नि
शक्तिपावेत्यभिवास्तिऽपावाः। सः। नः। स्योः नः। सुयजेति सुऽयजो। यज्ञः। इह। देवेभ्यः।
हव्यो। सरं। अः। प्रयुक्तमित्यप्रऽयुक्तः। स्वाहा॥ ४॥ आपतय इत्याऽपतयेत्वा। म
ह्ला मि। परिपतय इति परिऽपतयेत्तनूनम्र इति तनूऽनम्रौ। शक्राय। वाक्मनः। २४
आजिष्ठाया॥ १॥ अनाधृष्टं। असि। अनाधृष्य। देवानो। ओजः। अनभि शस्तीत्यनं
भिऽशस्ति। अभिशस्तिपा इत्यभि शस्तिऽपाः। अनभि शस्तेन्यमित्यंशस्तेन्यो॥ २॥

नतिः

एत

अतसा। सुत्यः। उपागेषं। सुर्वितः। माधाः। अग्ने। व्रतपा इति व्रतऽपाः। त्वे इति त्वे। व्रत
पा इति व्रतऽपाः॥ ३॥ यातवाननूः। इयो। सामयि। या। ममां तनूः। एपास्ता। त्वयि। सु
दानो। व्रत इति व्रतऽपतो। व्रता। नि। अनु। मे। दीक्षा। दीक्षा पतिरिति दीक्षाऽपतिः। म
न्यतो। अनु। तपः। तपस्यतिः। तपःपतिरिति तपऽपतिः॥ ४॥ अ६ शुर६ शुरि सु६
शु६ अं६ शुरः। ते। देव। सोमा। आप्यायतो। इंद्राय। एकधत्तविद् इत्येकधत्तः। विद्
आनुभ्यः। इंद्रः। यायता। आ। त्वे। इंद्राय। व्यायस्व॥ ५॥ आ। व्यायया। अस्मान्।
सखीन्। सन्यामिधया। स्वस्ति ते। देव। सोमा। सुत्यो। उद्वचमिषुत्। जीवां। अग्नीया॥
॥ ६॥ एषा इत्याऽइषा। रायः। प्रा। इषो। मगाय। अतः। अतुवादिन्या इह तनूः। हि॥
। तंमः। दिवे। नमः। एधिव्ये॥ ७॥ याते। अने। अफः। शमेत्ययः। राया। तनूः। वधि



३०३

५।

ता

धा। मद्गरे शा। गदरे छेति गदरेः स्ता। उग्रं। वचः। अग्रः। अग्रानीन्। स्तेषां। क्वः। अपा।
अवधीत्। स्वाहा। रजः। शयेति रजः। शया। हरी शया। हरिशयेति हरिः। शया। ता। त्र
त्रायनीति त्रः। अयनी। मे। असि। विनायनीति विनः। अयनी। मे। असि। अवता
ता। मा। अथितं। अवतात। मा। नाथितं॥१॥ विदेः। अग्नेः। नभः। नाम। अग्नेः। अग्नि
रः। आयुना। मा। आइहि। यः। अस्या। एथिया। असि। यताते। अनाधृष्टं। नाम। य
ज्ञियंतिना। त्वा। व्या। दधे। द्वितीयस्या। तृतीयस्या। अनु। त्वा। देववीतय इति देवः।
वीतये। सि६। ही। असि। सपलसाही। सपलसहीति सपलः। सहीदेवभ्यः। कल्य २५
स्वा। शुं धस्व। शुं भस्व॥२॥ इदं घोष इतीदं घोषः। वा। वसुभि रिति वसुः। भिः। पु
रस्ता। नु। पातुः। चेतो इति प्रचेताः। रुदेः। पश्चात्। मनोजव इति मनः। जवाः। पितृ

भिरिति पितृभिः। दक्षिणतः। विश्वकर्मेति विश्वः। कर्मा। आदित्यैः। उत्तरतः। पा
तु॥१॥ इदं अहं। न प्रवाः। वहिर्देति वहिः। धा। यज्ञावनिः। सुज्ञाभिः। सि६। ही।
असि। स्वाहा। आदित्यवति रित्वादित्यः। वनिः॥२॥ ब्रह्मवति रिति ब्रह्मवनिः। स
व्रवति रिति सव्रवनिः। सुप्रजावति रिति सुप्रजावनिः। राघवस्योषवति रिति रा
घवस्योषवनिः। आ। वहदेवान्। यज्ञमानया। स्वाहा। भूतभ्यः
। त्वः॥३॥ ध्रुवः। असि। एथिवी। दृ६। ह। ध्रुवक्षिदि ति ध्रुवः। क्षित्। अंतरिक्षा। अ
च्युतक्षिदित्यच्युतः। क्षित्। दिवं। दृ६। ह। अग्नेः। भस्मा। असि। अग्नेः। पुरीषाभ्य
। सि॥४॥ युजतो। मनः। उनायुजने। धियः। दिशः। विप्रस्य। बृहन्। विपश्चित इति विपः
। चितः। विद्वात्रोः। दधे। वयुना। विन्। वयुन विदिति वयुनः। धित्। राकः। इत्। भूही



स० ५०॥

देवस्य सवित्रः परिपुतिः यस्मिन् निरितिपरिस्तुतिः ॥१॥ इदं विष्णुः विचक्रमे
त्रेधातिः इधुः पदं ससृष्टु मितिसंस्तुः ॥ अस्या पाण्डुसुरोखा हां ॥२॥ इराव
ती इतीरावती धेनुमती इति धेनुः मती हि भूते सयवसिनी सुयवसिनी इति सु
यवसिनी मनवे दद्यास्या विष्णुः ॥ रोदसी इति रोदसी विष्णो इति विष्णो
एते इत्येते राधया एषिवी अभितः सयूरे वत्सा हां ॥३॥ देवश्रुता इति देवश्रु
तो देवधुः आघोषते प्राची इति प्राची प्रा इति अध्वरं कल्पयती इति कल्पय
ती ऊर्ध्वं यज्ञं लपते माजिह्वरते ॥४॥ खामोष्ठं गोस्य मिति गोस्याः प्रावदते ॥ २६
देवी इति देवी दुर्ये इति दुर्ये आयुः मानिः वादिष्टं प्रजामिति प्रजा मानिः वा
दिष्टं अत्रारं यो वप्सन् एधिव्या ॥५॥ विष्णोः नुक्तं दीयोणि प्रावोचं यथा

थिवानि विममा इति विममोरजा ॥ ६ ॥ सायः अस्कभायन उत्तरमिस्तुतः तं सध
स्यमिति सधः स्तुः विचक्रमाण इति विचक्रमाण त्रेधा ऊरुगाय इत्युरुगायः
विष्णवेत्वा ॥६॥ दिवा वा विष्णो इति विष्णोः उत वा एधिव्या जहा वा विष्णो इ
ति विष्णोः उरो अंतरिक्षात् उमा हि हस्मा वसुना एणस्वाः प्रायश्छदक्षि
णान् आ उत सव्यान् विष्णवेत्वा ॥७॥ प्रातर्वा विष्णुः सवते वीर्येण मृगाना
भो मः कुचुरु मिरिष्टा गिरिस्था इति गिरिस्थाः यस्य उरुषु त्रिषु विकर्मणे
धिति विः कर्मणोः अधिस्थियंतीत्यधिस्थियंती भुवनानि विष्णो ॥८॥ विष्णोः
रराटं अस्मि अत्रे इति अत्रेः स्तुः स्यः ध्रुवः वैष्णवे अस्मि विष्णवेत्वा ॥९॥
आ इदेजारी अस्मि इदं अहं रसं सग्रीवाः अधिक्तं अस्मि इदं अस्मि इदं

३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 इवा इति हनः रवाः । इह नो । इवा या वाच । वद । रक्षो हनः । रक्षो हनमिति रक्षः । हनः ।
 वलगा हनमिति वलगाः । हनो वैस्ववी । १॥ इहं अहं । ते वलगाः । उत । वपा मि । यं । निष्पः ।
 यं । अमात्यः । निचरवानेति निः चरवानाः । समानः । असमानः । सबंधुरिति मः । बंधुः ।
 असंबंधुरित्यसंबंधुः । सजात इति सः । जातः । असजातः । उत । कृत्याः । किरामि । २॥
 स्वरा लिति स्वः । राट् । असि । सपत्न्येति सपत्न्यः । हा । सत्ररा लिति सत्रः । राट् । अभिमा
 तिहेत्यभिमातिः । हा । जनरा लिति जनः । राट् । रक्षो हेति रक्षः । हा । सर्वरा लिति सर्वः ।
 राट् । अभित्रहेत्यभित्रः । हा । ३॥ रक्षो हनः । रक्षो हन इति रक्षः । हनः । बलगा हन इ
 ति बलगाः । हनः । प्रा । उहा मि । वै । स्त्रवा न् । अवा । नयामि । अवा । कृणामि । वै । स्त्रवान् ।
 ॥ ४॥ रक्षो हनः । रक्षो हना इति रक्षः । हनो । वल्गा हना इति वल्गाः । हनो । उपाह

धा मि । वै । स्त्रवी । इति वै । स्त्रवी । परि । कुहा मि । वै । स्त्रवी । इति वै । स्त्रवी । वै । स्त्रवां । अस्मि । वै । स्त्रवाः ।
 । स्तु । ५॥ यवः । असि । यवयां । अस्मत् । द्वेषः । यवयां । अशनीः । दिवे । अत । रिशाया । ए
 थिये । त्वा । १॥ अश्वतोः । लोकाः । पित्रुषदंताः । पित्रुसदंता इति पित्रुः । सदंताः । पित्रुषदं
 पित्रुसदंमिति पित्रुः । सदंताः । असि । उत । दिवं । स्तभान् । आ । अतरि । शः । एता । ६६
 स्वा । एथियां । २॥ द्युतातः । त्वा । मारुतः । मिनोतु । मित्रावरुणो । ध्रुवेण । धर्मण । ब्र
 लुते । स्वर्गं । ति । ब्रह्म । स्वति । त्वा । सत्रवनीति । सत्रवनि । रायस्यो । षवनीति । रायस्यो ष
 वनि । परि । कुहा मि । ३॥ ब्रह्म । ६६ ह । शत्रोः । आयुः । प्रजामिति प्रः । जा । ६६ ह । क्र
 वा । असि । ध्रुवः । अस्मिन् । यजमानः । आयतन इत्या । यतने । प्रयात् । घृतेन । ध्यावा
 एथिवी इति ध्यावा । एथिवी । धर्म्यां । इन्द्रिया । छदिः । असि । विश्वजनस्येति विश्वः । ज



सं-५०
२८

नसा छाया।४॥ पर्वित्वा निर्वणः गिरः। इमाः भवन्तु विश्वतः पृथग्युमिति वृद्धः
अयुः अनु वृद्धयः। जुष्टाः भवन्तु। जुष्टयः।५॥ इदं स्यात्सूः। अथः ऐदं विश्वदेवमिति
वैश्वदेवं अस्मिन् विश्वरिति विः भः। अस्मिन् प्रवाहणः। प्रवाहन इति प्रः वाहनं
नक्तिः। हव्यवाहन इति हव्यः वाहनः। आनः। प्रवेता इति प्रः वेता। नृयः। विश्ववे
रा इति विश्वः वेदाः।१॥ उचिकः। कविः। अघोरः। वंभोरः। अत्र स्यूः। युवंशान्
। स्यूः। मार्जालीयः।२॥ त्रत धामे तृत्त धामा। स्वर्ग्येति रिति स्वर्ग्योतिः। स
मुद्रः। विश्वव्यवा इति विश्वः व्यवाः। अजः। एकपादित्येकः पादः। अहिः। बुध्यः।
॥३॥ संप्राप्तिरिति सः राट्। कृशानुः। यरिषद्यः। परिसद्य इति परिः सद्यः। पर्वमा
तः। नतः। इति न केति प्रः नतः। मृष्टः। हव्यसरदन इति हव्यः सरदनः।४॥ समू

२८

थ इति संः कृः। विद्यवेरा इति विश्वः वेदाः। ऊनति रित्तस्य त्वनः अतिरित्तस्य। प्र
तिष्ठा। प्रतिस्थिति प्रतिः स्थः। अग्नयः। सगराः। सगराः। स्था। सगरेण। नाम्ना। रोडेण
। अनीकेन। पातः। मा। अग्नयः। विष्टा। मा। अग्नयः। तमः। वः। अस्तः। मा। मा। हि
सिष्टः।५॥ ज्योतिः अस्मिन् विश्वरूपमिति विश्वः रूपः। विश्वे वा रेवाभ्यां। सतिदि तिसं
इवा। त्वं। सोमा। तनू कृत्वा इति तनू कृतः भ्यः। देवोभ्य इति द्वषः भ्यः। अन्य कृते
। इत्यन्यः कृते भ्यः। उरु। यंता। अस्मिन् वरूथं। खाहा। जुषाणः। अष्टुः। आर्यस्यावेतु
। स्वाहा।१॥ अग्ने। जया। सुपथेति सुः पथा। राये। अस्मान्। विश्वाति देवा वयुतानि वि
द्वाद्वा। युपोधि अस्मत्ता जङ्गुराणां। रनः। भूर्यिष्टा। तिनमं उक्तिमिति तनमं कृत्किं।
विधेम।२॥ अयेन। अग्निः। खरिवः। कृणोतु। अये। मृधः। पुरः। अनु। प्रभिरिति



म०५०॥ निप्रःभिंदन॥ अयं वाजो न जयतु वाजं साता इति वा॥ सातौ॥ अयं शत्रून् जयतु ज
 र्द्वेषाणां स्वाहा॥ १३॥ उरुविस्त्रो॥ ४॥ देवां सवित॥ एवमते॥ सोमः॥ तैरक्षस्य॥ म०५०॥
 दभन॥ एतत्त्व॥ देव॥ सोमदेव॥ देवान्॥ उप॥ अगा॥ ५॥ इदं॥ अहं॥ मनुष्यान्॥ सह
 ॥ यः॥ पोषेण॥ स्वाहा॥ त्रि॥ वरुणस्य॥ पाशात्॥ मुच्ये॥ अग्ने॥ ब्रतपा इति ब्रतः॥ या॥
 त्वे इति त्वे॥ ब्रतपा इति ब्रतः॥ या॥ ६॥ यातव॥ तनू॥ मयि॥ अभूत्॥ एषा॥ सा॥ त्वधि
 ॥ या॥ ममां तनू॥ त्वयि॥ अभूत्॥ इयं॥ सा॥ मयि॥ यथा यथ मिति यथा॥ ७॥ यं॥ नो॥ ब्र
 तपत इति ब्रतपते॥ ब्रतानि॥ अनु॥ मे॥ दीक्षां॥ दीक्षा पति रि निदीक्षा॥ पति॥ अग्रं॥ सा॥
 अनु॥ तपः॥ तपस्य॥ ति॥ तपः॥ पति रि तितपः॥ पति॥ ११॥ उरुविस्त्रो॥ ११॥ अति॥ अन्या
 वा॥ अगौना॥ अ॥ पान्॥ उपा॥ अगा॥ अवी॥ क॥ त्वा॥ परे॥ भ्यः॥ परः॥ अवरे॥ भ्यः॥ १२॥ तेषां॥ नु

॥ महो देवा व॥ सते देवयज्याया इति देव॥ यजयै देवा॥ त्वा देवयज्याया इति देव॥ य
 ज्याये॥ जुपेता॥ विस्तवोत्वा॥ ३॥ ओषधे॥ त्राय॥ स्वा॥ स्वधित इति स्व॥ धिति॥ गा॥ एन॥ हि॥ श्रीः
 ॥ दिवं॥ मा॥ ले॥ स्त्री॥ अंतरि॥ सं॥ मा॥ हि॥ ६॥ सी॥ दृष्टि॥ व्या॥ सं॥ भव॥ ४॥ अयं हि॥ त्वा॥ स्वधिति
 रि ति स्व॥ धितिः॥ निति॥ जान॥ प्रणिनाय॥ प्रतिनाये ति प्र॥ दिनाय॥ महते॥ सोम॥ गा॥ य॥ अ
 तं॥ त्वे॥ देवा॥ चन॥ स्यते॥ शतव॥ द्वा इति शत॥ ५॥ कू॥ वि॥ रो॥ हा॥ सह॥ स॥ व॥ द्वा॥ इति सह॥ स
 ॥ व॥ द्वा॥ वि॥ व॥ य॥ रु॥ दे॥ म॥ ५॥ ॥ इति प॥ च॥ मो॥ ध्य॥ स॥ ॥ अ॥ म॥ ॥ दे॥ व॥ स्य॥ ता॥
 ११॥ अ॥ ग्रे॥ णी॥ अ॥ ग्रे॥ नी॥ रित्य॥ ग्रे॥ नी॥ अ॥ सि॥ स्त्र॥ वे॥ रा॥ इति सु॥ आवे॥ रा॥ उ॥ ने॥ तृ॥ णा॥ मि
 त्यु॥ ने॥ तृ॥ णा॥ ए॥ त॥ स्य॥ वि॥ त्रा॥ त॥ अ॥ धि॥ त्वा॥ स्त्रा॥ स्य॥ ति॥ दे॥ व॥ त्वा॥ स॥ वि॥ ता॥ म॥ धा॥ अ॥ न
 कु॥ सु॥ वि॥ प्य॥ ला॥ भ्य॥ इति सु॥ पि॥ प्य॥ ला॥ भ्य॥ त्वा॥ ओ॥ ष॥ धी॥ भ्य॥ दि॥ वं॥ अ॥ ग्रे॥ णा॥ अ॥ स्य॥ ता॥

३००॥ आअंतरिक्षमधोनाअत्राः। एषिवी। उपरेणाअह॥ २॥ याते। धामानि। उस्स
 ३०॥ सि। गमध्ये। यत्रागाधः। भूरिशेगाइतिभूरिः। शृंगाः। अयासः। अत्राअह॥ ए॥ न। उ
 रुगायस्यसुरुगायस्य। विष्णोः। परमपदं। अवाभारि। भूरि॥ ३॥ ब्रह्मवनिन्वा॥ ४॥
 विष्णोः। कर्माणि। पश्यत। यतः। ब्रतावि। पश्यशे। इदं। युज्यः। सखा॥ ५॥ तत
 विष्णोः। परमपदं। सदा। पश्यति। सूरयः। दिवीवेतिदिविः। इव। चक्षुः। आतंतमि
 त्याः॥ ६॥ ततं॥ ६॥ परिवीरितिपरिः। वीः। असि। परि। चादिवीः। विशः। अयतापरि
 इमं। यजमानं॥ रायः। मनुष्याणां। दिवः। सनुः। असि। एषः। ते। पृथिव्या। लोकः॥ ३०॥
 आरण्यः। ति। पशुः। ७॥ उपावीरित्युपः। अवीः। असि। उपादेवान्। देवीः। विशः
 प्राअयुः। उ॥ १॥ जः। वक्रितमानितियक्रिः। तमान्। देवावहः। वसु। रमः। हव्या। तोसे

३०॥ १॥ रेवतीः। रमध्वः। बहस्पतोधारय। वरुनि। नूनस्य। लादेवद्विरितिदेवः। ह
 विः। पोरोनाप्रति। सुचामि। धर्षीन। मानुषः। २॥ अ० वनीयोमांभ्यां। जुष्टं। नि। युनग्मि
 अ० इत्यन्भ्यः। ला। ओषधीभ्यः। प्राउक्षामि॥ ३॥ अ० पेरुः। असि। आ० देवी
 स० इ० स्वातंत्रं। चित्। सत० देवद्विरितिदेवः। हविः। ४॥ सांते। प्राणः। वातेन। गुच्छनी
 ५॥ अ० ग० नि। यजत्रेः। सा। यजमानः। आशिष्याः। शिष्याः। ५॥ घृतनं। अ० तौ। प० वा
 दे० वा। रेव० तिः। यजमाने। प्रियाधाः। आ० विशः॥ ६॥ उ० रोः। अंतरिक्षात्। सज्जति। सु
 जः। दिवेन। वातेन। अ० स्य। हविषः। त्मा। यज्ञासं। अ० स्य। तन्वा। भुव॥ ७॥ वर्षा० इतिवर्षा० व
 पीथसि। यज्ञे। यज्ञ० प्रतिमिति। यज्ञः। पतिः। धाः। स्वाहा। देवेभ्यः। देवेभ्यः। स्वाहा। ८॥ अ
 हिः। भूः। मा। एदीकुः॥ ८॥ नमूः। तो। आता० नेत्याः। तान। अ० तवा। प्र। इ० दि। घृतस्याकु



ल्याः। उपासतस्य। नृथ्याः। उपा॥ देवीः। आयः। शुद्धाः। बोद्धुः। सुपरिविष्टा इति सुः प
 रिविष्टाः देवेषु। सुपरिविष्टा इति सुः परिविष्टाः। वयं परिविष्टारं इति परेऽवेक्षेरः।
 भूयासाः॥ वाचते। शुधामि। प्राणं चक्षुः। श्रोत्रं नभिः। मेढ्रे पायुः। चरित्रान्ते
 शुधामि। ३॥ मनः। ते। आप्यायतां। वाक्। प्राणः। चक्षुः। श्रोत्रं। यन्ते। कुरं। यत्।
 आस्थितमित्याः स्थिते। तन्। ते। आप्यायतां। निः। स्थायतां। शुध्यतु। शो। अहो। म्य
 इत्यहः। म्य॥ ४॥ ओषधे। आयस्वा। स्वधित इति स्वधिते। मा। एतां हि। ६ सीः। रक्ष
 सा। भागः। असि। निरस्तमिति निः। अस्तं रक्षः। ५॥ इदं अहं। रक्षः। अभि। निष्टा ॥ ३१ ॥
 मि। अयं। वाधे। अधर्मो नयामि। ६॥ धृतेन। द्यावा पृथिवी इति द्यावा पृथिवी। प्राक
 ण्या। वाया। तिकायो। वेः। तो। कानो। नुषाणः। अग्निः। आज्यस्य वेतु। स्वाहा।
 तमः।

स्वाहा कृते इ॥ स्वाहा कृते। ऊर्ध्वं नमस्तमित्यर्चं नमसं। भारुतां गच्छते। ७॥ सं।
 ते। मनः। मनसा। सं। प्राणः। प्राणेन। गच्छतं रेट्। असि। अग्निः। ला। श्रीणातु। आपः।
 ला। सं। अरिणन्। १॥ वाते स्यात्वा। धाज्ये। पूज्यः। र६। ख्ये। ऊ। अणः। व्यथिषत्। प्रयुते
 मिति। युते। द्वेषः। २॥ धृतं। धृतपावान इति धृतपावानः। पिबत। वसो। वसापावान
 इति वसापावानः। पिबत। अत रिसस्य। हवि। असि। स्वाहा॥ ३॥ दिशः। प्रदिश इ
 ति प्रदिशः। आदिश इत्यादिशः। विदिश इति विदिशः। उदिश इत्युदिशः। दि
 श्य इति दिक्। म्यः। स्वाहा। ऐन्द्रः। प्राणः। अंगे अंग इत्यंगे अंगे। निधीत इति नि
 धीतः। ऐन्द्रः। उदान इत्युदानः। अंगे अंग इत्यंगे अंगे। निधीतः। ४॥ देवः। वृष्टः।
 भूरिति। स६। समिते सं। एतु। सलक्ष्मे तिसलक्ष्म यत्। विषु रूयमिति विषु

३२ रूपं भवति देवत्रेति देवः ज्ञायते अवसेः सखायः अनुत्वा माता पितरः मर्दनु॥
 ॥५॥ समुद्रं मच्छा स्वाहा देवं सवितारं अंतरिक्षं मित्रावरुणौ अहोरात्रे इन्द्रो
 रात्रे छंदो हस्तिद्यौ वा एषि वी इति द्यावा एषि वी सोमयुतं नमो दिव्यं अग्नि विश्वा
 नरं मनः सोहावायुछा ॥१॥ दिवा ते धूमः गच्छतु अंतरिक्षम् ज्योतिः एषि वीम्
 भस्मना आ वृणु स्वाहा ॥२॥ मा अपः मा ओषधीः हिंसी धाम्ना धाम्ना
 इति धाम्नाऽधाम्ना राजन् ततः वरुणः नः मुंचायन् आकुः अघ्याः इति व
 रुणः इति शपामहे ततः वरुण नः मुंच ॥ ३॥ सुमित्रि पइतिसु मित्रि पाः नः ॥ ३२
 आपः ओषधयः संतु दुर्मित्रि पइति दुः मित्रि पातं स्म संतु यः अस्मान् दे
 हि यं च वयं क्षिप्मः ॥४॥ इदं आपः प्रवहता यद किं वदुरितमिति दुः इतं

मेयि यन्वावा अहम् अमि दुशेहस्यमि दुशेहायन्वावा शोये उता अनृतं ॥५॥
 हविष्मतीः इमाः आपः हविष्मान् आ विवासति हविष्मान् देवः अध्वरः ह
 विष्मान् अस्तु सूर्यः ॥१॥ अग्नेः वः अपन्नं गृहस्य त्यपन्नं गृहस्य मर्दसि साह
 यामि इन्द्राग्न्या भागधेयीरिति भागऽधेयीः स्वा मित्रावरुणयोः विश्वेपां देवा
 नां भागधेयीरिति भागऽधेयीः स्वा २ ॥ अम्ः माः उपासूर्यः यास्मि वा सूर्यः
 नृताः नः हिंचतु अध्वरः ॥३॥ हृदे त्वा मनसा दिवे सूर्याय ऊर्ध्वः अध्वरं
 दिवि देवेषु होत्राः युछा ॥१॥ सोमः राजन् विश्वाः त्वे प्रजा इति प्रजाः उपाव
 रोहेयुषः अवरोह विश्वाः त्वां प्रजा इति प्रजा उपावरोहं वितुः पऽवरोहं उवा
 ऋणोनु अग्निः सामेधेति संऽइधा हवीं मे ऋण्वन्तु आपः क्षिपणाः च देवीः



१०॥ श्रोत॥ ग्रावाण॥ विडुम॥ न॥ यज्ञ॥ शृणोतु देव॥ सविता॥ इवामे॥ स्वाहा॥ ३॥ देवी॥ आ
 पु॥ अपो॥ नपाता॥ य॥ व॥ ऊर्मि॥ इ॥ विष्य॥ इ॥ दिवा॥ वा॥ न॥ इ॥ द्रिय॥ वा॥ निती॥ द्रिय॥ वा॥ न॥
 ॥ मुदि॥ न॥ मु॥ इ॥ ति॥ मु॥ दि॥ न॥ उ॥ त॥ म॥ ॥ ४॥ त॥ दे॥ वे॥ भ्य॥ दे॥ व॥ त्रे॥ ति॥ दे॥ व॥ आ॥ हा॥ त॥ शृ॥ क॥ पे॥ भ्य॥ इ॥
 ति॥ शृ॥ क॥ पे॥ भ्य॥ इ॥ त॥ म॥ ॥ ५॥ येषा॥ भा॥ ग॥ ॥ स्तु॥ स्वा॥ हा॥ ॥ ५॥ का॥ दि॥ ॥ अ॥ मि॥
 समु॥ द॥ स्य॥ त्वा॥ अ॥ क्षि॥ त्वा॥ उ॥ न॥ न॥ या॥ मि॥ सं॥ आप॥ अ॥ क्षि॥ रि॥ स्य॥ त॥ मि॥ अ॥ ग्म॥ त॥ सं॥
 ओष॥ धी॥ मि॥ ओष॥ धी॥ ॥ ६॥ य॥ अ॥ ने॥ ए॥ स्त्रि॥ ति॥ ए॥ न॥ सु॥ म॥ त्वा॥ अ॥ वा॥ वा॥ जे॥ पु॥ यो॥ न॥
 ना॥ सं॥ ये॥ ता॥ श॥ श्व॥ ती॥ इ॥ व॥ स्वा॥ हा॥ ॥ ७॥ आ॥ इ॥ दे॥ रा॥ वा॥ अ॥ सि॥ ग॥ सी॥ रं॥ इ॥ मे॥ अध॥ ३३
 रं॥ कृ॥ धि॥ इ॥ द्रा॥ या॥ सु॥ ह॥ त॥ मे॥ सु॥ ह॥ त॥ मे॥ मि॥ ति॥ सु॥ ह॥ त॥ मे॥ उ॥ न॥ मे॥ न॥ त्यु॥ त॥ मे॥ न॥ प॥ दि॥ ना॥
 ॥ क॥ र्ज्ज॥ स्व॥ तं॥ म॥ धु॥ मं॥ त॥ मि॥ ति॥ म॥ धु॥ मं॥ त॥ प॥ य॥ स्व॥ तं॥ नि॥ ग्रा॥ भ्या॥ इ॥ ति॥ नि॥ ग्रा॥ भ्या॥ ॥ स्या॥ दे॥

श्रुत॥ इ॥ ति॥ दे॥ व॥ ॥ क॥ त॥ न॥ प॥ य॥ त॥ मा॥ १॥ म॥ न॥ ॥ मे॥ त॥ प॥ य॥ त॥ वा॥ चं॥ प्रा॥ णं॥ च॥ सु॥ श्रो॥ त्रं॥ आ॥
 त्मा॥ नं॥ प्र॥ जा॥ मि॥ ति॥ प्र॥ जो॥ य॥ शृ॥ रा॥ ग॥ णा॥ न॥ ग॥ णा॥ मि॥ मा॥ वि॥ नृ॥ प॥ न॥ इ॥ द्रा॥ या॥ त्वा॥ व॥ सु॥ म॥
 त॥ इ॥ ति॥ व॥ सु॥ म॥ ने॥ रु॥ द्र॥ व॥ त॥ इ॥ ति॥ रु॥ द्र॥ व॥ ते॥ आ॥ दि॥ त्य॥ व॥ त॥ इ॥ त्या॥ दि॥ स्य॥ व॥ ते॥ अ॥ नि॥ भा॥ ति॥ प्र॥ इ॥
 त्य॥ मि॥ मा॥ ति॥ घ्ने॥ र॥ पे॥ न॥ या॥ सो॥ म॥ भृ॥ त॥ इ॥ ति॥ सो॥ म॥ भृ॥ तं॥ अ॥ न॥ यो॥ रा॥ य॥ स्यो॥ ष॥ इ॥ ति॥ रा॥ य॥ स्यो॥
 ष॥ दे॥ ३॥ य॥ त॥ ते॥ सो॥ म॥ दि॥ वि॥ ज्यो॥ ति॥ ए॥ धि॥ व्यो॥ उ॥ रो॥ अ॥ न॥ रि॥ क्षे॥ ति॥ न॥ अ॥ स्मे॥ य॥ ज॥ ग॥
 ना॥ य॥ उ॥ रु॥ रा॥ यो॥ कृ॥ धि॥ अ॥ धि॥ हा॥ त्रे॥ वो॥ च॥ ४॥ आ॥ त्रा॥ ॥ स्तु॥ इ॥ व॥ नृ॥ इ॥ ति॥ इ॥ नृ॥ इ॥ त॥ रं॥ रा॥
 धो॥ गृ॥ त्वा॥ इ॥ ति॥ रा॥ ध॥ ॥ गृ॥ त्वा॥ अ॥ मृ॥ त॥ स्य॥ य॥ ती॥ मा॥ ता॥ दे॥ वी॥ दे॥ व॥ त्रे॥ ति॥ दे॥ व॥ आ॥ इ॥ म॥ य॥
 ज्ञे॥ न॥ य॥ त॥ उ॥ प॥ कृ॥ ता॥ इ॥ सु॥ प॥ कृ॥ ता॥ सो॥ म॥ स्या॥ पि॥ व॥ न॥ ५॥ मा॥ मे॥ मा॥ सं॥ वि॥ नृ॥ क॥ र्ज्ज॥ ॥
 धि॥ धि॥ षे॥ णे॥ इ॥ ति॥ षे॥ णे॥ वी॥ दी॥ इ॥ ति॥ वी॥ दी॥ स॥ ती॥ इ॥ ति॥ स॥ ती॥ वी॥ रू॥ ये॥ था॥ क॥ र्ज्ज॥ इ॥ धा॥ था॥

नै. २०॥

२४॥

पाप्मा। हुतः। न। सोमः॥ ६॥ प्राक्। अयाक्। उदक्। अधराक्। सर्वतः। त्वादिशः। आ। धा
 वतु। अंबा। निः। पुरा। सः। असी। विद्या। ७। त्वं। अं। प्राशः। सिषः। देवः। गृविद्यामं। यी। न।
 त्वतः। अन्यः। मघवन्निति मघः वनू। अ. सि। मर्हिता। इंद्र। ब्रवीमिति। वचः॥ ८॥ ॥
 इति षष्ठोऽध्यायः॥ ॥ ७॥ ॥ वाचः। पतये। पुवस्वा। वृहत्। अ७। शुभ्यानि
 त्वः। शुभ्या। ग। मस्ति पूतइति गमं। तिः। पूतः। देवः। देवेभ्यः। पवस्वा। येवा। भागः।
 अ. सि। मधुमती। रिति मधुः। मतीः। नः। इषः। रुधि। १॥ यत्। ते। सोम। अदाभ्याना
 माजागृवि। तस्मै। ते। सोम। सोमाया स्वाहा। स्वाहा। उरु। अतरिक्ष। अनु। एमि ३४॥
 स्वाकृतइति स्वाः। कृतः। अ. सि। विश्वेभ्यः। इंद्रिभ्यः। दिव्येभ्यः। पार्थिवेभ्यः। १॥ मनः।
 त्वा। अह। स्वाहा। त्वा। स्वभवइति स्वः। भवः। सूर्याय। देवेभ्यः। त्वा। मरीचिचेन्यइति म

रविष्येभ्यः। देवः। अ७। शोइत्य७। शो। यस्मै। त्वा। ईलं। तत्। सत्यं। उपरि। हुते। युपनिः। जुता। मं
 मेना। हुतः। अस्मै। फट्। प्राणाय। त्वा। व्यानायेति विः। आनाया। त्वा। ३॥ उप। यः। मर्हि। तं। इं
 द्र। युपनामः। गृहीतः। अ. सि। अंतः। यत्। मघवन्निति मघः वनू। पाहि। सोमं। उरुप्य। रा
 यः। अवा। इषः। यजस्वा। १॥ अंतः। रित्यंतः। नाद्यावा। एधि। ई। इति द्यावा। एधि। वी। इधामि
 अंतः। इधामि। उरु। अंतरिक्ष। सत्। रिति सः। अ. देवेभिः। अवरेः। परैः। च। अंतर
 मइत्यंतः। यामे। मघवन्निति मघः वनू। मादयस्वा। उदानायेत्युतः। आनाया। त्वा। १॥
 आ। वायोइति वायो। भूपा। युषि। पाइति युषिः। पाः। उप। नः। सहस्रं। ते। नियुतइति नि
 युतः। विष्णुवारं। रिति विश्वः। वारः। उपोइत्युपो। ते। अंधः। मद्यः। अयामि। यस्मै। देवा
 इधये। पूर्वयमिति पूर्वः। येयं। वायवे। त्वा। १॥ इंद्रवायूइतींद्रवायू। इमे। सुता।

३४॥



३५

नपाप्रयाभिरितिप्रयाऽभिः। आगतं। इदं। वां। उशंति। हि। वायवे। इदं। वायुभ्यामि
तीदं। वायुभ्यां। त्वा। एषः। ते। योनिः। सजोषोभ्यामितिसजोषऽभ्यां। त्वा। रा। अतः। वा।
मित्रावरुणा। सुतः। सोमः। कृतावधा। क्रतुः। धेनुः। नवधा। ममाइतु। इह। क्रते। ह
वोमित्रावरुणाभ्यां। त्वा। रा। रायावयो। ससवाऽसइतिससऽयाऽसः। मदेमाह्वेन
देवाः। यवसेनागावाः। तां। धेनुं। मित्रावरुणा। युवं। नः। विश्वाहा। धनं। अनपस्युरं
तीमित्यनपऽस्युरंती। एषः। ते। योनिः। कृतायुभ्याम्। क्रतुयुभ्यामित्युतयुऽभ्यां
। त्वा। रा। याभां। कणा। मधुमतीतिमधुऽमतीऽभश्चिना। सुनुतावतीतिसुनुताऽवा
तीतया। यजं। मिनिक्षते। अश्विभ्यामित्यश्विऽभ्यां। त्वा। एषः। ते। योनिः। माधी
भ्यां। त्वा। रा। तः। पत्नयेतिपत्नः। या। प्रवयेतिपूर्वः। था। विश्वयेतिविश्वऽथा। इम

३५

येतीमऽथा। ज्ञे। तानि। मितिः। षऽतानि। वर्हिषदं। वर्हिसदमितिवर्हिऽसदं। सर्विदमि
तिस्वः। विदं। प्रतीचीनं। ह जनो। दोहसे। धुति। आशु। जयते। अनु। गामु। वधसः। शंडा
यात्वा। रा। एषः। ते। योनिः। वीरतां। याहि। अपमृष्टइत्यपऽमृष्टः। षंडः। देवाः। त्वा। पु
रूपाइतिशुक्रः। पा। प्रा। नयं। अनाधृष्टा। असि। सुवीरइतिसुवीरः। वीरान्। प्र
जुनयमितिप्रजनयन्। परि। इहि। अमि। रायः। पोषण। यजमानं। संजग्मानइति
सन्। जग्मानः। दिवा। हथिव्या। शुक्रः। शुक्रशोचियेतिशुक्रऽशोचिपा। निरस्तइ
तिनिऽअस्तः। राउ। शुक्रस्यं। अधिष्ठानं। अधिष्ठानमित्यधिऽस्थानं। अमि। रा।
अच्छिनैस्यतेदेवागोमासुवीर्यस्येति। सुवीर्यस्य। रायः। पोषस्य। दहितारः। स्याम
सा। प्रथमा। सऽस्मृतिः। विश्ववारेतिविश्वऽवाराः। सः। प्रथमः। वरुणाः। मित्रः। अ



निः॥३॥सःप्रथमः॥वृहस्पतिःविकित्वान्तेस्तेऽंदायःसुने॥आजुहोतास्वाहा॥
 पंतु॥होताः॥मधोः॥यनूः॥स्विष्टमिति सुः॥इष्टुः॥सुभृतमिति सुः॥भृते॥यनूः॥स्वाहा॥॥॥
 अयेवेनः॥चोदयत॥एभिर्गर्भेति एभिः॥गर्भाः॥ज्योतिर्जरायुरिविद्योतिः॥ज
 रायुः॥रजसः॥विमानइति विः॥माने॥इमे॥अपोसंगमइतिसं॥गमे॥सूर्यस्य॥सिं
 न॥विष्ठाः॥मतिभिरिति मतिः॥भिः॥रिहंति॥मर्कायात्वा॥१॥मनः॥नायेषु॥हवने
 पुंतिग्मे॥विषः॥शब्दाः॥वनुयः॥दवंता॥आ॥यः॥शर्याभिः॥तुविष्टुमाइति तु वि
 न्म्याः॥अस्य॥अश्रीणीता॥आदिशमित्यादिशः॥गर्भस्तो॥२॥एषः॥ते॥योतिः॥ ३६
 प्रजाइति प्रः॥जाः॥पाहि॥अषमृष्टइत्यफः॥मृष्टः॥मर्कः॥देवाः॥त्वा॥मं॥धिपाइति
 मं॥धिः॥पाः॥प्राजसेतु॥अना॥भृष्टा॥असि॥सुप्रजाइति सुः॥प्रजाः॥प्रजाइति प्रः॥जाः॥

प्रजनयन्निति प्रः॥जनयन्॥परि॥इहि॥अभि॥रायः॥योषेण॥यजमानो संजग्मानइ
 तिसं॥जग्मानः॥दिवा॥एथिव्या॥मं॥धो॥मं॥थिरो॥विषेति मं॥थिः॥शो॥चिपा॥निरस्तइति
 निः॥अस्तः॥मर्कः॥मं॥थिनः॥अधिष्ठानं॥अधिस्थानमिलधिः॥स्त्वनं॥असि॥३॥
 अछिन्नस्यते॥॥॥सप्रथमः॥॥॥येदेवासः॥दिवि॥एकादशा॥रु॥एथिव्या॥अ
 धि॥एकादशा॥रु॥अशुशित॥इत्येषुः॥क्षितः॥महिना॥एकादशा॥रु॥तेदेवासः॥
 यन्ते॥इमे॥जुषधे॥॥॥आ॥ययराः॥असि॥स्वा॥ययराइति सुः॥आ॥ययराः॥पाहि
 यज्ज॥पाहि॥यजपतिमिति यजः॥पति॥॥॥विष्णुः॥त्वा॥इन्द्रियेणा॥पानु॥विष्णुः॥त्वा
 पाहि॥अभि॥सवन॥ति॥पाहि॥सोमः॥पवते॥सोमः॥॥पवते॥॥॥अस्मे॥ब्र॥ह्म॥स
 नो॥या॥सु॥चते॥यजमानाया॥इषो॥ऊर्जो॥अम्ब॥इत्यतः॥भ्यः॥ओषधी॥भ्यः॥द्यावा॥

शिवीभ्याः। सुभृतायेति सुभृतायाः ब्रह्मवर्चसायेति ब्रह्मवर्चसायाः पवते। विश्वे
भ्याः। त्वादेवेभ्यः। एषः। ते। योनिः। विश्वेभ्यः। त्वादेवेभ्यः। ४। इंद्रायाः। त्वा। बृहदतइ
ति बृहत्। वतो वयस्वते। उक्त्वा युवं। उक्त्वा युवमिष्युक्त्वा युवं। गृह्णामि। यत्
ते। इंद्र। बृहत्। वयः। तस्मात्त्वा। विघ्नवे। त्वा। एषः। ते। योनिः। उक्त्वाभ्यः। त्वा। ११। दे
वेभ्यः। त्वादिनायुवो देवयुषमिति देवः युवं। गृह्णामि। यत्तस्य। आयुषे मित्रावा
रुणाभ्याः। इंद्रायाः। इंद्राग्निभ्यामितींद्राग्निभ्याः। इंद्रायाः। इंद्रावरुणाभ्याः। इंद्र। बृ
हदस्यतिभ्यामितींद्राबृहदस्यतिभ्याः। इंद्राविष्णुभ्यामितींद्राविष्णुभ्याः। त्वादे
वायुवं। देवयुवमिति देवः युवं। गृह्णामि। यत्तस्य। आयुषे। २॥ मूर्ध्ना दिवाः अ
रति। ह्यथियाः। वैश्वानरः। जते। आजाते। अग्निं। कविं। संभ्राजमिति संभ्राजं। अ

तिथिः। जनानां। आसन। आयाचं। जनयंतं देवाः। १॥ ध्रुवाः। अक्षिः। ध्रुवक्षिति रिति
ध्रुवः। क्षितिः। ध्रुवाणां। ध्रुवतमइति ध्रुवः तमः। अच्युतानां। अच्युतक्षिते गइत्य
च्युतक्षितुः तमः। एषः। ते। योनिः। वे। जनरायाः। त्वा। २॥ ध्रुवः। ध्रुवेण। मनसा। वाचा।
सोमो। अवा। नयामि। अर्थानः। इंद्रः। इत्। विराट्। असृपत्वाः। समनसइतिसः। मन
सः। करत्वा। ३॥ यः। ते। इंद्राः। स्कंदति। यः। ते। इंद्राः। स्कंदति। यः। ते। अहं। इंद्राव
च्युतइति यावत्। अच्युतः। धिषण्योः। उपस्थादितुपः। स्थानः। अध्वर्योः। वा। परिवापः
पुवित्रात्। ते। ते। जुहामि। मनसा। वषट्कृतमिति वषट्कृतं। तस्मात्त्वा। देवानां। उक्त्वा
गमिष्युत्तः। कमणा। अग्निः। १॥ मधवे। माधवायाः। शुक्रायाः। शुचये। नभसो नभस्या
ये। ईषो। ईषो। कुजो नभसः। सहस्रायातपसो नपस्याया अहसस्यतयो अहसः

१०५०
३८

पुनयइत्य७ हसः५ पुनये।त्वा॥१॥ इन्द्राग्नीदतीन्द्राग्नीः आ।गते।सुते।गीर्भिरितिगीः
ऽभिः।नभः।वरेण्या।अस्या।पाते।धिया।इयिता।इन्द्राग्निभ्यामितीन्द्राग्निः॥भ्यो।त्वा
।एषः।ते।योनिः।इन्द्राग्निभ्यामितीन्द्राग्निः॥भ्यो।त्वा॥१॥ आ।घ्राये।अग्निः।इधने।सु
तेतिः।वर्हिः।इधतो।सृणति।वर्हिः।आनुषक।येषां।इंद्रः।युवां।सखा।अग्नीदी।
॥भ्यो।त्वा।एषः।ते।योनिः।अग्नीद्राभ्यो।त्वा॥१॥ ओमासः।चर्षणीधृतः।चर्षणिधृ
तइतिचर्षणिः॥धृतः।विश्वेदेवासः॥आ।गतः।राश्या७ मः।दापुषः।सुतं।१॥ वि
श्वेदेवासः॥आ।गता।पृणुतामे।इमं।हवो।आ।इंद्रः।वर्हिः।नि।सीदत।१॥ इंद्रः।म
रुत्वः।इंद्रः।पाहि।सोमं।यथा।व्यायीते।अपिबः।सुतस्या।तवा।प्राणीती।प्रनीतीति
प्रः।नीती।तवा।पृशः।शमेन।आ।विवासंति।कवयः।सुयज्ञाइतिसुः।यज्ञा॥इंद्राय।

।त्वा।मरुत्वते।एषः।ते।योनिः।इंद्राये।त्वा।मरुत्वते॥१॥ मरुत्वते।वृषभं।वाहधानं
वृधधानमिति वृधधानं।अकंवा।रिसित्यकवः॥अरिदिव्यं वासं।इंद्रः।विश्वासाहं।वि
श्वमहमिते विश्वः॥सहो।अवसे।वृतेनाय।उग्रं।सहो।दामितिसहः॥हो।इंद्रः।तो।कु
वेम।१॥ मरुतो।अजसे।त्वा॥१॥ सजोषाइतिसुः।जोषाः।इतिसुः।जोषाः।इंद्रः।सृण
ए।इतिसुः।गणः।मरुद्भिरिति मरुतः॥भिः।सोमं।बिबृहृत्रहेति वृत्रः॥आ।पृशः।विद्वान्।
जहि।वृत्रं।अप।सृधः।नुदस्वा।अयं।अमये।कृणुहि।विश्वतः।नः॥१॥ महान्।इ
ंद्रः।नृवदिति नृवत।आ।चर्षणि।प्राइतिचर्षणिः॥प्राः।उत।द्विवहोइति द्विः॥वहो
।अमिनः।सहो।भिरिति सहः॥भिः।अस्य।अकं।वाहधे।वृधधइति वृधे।वीर्यो
य।उरुः।एषु।सुहो।इतिसुः।रुतः।कुरुंभिरितिकुरुंभिः।भूतः।महेंद्रायेतिसुः

३० हाऽइन्द्राय। त्वा। एष। मे। यो वि। महेन्द्रायैति महाऽइन्द्राय। त्वा। १॥ महान्। इन्द्राय। ओ
 नसा। पञ्जन्यः। वृष्टिमां देवा। वृष्टिमान्। देवा। सोमः। विसस्य। वावृधे। ववृधे। इति ववृधे।
 ॥ १॥ ॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥ ॥ ३० ॥ ॥ आदित्येभ्यः। त्वा। १॥ कदाचन।
 प्रयुष्टसि। उभे। इत्युभे। निपासि। जन्मनी। इति जन्मनी। उरीयी। आदित्या। सर्वान्। ने। इ
 द्रिया। आ। तस्यो। अमृतं। दिवि। आदित्येभ्यः। त्वा। १॥ यज्ञः। देवानो। प्रति। एति। सुमन्।
 मा। आदित्यासः। भवत। मूलयन्तः। आ। वः। अवाचो। सुमतिरिति सुऽमतिः। ववृत्त्यात्
 अहो। चित्वा। या। वरिवो वितरे। निव। रिबो वितऽन्तः। रा। असत्। आदित्येभ्यः। त्वा। ३०
 विवस्वान्। आदित्या। एषः। ने। सोमपीथ इति सोमऽपीथः। तस्मिन्। मत्स्व। ३।
 अत्। अस्मै। नरः। वचसे। दधातुना। यत्। आशी। देत्याशीः। हा। दंपती इति दंपती। वामे।

अकृतः। पुमान्। पुनः। जायते। विदेते। वसु। अधो। विश्वाहा। अरपः। एधते। गृहे। १।
 वामे। अद्या। सवितः। वामे। ऊऽइत्यौ। न्यः। दिवेदिव इति दिवेऽदिवे। वामे। अस्मभ्यो। सा
 नीः। वासस्या। हि। क्षयस्य देवा। भूरेः। अया। धिया। वामभाज इति वामऽभाजः। स्थाम
 ॥ १॥ सावित्रः। असि। चनो धा इति चनऽधाः। चनः। मयि। धेहि। जिन्वा। यज्ञः। जिन्वा। य
 जपतिमिति यज्ञऽपतिः। भगाय। सवित्रे। त्वा। १॥ सुगर्भे। निसुऽशर्मा। असि। सुप्र
 तिष्ठानः। सुप्रतिस्थान इति सुऽप्रतिस्थानः। वृहदुक्षायति वृहदन्तऽक्षायानमः। १॥
 वृहस्पतिस्तुत्येति वृहस्पतिऽस्तुतस्य। ने। देवा। सोमा इंदो इतीदो। इन्द्रियावन्तः। इन्द्रिय
 वन्त इतीन्द्रियऽवन्तः। पत्नीवन्त इति पत्नीऽवन्तः। ग्रहान्। रुध्यासो। १॥ अहं। परस्तात्। अ
 हं। अवस्तात्। यत्। अंतरिक्षा। तत्। ऊऽइत्यौ। गोपिता। आसा। अहं। स्तये। उभयन्तः।

प०
७३

दृशीमहं देवानां पु० न० गु० हा० यनू॥२॥ अग्नेषाकपत्वि॥ सज्जरिति सु० ज्जः० दिवेमात्र
ष्टा॥ सोमं पिब स्वाहा॥३॥ प्रजापतिरिति प्रजा० पतिः॥ वषा॥ असिरेतो धादतिरेतः
० धाः० रेतः० मयि॥ धेहि॥ प्रजापतिरिति प्रजा० पतिः॥ ते॥ वस्त्रः० रेतो धस इतिरेतः० ध
नः० रेतो धा मितिरेतः० धा॥ अशीया॥४॥ हरि॥ असि॥ हारियो जन इति हारि० योज
नः॥ हरिभ्यामिति हरि० भ्या॥ त्वा॥ हयो॥ धानाः॥ स्वा॥ सहसो मा इति सह० सोमाः॥ इंशो
या॥१॥ या॥ ते॥ देव॥ सोमा॥ मन्त्रसमिरित्यन्व० सन्नि॥ भस्वः॥ यः॥ गोसन्तिरिति गो० सनिः
॥ नस्यति॥ इष्टयं जुष इतीष्ट० यं नृपः॥ स्मृतस्तोमस्येति स्मृत० स्तोमस्य॥ शस्तोक्त्वा ४०
स्यति॥ शस्त० उक्त्वा स्या॥ उपरूत इत्यप० रूतः॥ उपरूतस्येत्यप० रूतस्याभस्य
मि॥२॥ युस॥ हि॥ केशितो॥ हरी इति हरी॥ वषणा॥ कस्तुभेनिकस्तु० प्रा॥ अथानु॥

इंशोमपादितिसामः पा॥ गिरा॥ उपरूतमिदं प० रूति॥ चरा इंशय॥ त्वा॥ पोलशि
ने॥ वषः० ते० योनिः॥ इंशय॥ त्वा॥ पोलशिने॥१॥ आतिष्ट॥ वृत्रहन्ति वृत्र० हनारथा
युक्ता॥ ते॥ ब्रह्मणा॥ हरी इति हरी॥ अवीवीने॥ सुते॥ मनः॥ ग्वावा॥ कृणोतु॥ वग्नो॥१॥
इंश॥ इवा॥ हरी इति हरी॥ वहतः॥ अप्रतिधृष्टावसमित्यप्रतिधृष्टावसं॥ कृषी
णा॥ त्वा॥ स्मृती॥ उप॥ यज्ञा॥ च॥ मानुषाणा॥१॥ यस्यान्॥ न॥ ज्ञातः॥ परा॥ अन्यः॥ अस्ति
च॥ आविवेशेत्या॥ विवेश॥ भुवनानि॥ विश्वा॥ प्रजापतिरिति प्रजा० पतिः॥ प्रजयेति
प्र० जया॥ सु० णराण इति सु० रराणा॥ त्री॥ लो॥ ज्योती॥ ऽषि॥ सवते॥ स० पालुशी॥
इंश॥ च॥ स० आलि॥ नि० सु० राट्॥ वरुणः॥ च॥ राजा॥ तो॥ ते॥ भक्षं॥ वक्रुडः॥ अथोएत॥ त
यो॥ अहं॥ अनु॥ भस्वः॥ भस्यामि॥ वाक्॥ देती॥ जुषाणा॥ सोमस्य॥ नृ० प्यनु॥ सह॥



प० । प्राणेनास्वाहा ॥ २॥ अ० नो० आयु० ६ वि० प० वसे० आ० सुवा० ऊ० जी० इ० प० । वान० आ० रे० वा० ध०
 सु० इ० धु० नो० अ० ग० य० । त्वा० वर्च० सो० ए० ष० ते० । यो० नि० । अ० न० य० । त्वा० वर्च० सो० अ० न० । क० र्व० स०
 न० । वर्च० स्वाना० त्वं दे० वेषु० । अ० सि० । वर्च० स्वाना० । अ० ह० । म० नु० ष्ये० पु० । भू० या० सं० ॥ १॥ अ० ग० । प० व०
 स्वा० पा० इ० ति० सु० । अ० पो० । अ० स्मे० इ० त्य० स्मे० । वर्च० । सु० वी० र्य० मि० ति० सु० । वी० यो० । द० ध० त० र० यि० । म०
 यि० यो० ष० ॥ १॥ उ० ति० ए० न्नि० त्यु० त्ति० ष्ट० न० । ओ० ज० सं० । स० ह० । पी० वी० । शि० त्रे० इ० ति० शि० त्रे० अ० वे० ष०
 य० । सो० मे० । इ० द्रा० न्नु० मू० इ० ति० च० म० । सु० त० । इ० द्रा० या० त्वा० । ओ० ज० सं० । ए० ष० । ते० । यो० नि० । इ० द्रा० या० त्वा०
 । ओ० ज० सं० । इ० द्रा० । ओ० ज० स्व० न० । ओ० ज० स्व० न० । त्वं दे० वेषु० । अ० सि० । ओ० ज० स्व० न० । अ० ह० । म० नु० ष्ये० ॥ ४१
 । पु० । भू० या० सं० ॥ १॥ अ० दृ० म० । अ० स्य० । के० त० क० । वि० त् । र० म० य० ॥ ज० न० न० । अ० नु० । भ्रा० ज० त० । अ० ग० न० य०
 । यु० य० । स० र्यो० य० त्वा० । भ्रा० जो० । ए० ष० । ते० । यो० नि० । स० र्यो० य० त्वा० । भ्रा० जो० स० र्य० । भ्रा० ज० स्व० न० । भ्रा० ज०

भ्रा० ज० स्व० न० त्वा० दे० वेषु० । अ० सि० । भ्रा० ज० स्व० न० । अ० ह० । म० नु० ष्ये० पु० । भू० या० सं० ॥ १॥ उ० त् । क० । इ० त्यु०
 स्य० । ज्ञा० त० वे० द० स० मि० ति० ज्ञा० त० वे० द० सं० । दे० वं । व० ह० ति० । के० त० क० । दृ० वो० । वि० श्वा० या० स० र्यो० ॥ १॥ त्रि० त्रि० ।
 दे० या० नो० । उ० ता० । अ० ग्रा० न० । अ० नी० क० । च० स० । मि० त्र० स्य० । व० रु० ण० स्य० । अ० ग्ने० । आ० । अ० प्रा० । ध्या०
 वा० ए० धि० वी० इ० ति० ध्या० वा० ए० धि० वी० । अ० न० त० रि० स० । स० र्यो० । आ० त्वा० । ज० ग० त० । त० त्थु० ष० ॥ १॥ त्रि० ।
 न० । इ० द्रा० मृ० ध० । ज० हि० नी० चा० । यु० छ० । ए० त० न्य० त० । य० । अ० स्मा० न० । अ० भि० । रा० स० नी० त्वं । भि० द्रा०
 न० ति० । अ० ध० रं । ग० म० य० । त० म० । इ० द्रा० या० त्वा० । वि० मृ० ध० इ० ति० वि० मृ० ध० । ए० ष० । ते० । यो० नि० । इ० द्रा०
 या० त्वा० । वि० मृ० ध० इ० ति० वि० मृ० ध० ॥ १॥ वा० च० । प० ति० । वि० श्व० क० र्मा० ए० मि० ति० वि० श्व० क० र्मा० । क० र्मा०
 य० । म० नो० नु० व० मि० ति० म० न० । नु० वो० वा० जो० । अ० द्या० । कु० वे० मा० स० न० । वि० श्व० नि० । ह० व० ना० नि० । जो० प्र० त०
 वि० श्व० शं० भू० रि० ति० वि० श्व० शं० भू० । अ० व० सं० । सा० धु० क० र्मे० ति० सा० धु० क० र्मा० । इ० द्रा० या० त्वा० । वि०

॥ विश्वकर्मण इति विश्वः कर्मणो एषः ते योनिः । इन्द्राया त्वा । विश्वकर्मण इति विश्वः
 ॥ कर्मणो ॥ १॥ विश्वकर्मण इति विश्वः कर्मणो हविषा । वाट धामः । वट धान इति व
 ट धानः । स्वये । यज्ञ स्व । एयिनी । उत । ध्या । मुद्युतु । अन्ये । अभितः । सु पत्ता इति स
 पत्ताः । ॥ ६॥ अस्माकं । मुखेति मुखः वा । स्त्रिः । अस्तु ॥ १॥ विश्वकर्मण इति विश्वः
 कर्मणो हविषा । वर्धन न । ज्ञातारं । इन्द्रं । अकृणोः । अयुध्यातस्मै । विशोः । सा । अ
 नमता । तवी । अयं । उयः । विहय इति विहयः । ययः । असंत ॥ १॥ अग्नये । त्वा ।
 गा यज्ञ छंदसु मिति गा यज्ञ छंदसं । गृह्णामि । इन्द्राया । त्रिष्टुप् छंदसं । त्रिष्टुप् छंद
 समिति त्रिष्टुप् छंदसं । विश्वेभ्यः । देवेभ्यः । जगं छंदसु मिति जगत् छंदसं । अ
 नुष्टुप् । अनुक्तविभ्यनु । स्तापति । अमि गर इत्यंभिः । गरः ॥ १॥ त्रेयीनां । त्वा । प

त्वं न । आ । धूतो मि । कुकनानां । भेदनां । मधूतमाना । निति मधुः । अंतमानां । पु
 क्रो । त्वा । पुक्रो । आ । धूतो मि । अक्रः । रूपः । सूर्यस्य । रश्मिपुं । २॥ कुकुहं । रूपः । वृषभ
 स्यो । रोचते । वृहता । सोमः । सोमं स्या । पुरो गा इति पुरः । ५ गाः । पुक्रः । पुक्रस्य । पुरो गा इ
 ति पुरः । ५ गाः । यदिति । सोम । अराभ्यः । नामां । जागृवित्स्मै । त्वा । गृह्णामि । तस्मै । ते ।
 सोम । सोमो या स्वा हो । ३॥ उगिक । त्वं । देव । सोम । अग्नेः । ॥ प्रयं । पाथं । अपि । इहि ।
 वृशी । इन्द्रस्य । अस्मत्सर्वे । स्युः । स्मत् । संखा । त्वं । देव । सोम । विश्वेपा । देवानो । प्रियं । पा
 थं । ओ । इ । ॥ ४॥ ॥ इति अष्टमेध्यायः ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ प्राणायामो वर्चो दा इति वर्चः ।
 दा । वर्चसं । पवस्व । व्यानायेति वि । आनायं । उदानायेत्युतः । आनाय । वाचे ॥ १॥ कृत्
 दसांभ्यो । ओत्राप । पवस्व । मिति वस्वः । ५ भ्यामे । क्वोद सा इति वर्चः । ५ दसो । वर्च

॥पवेथा॥२॥आत्मन॥ओजसे॥आधुषे॥विश्वाम्य॥मे॥प्रजाभ्यइतिप्र॥जाभ्यःवचोद
 सादतिवचो॥दसौ॥पवेसे॥पवेथा॥३॥क॥असि॥कतमः॥कस्या॥क॥नामोअसि
 ॥यस्य॥तो॥नामोअमन्म॥हिया॥त्वा॥सोमन॥अती॥पामो॥४॥भूर्भुवः॥५॥उडु॥१॥
 वि॥दे॥वानो॥२॥अ॥मे॥नय॥३॥अ॥यन्तः॥४॥रूपे॥ण॥वः॥रूपे॥अ॥भि॥आ॥अ॥गो॥तुयः
 ॥वः॥वि॥श्व॥वे॥रा॥इति॥वि॥श्वः॥वे॥राः॥वि॥भ॥ज॥ज॥क॥त॥स्य॥प॥था॥प्रा॥इ॥त॥चंद्र॥द॥सि॥ण॥इति
 चंद्र॥द॥सि॥णः॥५॥वि॥स्व॥रि॥ति॥स्वः॥प॥य॥वि॥अ॥न॥रि॥सो॥य॥त॥स्व॥स॥द॥स्ये॥॥ब्रा॥ह्म॥
 ण॥अ॥द्या॥वि॥दे॥य॥पि॥तृ॥म॥न॥मि॥ति॥पि॥तृ॥म॥न॥पे॥तृ॥म॥त्य॥मि॥ति॥पे॥तृ॥म॥त्यो॥अ॥रि॥षि॥आ॥रु॥पे
 य॥सु॥धा॥उ॥द॥सि॥ण॥मि॥ति॥सु॥धा॥उ॥द॥सि॥णः॥६॥अ॥स्म॥श॥ते॥त्य॥स्य॥न॥रा॥ता॥दे॥व॥त्रे॥ति॥
 ति॥दे॥वः॥ना॥ग॥॥प्र॥जा॥तार॥मि॥ति॥प्र॥जा॥तार॥आ॥वि॥श॥अ॥य॥य॥त्वा॥म॥त्या॥वरु॥ण॥इ॥

४३

दा॥नु॥मः॥अ॥मृ॥त॥त्व॥मि॥त्य॥मृ॥तः॥त्वा॥अ॥श्या॥न॥॥१॥आ॥यु॥रा॥ज्ञे॥ए॥धि॥म॥क॥य॥त्वा॥प॥त॥म॥ही॥न॥इति॥प्र॥ति॥ग॥ही॥त्रो॥रु॥द्र॥या॥प्रा॥
 णा॥ब्र॥ह्म॥स्प॥त॥य॥त्व॥क्रा॥य॥मः॥य॥मि॥यः॥म॥यः॥म॥त्वा॥प्र॥ति॥म॥ही॥न॥इति॥प्र॥ति॥ग॥ही॥त्रो॥रा॥
 क॥अ॥दा॥ज्ञा॥क॥से॥का॥मः॥का॥मा॥यः॥का॥यः॥दा॥ता॥का॥मः॥प्र॥ति॥ग॥ही॥न॥इति॥प्र॥ति॥ग॥
 ही॥न॥का॥मा॥ए॥त॥न॥ति॥त॥व॥का॥मः॥स॥ता॥भु॥न॥जा॥म॥हो॥॥१॥सं॥इ॥द्र॥नः॥म॥न॥सा॥
 ने॥षि॥गो॥भिः॥मो॥सू॥र॥भिः॥मि॥रि॥ति॥सू॥रिः॥भिः॥म॥घ॥व॥न्नि॥ति॥म॥घ॥व॥न॥से॥स्व॥स्या॥॥
 से॥ब्रा॥ह्म॥णा॥दे॥व॥कृ॥त॥मि॥ति॥दे॥वः॥कृ॥त॥य॥न॥अ॥स्मि॥सा॥दे॥वानो॥सु॥म॥ता॥इति॥सु॥
 म॥तो॥य॥ज्ञि॥या॥नो॥॥१॥॥व॥च॥सा॥॥धा॥ता॥रा॥तिः॥स॥वि॥ता॥इ॥दं॥जु॥ष॥तो॥प्र॥जा॥प॥ति॥रि॥
 ति॥प्र॥जाः॥प॥तिः॥वि॥धि॥पा॥इति॥वि॥धिः॥पा॥दे॥वः॥अ॥ग्नि॥ते॥व॥॥वि॥त्तुः॥प्र॥ज॥ये॥ति॥



प्रजयाः सः ररा इति सं रराणः । यजमानाया इति ररा । दधानुः । सुगेति
 सुः गा । वः देवाः । सदाना । अकमेया । आजमेत्याः जग्मा । इदं । स वने । जुषाणा । भ
 रयाणाः । वहमानाः । हवी ७ पि । अस्मै इत्यस्मै । धन । वसवः । वसुनि ४ । यान् । आ
 आवहः । उशतः । देव । देवान् । तान् । प्राइरयः । स्व । अस्मै स धस्य इति स धस्य
 जसिवा ७ मु इति जसि ७ वा ७ सः । पयिवा ७ स इति पयि ७ वा ७ सः । च । विष्णो
 अ सु । घर्म । स्वः । आ । तिष्ठता । अनु ५ । वयं हि । त्वा । प्रयतीति प्रयति । यज । अ
 स्मिन् । अग्ने । होतारं । अ वृणीमहि । इदं । ऊर्ध्वकृ । अयाः । ऊर्ध्वकृ । उता । आश
 मिष्टाः । प्रजानमिति प्रजानन् । यज । उप । या हि । विधाना ६ । देवानां । विदः ।
 ७ । यज्ञायज्ञे गच्छ । यज्ञपतिमिति यज्ञपति । स्वा । योनिं । गच्छ । स्वाहा । पुषः । ते

यज्ञः । यज्ञपत इति यज्ञः पते । सहस्रकृत्वाक इति सहस्रकृत्वाकः । सर्ववीर इति स
 वः । वीरा । ते । जुषस्व । स्वाहा ६ । उरु । हि । राजा । वरुणः । वकारः । सूयीया । पंथो । अन्वेतवा
 इत्यनुः एतवै । ऊँ । इदं । अपदे । आदा । प्रतिधातव इति प्रतिधातवो । अकः । उता ।
 अपवक्तव्यः । वक्ता । हृदयविधः । हृदयविध इति हृदयः । विधः । चित्तानमः । व
 रुणाया । अभिषिक्तः । अभिस्थित इत्यभिः स्थितः । वरुणस्य । पाशः ११ । अग्ने । अनीक
 । अप । आ । विवेश । अयो । न पते । प्रतिरक्षामिति प्रतिरक्षन् । असुर्यो दमे दमु इति
 दमेः दमेः । समिधमिति सः । इधा । सः । अग्ने । प्रति । ति । जिह्वा । घृता । उता । चर । एषत । स्वा
 हा ११ । समुद्रा । ते । हृदय । अस्मिन् । सु । अन्तरित्यतः । स । त्वा । विशन् । आपधी । उत ।
 आपो यज्ञस्य । त्वा । यज्ञपत इति यज्ञः पते । सूक्तेका इति सूक्तः । उक्ता । नमो वाक इति

नमः॥ वाके। विधेम। यत्। स्वाहा॥ ३॥ देवी। आयः। यः। वा। गर्भः। तं। सुधीनमिति सु
 ५५ श्रीतं। मुभनमिति सुभृतं। विभृतं। देवः। सोमः। एषः। ने। लोकः। यरि। वीदस्ति। शत्रुव
 द्धि। देवानं। समिदितिसं॥ इत्। असि॥ ४॥ एजेत्। इरांमास्यइतिदशंमास्यः। ग
 र्भः। रोजेयुता। सहायथा। अयः। वायुः। एजेति। यथा। समुद्रः। एजेति। एवाअयं। द
 शंमास्यइतिदशंमास्यः। अश्वत्। जरायुणा। सहो॥ १॥ यस्याः। ने। यज्ञियः। गर्भः। य
 स्याओनिः। हिरण्ययी। अंगानि। अकुता। यस्य। ने। मात्रा। सं। अजीगमे। स्वाहा॥ २॥
 १। युरुदस्यइतिपुरुदस्यः। विषुरुपइतिविषुरुपः। इंदुः। अंतः। मरिमानौ। आनं ४५
 ज। धीरः। एकपदीमित्येकः पदी। द्विपदीमितिद्विपदी। त्रिपदीमितित्रिपदी। च
 तुष्पदी। चतुःपदी। पतिचतुःपदी। अष्टापदीमित्यष्टापदी। भवना। अनु। प्रथ

ता। स्वाहा॥ ३॥ यरुतः। यस्य। हि। सये। पाथ। दिक्। विमहसइतिविमहसस्यैसः। सु
 गोपातसइतिमुःगोपातमः। जनः॥ ४॥ मही। द्यौः। पृथिवी। वा। ना। इमे। यज्ञे। मिमि
 सतो। पिपतां। नः। नरीमनि। रिनि। मरीमः। मिः॥ ५॥ आ। जिघ्राकलशं। मदि। आ। वा
 । विशंतु। इंदवोपुनः। ऊर्ज्जा। नि। वत्तस्वासानः। सहस्रं। भुक्ष। उरुधारेयुरुः। धा
 राययस्वती। पुनः। मा। आविशतातारपि॥ १॥ इत्ये। कास्यं। इले। रंते। वंदे। ज्यो
 तै। अदिते। सरस्वति। महि। विश्वतीरतिः। इह। रमध्वं। इह। धृतिः। इह। स्वधृ
 ति। रिनिस्वधृतिः। स्वाहा॥ उपसृजन्नित्यपःसृजन्। धरुणः। मात्रो। धरुणः।
 मातरं। धयन्। रायः। पोषः। अस्मासु। दीधरन्। स्वाहा॥ ३॥ अमे। आ। ज्योतिः। अ
 मृतोः। अमृतम। दिवः। पृथिव्या। अधि। आ। अरुहामौ। अविहामौ। देवानां। सः।
 निविः। श्रीति। एता। ते। अग्निये। नामांनि। देवेषु। मां। सकृत्। मिति सुः। कृतं। वृत्तान्। ३॥ इह ४

प०
४०

अवभृथायेत्यवभृथाया उद्यत इत्युतः यतः। समुद्रः। अभ्यवद्विद्यमाण इत्यभिः।
वक्रियता। ग। सलिलः। प्रक्षुत इति प्रक्षुतः। ॥ ययोः। ओजसा। स्वभिता। रजाः। सि
। वीर्येभिः। वीरतमेति वीरः। तमा। शविष्ठा। या। पत्येते इति पत्येते। अप्रतीतेत्यप्रतिः
इता। सहोमिरितिसहोमिः। विलू इति विलू। अग्नविरुणा। पूर्वकृता इति पूर्वः
कृतौ। ॥ ८॥ देवान्। दिवं। अग्नयज्ञः। ततः। मा। इविजं। अष्टु। मनुष्यान्। अंत
रिक्षः। पितृन्। पृथिवी। यं। के। च। लोकं। अग्नयज्ञः। ततः। मा। भद्रं। अभूदो।
॥ ॥ इति नवमोऽध्यायः॥ ॥ ७० मू॥ ॥ देवः। सवितरिति सवितः। प्र। सुव। ४७
यज्ञं। प्र। सुव। ज्ञमं। भगाया। दिव्यह। गंधर्वः। केतपा इति केतः। पाः। केतः। नः। पुना
नु। वाचः। पतिः। नः। अद्यावाजं। स्वदनु। ॥ ॥ ध्रुवसदमिति ध्रुवः। सदं। त्वा। नृषदं। नृ

इत्यमरः सति देवः सदे।

सदमिति नृः सदं। मनः सदमिति मनः सदं। उपपाम गृहीत इत्युपपामः गृहीतः। अ
सि। इंद्राया। त्वा। जुष्टं। गृह्णामि। एपः। ते। ये। निः। इंद्राया। त्वा। जुष्टवममिति जुष्टं
मं। ॥ १॥ अश्वसु पदं। अश्वसदमित्यश्वः सदं। त्वा। घृतसदमिति घृतः सदं। व्योमस
दमिति व्योमः सदं। ॥ ॥ पृथिविसदमिति पृथिविः सदं। अंत रिक्षसद
मित्यंत रिक्षः सदं। ॥ ॥ इति सदेमिति इति विः सदं। ॥ ॥ नाकसदमि
ति नाकः सदं। ॥ अपो रसं। उदयसमित्युत्तं वयसीये संतं। समाहितमिति सं
आहितं। अपो रसं। स्यायः रसः। ते। वः। गृह्णामि। उत्तममित्युत्तं नमं। ॥ १॥ यहा।
कृज्जं। कुतय इदं ज्जं। आकुतयः। व्यतः। विप्रया। मूर्ति। ते। पां। विशिप्रियाणामिति
विः। विशिप्रियाणां। वः। अहं। इदं। उज्जं। सं। अग्रभं। ॥ ॥ सं एव इति सं। एव। ॥

पृ. ४८

सा मा भद्रा एतु वि एव इति वः एवः स्थ वि मा पा पेन एतु ॥ ६ ॥ इदं स्य वज्रः ।
असि वाजसा इति वाजः साः । लया अयं वाजः सेतु वाजस्य नु प्रसव इति प्रः स
वे मात री मही अदिति नाम वचसा करामहे यस्या इदं विश्वं भुवना आवि
वेशेत्यः विवेशा तस्या न देवः सविता धर्म सा विषकु देवी आयः अपो न
पा ज्ञान यः वः ऊर्मिः प्रतूर्तिरिति प्रः तूर्तिः ककुम्भानि तिककुन्मान वाज
सा इति वाजः सा तेन अयं वाजः सेतु ॥ २ ॥ अस्मिन् प्रः सु अंतः अमृतं अजित
प्रः सु भेषजं अपो उत प्रशस्तिमिरिति प्रशक्तिभिः । अन्वाः भवता वाजिनः
॥ ३ ॥ चातः वा वः मनः वा गंधर्वाः सप्त विंशतिरिति सप्त विंशतिः ता अग्रे
अन्वा अयुजन्ते अस्मिन् जवं आ अरधुः ॥ ४ ॥ वातरः हा इति वातः रः हाः ।

भव वाजिन युज्यमानः । इदं स्य वेती इ स्यः इवः दक्षिणः श्रिया एधि युजं तु वा म
रुतः विश्ववेद स इति विश्वः वेद सः आ तो लया पवितरिति प्रः सु जवं दधानु ॥ ५ ॥
जवं यः ते वाजिन निहित इति मिः हितः गुहा यः श्येन परि न इति परिः इतः
अचरन् वा वाते तेनानः वाजिन बलवानिति बलः वान् बलेन याजजिदिति वा
जः जित्वा एधि समने च पारयितुः ॥ ६ ॥ वाजिनः वाजजित इति वाजः जितः तः
वाजं सुतिष्ठतः ब्रह्मस्य ते भामरा अवजिघ्रतः । देवस्य वयः सविनुः सवे स
त्यसव स इति सत्यः सवसः ब्रह्मस्य ते उन्नममित्युत्तमं नाकं रुहेमा इदं स्य उन्न
मित्युत्तमा नाकं रुहेमा अरुहाम ॥ १ ॥ ब्रह्मस्य ते वाजं जा ब्रह्मस्य ते वाचं वि
दत ब्रह्मस्यति वाजं जापयतः ॥ २ ॥ इदं वाजं जय इदं वाचं विदत इदं वाजं

प०
६९

जापयता॥३॥ एकावसासत्यासंवागितिसंवाक्। अभूत्। यथा। ब्रह्मस्यति। वाजं
। अजीजयत। अजीजयत। ब्रह्मस्यति। वाचं। वनेस्यतय। विमुच्यध्वे। ४॥ देवस्य। व
यं। सविनु। सवे। सत्यसंवसइतिसत्यः संवसः। ब्रह्मस्यते। वाज्जितइतिवाजः। जि
जैतः। वाजं। जप्त्वा। वाजिनः। वाजं। जयत। अध्वनः। स्कभेतः। योजना। मिमांसाः
। काष्ठा। गच्छत। ६॥ एयः। स्यः। वाजी। सिपति। नुरंण्यति। ग्रीवाया। बद्धः। अपि
कसइत्यपिः कस। आसनि। क्रतुं। दधिकाइतिदधिः। काः। अनु। संतवीत्वदितिसं
तवीत्वत। पयः। अंकाऽसि। अनु। आपनीकणदित्याः। पनीकणत। ७॥ उता। स्मा। अ
स्मा। इवतः। नुरंण्यात। पर्णः। नावे। अनु। वाति। प्रागर्दिनइतिप्रऽगर्दिनः। स्येनस्येव
तिश्येनस्यइव। ध्रजतः। अंकसं। परि। दधिकावाइतिदधिः। धिः। काः। सतां। क

४९

५ वाजे

जी। नरिचका। चा। शो। नः। भवंतु। वाजिनः। हवेषु। देवतातेतिदेवः। नाता। मितद्रवइतिमितः
द्रवः। स्वकाइतिसुऽप्रकाः। अभयतः। अहिं। वकः। रसाऽसि। सनेमि। अस्मत्। युयवन्।
असीवाः। ९॥ तै। नः। अर्वतः। हवनः। कृतइतिहवनः। कृतः। हवं। विश्वे। श्रएवतु। वा
जिनः। मितद्रवइतिमितऽद्रकः। सहस्रस्त्राइतिसहस्रऽसाः। सुधसाताइवेतिसेध
सातोऽद्वात्मना। महः। ये। धनं। समिये। धितिसं। इथेपु। जन्तिरे। १०॥ वाजं। वाजं। इ
तिवाजं। अवतां। वाजिनः। नः। धनेपु। विप्राः। अमृताः। कृतज्ञाइत्यनऽज्ञाः। अयम
ध्वः। पिबत। मादयध्वं। नृपाः। यातः। पथिभि। रि। ति। पथिऽभिः। देवयानैरितिदेवऽयानैः
। ११॥ आ। मा। वाजस्य। प्रसवइतिप्रऽसवः। जगम्यात्। आ। इमे। इनीमे। द्यावा। एधि
वीइतिद्यावा। एधि। वी। विश्वरूपेइतिविश्वऽरूपे। आ। मा। गंतं। पितरा। मातरा। यु

वे।आ।मा।सि।म।अमृतं।यत्।यत्।मृतं।नाय।गम्यात्॥१२॥वाजिनः।वाजजितइति।
वाजजितः।वाजं।ससृवा७सइतिससृवा७स॥वृहस्यते।भागं।अवाजिघ्नत।
निमृजानादिति।मिः।मृजानाः॥१३॥आपये।स्वाहा।स्वापयइति।मुः।आपये।अपि।
जायेल्यपि।जाय।कृतवे।वसवे।अहर्पते।अहः।पतयइत्यहः।पतये।
अह्रे।सुग्धाय।सुग्धाय।वेन७शिनइति।विः।न७शिने।आयायनाये।सायः।आय
नाय।अंयाय।भौवनाय।भुवनस्य।पतये।अधिपतयइत्यधि७पतयो॥आयुः।यजे
न।कृत्यतां।प्राणः।चसुः।श्रोत्रं।एष्टु।यजः।यजेन।कृत्यतां॥१४॥जाये।आ।इह।स्व
रिति।स्वः।रोहाव।प्रजायेते।रिति।प्रजाः।पते।प्रजाइति।प्रः।जाः।अभूमास्वः।देवाः।
अग्न्या।अमृताः।अभूमा॥१५॥अस्मइत्यस्मै।वः।स्मिन्।इदित्ये।अस्मइत्यस्मै।नृभाः।

उत।क्रतुः।अस्मइत्यस्मै।वर्वा७सि।मनुः।वः।मनः।मात्रे।एयिष्ये।इत्यंतिराट्।यंतो
।असि।यमनः।ध्रुवः।असि।ध्रुवः।रुधे।सिमाय।रुधे।पोषाट्।५॥वाज
स्याइमं।प्रसवइति।प्रः।सवः।सुपुवे।सुसुवइति।सुसुवे।त्यग्ये।सोमः।राजाने।ओ
पधीषु।अश्रित्यपुः।सुताः।अस्मभ्यं।मधुमती।रिति।मधुः।मतीः।भवंतु।वयं।रा
ष्ट्रा।जागरयामा।युरोहिताइति।पुरः।हिताः॥१॥वाजस्या।इदं।प्रसवइति।प्रः।सवः।
आ।वभूवा।इमा।चाविश्या।भुवनानि।सर्वतः।सनेमि।राजा।परियाति।विद्वान्।
रयिं।पुष्टिं।वर्द्धयमानः।अस्मइत्यस्मै॥२॥वाजस्य।इमं।प्रसवइति।प्रः।सवः।शि
श्रिये।दिवा।इमा।चाविश्या।भुवनानि।सं।मालिनिसं।राट्।अदिसंतं।दापयति।
प्रजावन्मिति।प्रः।जानन।सं।नः।रयिं।सर्ववीरमिति।सर्वः।वीरं।नि।यच्छु॥३॥

अग्ने० अहो० वद० इहान० प्रतिन० सु० तादिति सु० मना० भवा० प्रा० य० स० स०
 जिदितिसहस्र० जित० ले० हि० धन० रा० इति धन० रा० अग्नि० ४॥ सोमो० सी० राजान० अ०
 वसे० अग्नि० अन्वार० भाम० इत्यनु० आर० भाम० हे० आदित्य० विष्णु० मर्यु० ब्रह्माण०
 ब्राह्म० हर्यति० ॥ ५॥ प्रा० य० य० अ० य० प्रा० य० प्रा० सर० स्वती० प्रा० वा० दे० वी०
 रा० न० ॥ ६॥ अ० य० म० ग० ब्र० ह० स्यति० इ० इ० रा० ना० य० चो० द० य० वा० च० वि० षु० सर० स्वती० स०
 वि० तार० वा० जिने० ७॥ सर० स्वत्यै० वा० च० य० न० तु० र्य० तु० र्य० द० धा० मि० ब्र० ह० स्यते० ॥ त्वा० सो० मा०
 ज्ये० ने० ति० सा० श० ज्ये० ना० अ० मि० सि० चा० मि० इ० द० स्य० त्वा० सा० मा० ज्ये० ने० ति० सा० श० ज्ये० ना० अ०
 मि० सि० चा० मि० त्वा० अ० ग्नि० ॥ एका० सरे० ऐ० त्येक० अ० सरे० ण० प्रा० ली० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं०
 उ० त्वा० जे० षं० अ० ष्वि० तौ० ष्यं० सरे० ऐ० ति० द्वि० अ० सरे० ण० द्वि० प० द० इति० द्वि० प० द० ॥ मनु० ष्या०

न० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं० ता० न० उ० त्वा० जे० षं० वि० षु० ॥ १॥ अ० सरे० ऐ० ति० द्वि० अ० सरे० ण० त्री० न० इ० मा०
 न० लो० का० न० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं० उ० त्वा० जे० षं० सोम० च० तुर० सरे० ऐ० ति० चतु० अ० सरे०
 ण० चतु० षट्० चतु० षट्० इति० चतु० प० द० ॥ प० ष्ट० न० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं० उ० त्वा० जे० षं० ॥
 म० वा० पंचा० सरे० ऐ० ति० पंच० अ० सरे० ण० पंच० ऋ० तू० न० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं० उ० त्वा० जे० षं०
 स० वि० ता० ष० ल० सरे० ऐ० ति० षट्० अ० सरे० ण० षट्० ऋ० तू० न० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं० उ० त्वा० जे० षं०
 म० रु० त० स० प्रा० सरे० ऐ० ति० सप्त० अ० सरे० ण० स० म० आ० ग्या० न० प० ष्ट० न० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं०
 न० उ० त्वा० जे० षं० ब्र० ह० स्यति० अ० य० सरे० ऐ० त्यष्ट० अ० सरे० ण० ग० य० त्री० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं०
 तो० उ० त्वा० जे० षं० ॥ २॥ मि० त्र० न० वा० सरे० ऐ० ति० नव० अ० सरे० ण० वि० द० न० मि० ति० त्रि० द० न० सो०
 मा० उ० त्वा० अ० ज० य० न० तं० उ० त्वा० जे० षं० व० रु० ण० द० शा० सरे० ऐ० ति० दश० अ० सरे० ण० वि० र० ज० मि०

ति विंशतिः। उत अजयत्ता। उत जेषां देवः। एकादशसरेणेत्येकादशसरेण
 ण विंशतिः। त्रिंशमिति त्रिंशमिति। उत अजयत्ता। उत जेषां देवः। द्वादश
 दशसरेणेति द्वादशसरेण जगती। उत अजयत्ता। उत जेषां देवः। त्रयोदश
 त्रयोदशसरेणेति त्रयोदशसरेण। त्रयोदशमिति त्रयोदशसरेण। स्तोमं। उ
 त अजयत्ता। उत जेषां देवः। रुद्राः। चतुर्दशसरेणेति चतुर्दशसरेण। चतुर्दश
 मिति चतुर्दशसरेण। स्तोमं। उत अजयत्ता। उत जेषां देवः। आदित्याः। पंचदशसरेणे
 ति पंचदशसरेण। पंचदशमिति पंचदशसरेण। स्तोमं। उत अजयत्ता। उत जेषां देवः। ५२
 वे। अदितिः। षोडशसरेणेति षोडशसरेण। षोडशसरेण। स्तोमं। उत अजय
 त्ता। उत जेषां देवः। प्रजापतिरिति प्रजापतिः। सप्तदशसरेणेति सप्तदशसरेण।

सरेण। सप्तदशमिति सप्तदशसरेण। स्तोमं। उत अजयत्ता। उत जेषां देवः। ४॥ इति
 परेदशमोऽध्यायः॥ ४॥ हरिः॥ अग्निनेत्रेभ्य इत्यग्निः नेत्रेभ्यः देवेभ्यः। पुरः सत्य इति पुरः सत्यः
 जुषसां। अग्निनेत्रेभ्य इत्यग्निः नेत्रेभ्यः देवेभ्यः। पुरः सत्य इति पुरः सत्यः। विष्वदेवने
 त्रेभ्य इति विष्वदेवनेत्रेभ्यः। पश्चात् स इति पश्चात् सत्यः। मित्रावरुणनेत्रेभ्य इ
 ति मित्रावरुणनेत्रेभ्यः। वायवेत्रेभ्य इति वायवेत्रेभ्यः। उत स
 इत्युत सत्यः। स्तोमं नेत्रेभ्य इति स्तोमं नेत्रेभ्यः। देवेभ्यः। उत स
 इत्युत सत्यः। पुरः सत्य इति पुरः सत्यः। अग्निनेत्रेभ्य इति अग्निनेत्रेभ्यः। पुरः सत्य इति पुरः सत्यः।



(यमः नेत्राः। दक्षिणसदइति दक्षिणाः सदः॥ विश्वदेवनेत्रा इति विश्वदेवः ने
 ५५ ॥ पश्चात्सदइति पश्चात् सदः॥ मित्रावरुणनेत्रा इति मित्रावरुणः नेत्राः।
 कामरुनेत्रा इति कामरुतः नेत्राः॥ वा। उ नरसदइत्यु नरः सदः। सोमनेत्रा इति
 सोमः नेत्राः॥ ३॥ उरिसदइत्यु परिः सदः। उर्वसुतः तिभ्यः॥ स्वाहा
 ॥ २॥ अग्ने। सहस्वा। एतेनः॥ अतिमाती। रेत्युमिः मातीः॥ अपः। अस्याः दुष्टः।
 दुस्तर इति दुस्तरः। तरनः। अरतीः। वर्यः। धाः। यज्ञवाहसीति यज्ञः वाहसि।
 ॥ ३॥ उपादः। शोरित्युपः। अः शोः। वीर्येण जुहोमि। हनो रक्षः। स्वाहा। रक्षसो
 । त्वा। वधाया। अवधिष्मरसः। अमुष्या। त्वा। वधाया। अमु। अवः। धिष्म। जु
 याणः। अधी। आनीस्य। वेनु। आहो। ४॥ अपः। देवाः। मधुमती। रिति मधुः मतीः॥

५३ रा

अमृभः। ना। ऊज्ज्वली। राजरुद्रनिराजः स्वः। चिनानाः। याभिः॥ मित्रावरुणौ। अ
 भि। अमिचन। याभिः। इन्द्रः। अनयनः। अति। अरतीः॥ १॥ वृक्षः। कुर्मिः। असि। रा
 द्द्रा इति राद्द्राः। राद्द्रा। मेदे हि। स्वाहा। वृक्षः। कुर्मिः। असि। राद्द्रा इति राद्द्रा
 ॥ २॥ राद्द्रा। अमुमेदे हि। वृक्षसुन इति वृक्षः सुनः॥ २॥ अयन इत्यर्थः इनेः। ओ
 ज्ज्वलीः। आपः। परिवाहिणीः। परिवाहिनी। रिति परिः वाहिनीः। अयो। पतिः।
 अपो। गर्भः। सूर्यवर्चस इति सूर्यः वर्चसः। सूर्यत्ववृद्धति सूर्यः त्ववः। वृज्ज्वलित
 इति वृज्ज्वलितः। वाशाः। मोहाः। शक्करीः। जनुभृत इति जनुः भृतः। विश्वभृत इ
 ति विश्वभृतः। शोहाः। आपः। स्वरोक्षीः। स्वरोक्षीरिति स्वः रोक्षी। ल। राद्द्रा इ
 ति विश्वभृतः। शोहाः। आपः। स्वरोक्षीः। स्वरोक्षीरिति स्वः रोक्षी। ल। राद्द्रा इ
 निराद्द्रा इति राद्द्रा अमुमेदे हि। ३॥ सं। मधुमती। रिति मधुः मतीः। मधुनीभिः



रतिमधुऽमनीभिः। एच्यतां। महिः। सुत्रं। स त्रियाया वृत्तानाः। अनाधृष्टाः। सी
 रतां सदा। ओजसा। महिः। सुत्रं। स त्रियाया दधतीः। ४। स विता। त्वा। प्रसन्नाना
 मिति प्रऽसवानां। सुवत्ता। अग्निः। गृहपतीनामिति गृहऽपतीनां। सोमः। वरु
 स्यनीनां। बृहस्पतिः। वाचे। इंद्रः। ज्यैष्ठ्याया रुद्रः। पृथुनां मित्रः। सत्याया वरुणः।
 धर्मपतीनामिति धर्मऽपतीनां॥ १॥ इमं देवाः। असुपत्तां सुवध्वं। महते स
 त्राया। महते। ज्यैष्ठ्याया। इमं। अमुं। असुध्वं। पुत्रं। अमुष्याः। पुत्रं। अस्यै। विश
 ॥ २॥ एषः। वः। कुरवः। राजा। एषः। वः। पंचालाः। राजा। सोमः। अस्वार्कः। ब्राह्म
 णानां राजा॥ ३॥ सोमस्य। विविः। असि। अमये। त्वाहा। सोमाया सवित्रे।
 सरस्वत्यै। पूष्यै। बृहस्पतये॥ १॥ इंद्राय। अश्विन्या। ज्यैष्ठ्याया। धोमाया। भगोया।

५४
 राम

अयं प्रो। अग्निं भृष्टमित्यनिः। भृष्टं। असि। वाचः। वंधुः। तयो जा इति तपऽजाः। सो
 मस्या राजा। असि। स्वाहा। राजसू इति राजऽसूतः। २। सधमा इति सधऽमादः। धु
 जिनी। आपः। एताः। अनाधृष्टाः। अपुस्यः। वसोनाः। पुस्त्यासु। वक्ते। वरुणः। स
 धः। मित्रराधऽस्यै। अयोशिषुः। मातृतभा। स्विति मातृ। तमासु। अनपित्यंतः॥
 ॥ ३॥ सत्रस्या। उज्ज्व। जरायु। नाभिः। योनिः। इंद्रस्य। वात्रे घृमिति वात्रेऽघ्नं। असि
 । त्वया। अयं। वृत्रं। वध्यात। मित्रस्य। असि। वरुणस्यः। असि। ४। रुजा। इवा। सुपा
 । पाता। एनां। प्राचं। प्रत्येचं। त्रिपेचं। दिव्य इति दिक्। ५। पाता। ५। आविः। मृगः।
 । जावित्र इत्याऽवित्रः। अग्निः। गृहपतिरिति गृहऽपतिः। इंद्रः। वृषश्च। इति वृ
 रुऽश्वकाः। पूषा। विश्ववेदा इति विश्वऽवेदाः। धा। विना इत्याऽविनी। मित्रा वरुणा

धृतवता इति धृतः त्रैलोक्यं ॥ आविते इत्याः विने। द्यावा पृथिवी इति द्यावा पृथिवी
 त्रैलोक्यं भू इति त्रैलोक्यं भू। आविते इत्याः विता। अदिनि। उरुशमैत्युरुः शमी
 ॥ ६ ॥ अवैष्टा इत्यवः इष्टाः इष्टकाः प्राची। आरोह। गायत्री। त्वा। अवतु।
 रथंतरमितिरथं नरा। साम। त्रिवृदिति त्रिः हत्वा। सोमः। वसंतः। रुतुः। ब्रह्म
 इति विणम। १॥ इति विणम। आरोह। त्रिष्टुप्। त्रिस्तुति त्रिस्तुष्टु। आवतु।
 हत्वा। साम। पंचदश इति पंचः दशः। सोमः। ग्रीष्मः। रुतुः। क्षत्रं इति विणम। २॥ प्र
 तीची। आरोह। जगती। त्वा। अवतु। वैश्वं। साम। सप्तदश इति सप्तः दशः। सो
 मः। वयोः। रुतुः। विद। इति विणम। ३॥ उदीची। आरोह। अनुष्टुप्। अनुस्तुति वि
 लंभुः। त्वा। आवतु। विराजं। साम। एकविंश इत्येकः विंशः। सामः।

५७
 राम

रतः। रुतुः। फलं। इति विणम। ४॥ ऊर्ध्वी। आरोह। पंक्तिः। त्वा। अवतु। शक्रैर्वने इ
 ति शक्रैर्वने। सामनी इति सामनी। त्रिणवत्रयस्त्रिः। शो। त्रिनवत्रयस्त्रिः। शो।
 इति त्रिनवत्रयस्त्रिः। शो। सोमो। हेमंतः। शिशिरः। कटु इत्युत्। वचः। इति विणम। प्र
 तः। मिनिप्रति। असमानमुचः। शिरः। ५॥ सोमस्य। विपिः। असितवैवेति
 तवः। वामे। लिपिः। भूयात्। मृत्योः। पाहि। ओजः। सहः। अमृतो। अमि। हिर
 ण्यरूपा इति हिरण्यः रूपा। उषसः। विरोक इति विरोके। उभो। इंदो। उत। इतः।
 सूर्यः। च। आ। रोहन्तु। वरुण। मित्र। गले। जतः। चसाथं अदिनि। दिती। च। मित्रः।
 क्रोशं वरुणः। अस्मि। सोमस्य। त्वा। धुमेना। अभि। सिंचामि। अये। आजसा
 सूर्यस्य। वर्चसा। इंद्रे। इंद्रे। अहं। ओजसा। सत्राणां। सत्रपतिरिति

स्रजः पतिः। एभिः अत्रिः। दिघुनायाहि। जानसु। ज्ञायति। जानः। रात्र्याया। १। इमं दे
 वः॥ २॥ एष वः। ३॥ प्र। पवनस्याहं भस्य। एता नवः। चरंति। स्वसि च। इति स्वः
 सिचः। दया माः। ताः। आ। अवृत्तुना। अधराक। उदक। ताः। अहि मा। बुध्यां। अ
 नारीय मोणाः। विष्टोः। विक्रम ए। मिनि विः। क्रम ए। विक्रीति। मिनि विः। क्रानां।
 क्रानां। प्रसि॥ ४॥ प्रजा पतनं। इति प्रजाः। पते। ना। खन। एता नि। अम्यः। विष्टो।
 दया। परि। ता। दभू। वायला। मा। इति यत्। कामाः। ते। जुहु। मः। तनः। नः। अस्तु
 चये। म्या मा। पतयः। इयीणा म्। ५॥ रुद्र। यत्। नो। कवि। परं। ना। नं। स्म। कुनं।
 अस्मि। अमे। ए। मित्य म्। इ। ए। अस्मि। स्वाहा॥ ६॥ इ। इ। स्या। वज्रेः। अस्मि। मित्रावरु
 णयोः। त्वा। प्र। शास्त्रा। रिनि। प्र। शास्त्राः। प्र। तिषति। प्रः। शिवा। युन। गिमा। अय्यथा।

५६

राम

पोहाः। स्वधायै। ला। अरिष्टः। फलुनः। मरुतो। प्रसवेनेति प्रः। सवेन। नया। आ
 पोम। मनसा। सं। इ। दिये। ती। १॥ माते। इ। इ। ने। वयं। तुरापाट्। अयुकासः। अयुलु
 ताः। वि। दसा म्। ति। वै। रियं। अधि। यत्। नव। ब्रह्म। नति। वज्रः। हस्म। आ। रमीनः। देव
 त्वये। म्। वप्या। निति सुः। अम्या नः। २॥ अग्नये। गृह पतः। युइति गृहः। पतया म्या
 हो। स। मा। या। वनस्यते यं। इ। इ। स्या। इ। द्रियाय। मरुतो। अजसे। एथि वि। मातः। मा
 मा। दि। सीः। मोइति मोः। अहं। त्वां। ३॥ हः। सः। यु। चिषता। यु। चिसदिनि यु। चि
 सता। यु। चोः। अतु। पि। ससदिनं। त्रि। सः। सता। होता। वेदिषत्। वेदि। सदिनि वेदिः। स
 अतिथिः। डुराण। सदिनि डुराणः। सता। वृषत्। नत। दिनि नः। सता। वरसदेनि
 वरसत्। अतु। सदिनं। सता। व्या। मसदिनि व्या मः। सता। अन्वा। इत्यु पः। जाः। गो

जा इति गोऽर्जः। क्रतुजा इत्यनऽजाः। अदिजा इत्यदिऽजाः। क्रतोर्बृहत्॥४॥ इत्ये
तु असिआयुः। असिआयुः। मेदेहि। युऽ। असि। वं। असि। वं। मेदेहि।
कु। असि। ऊर्जः। मयि। धेहि। इंदस्या। वा। ब्रूइति। ब्रू। वीथैकता इति वीथैः
कृतो। उपावहरामीत्युपवहरामि॥५॥ स्योना। असि। सुषदा। सुसदेति सुऽ
सदा। वृत्रस्येति असि। स्योना। आसीद। सुषदा। सुसदामिति सुऽसदा। स
ययोन्या। आसीद। १। नि। ससादाधुनव्रतं इति धृतं व्रतः। वरुणा। पृथ्या।
नु। आ। सा। न्यायेतिसामशान्याय। सुकतुरिति सुऽकतुः। १॥ अभि। हरित्ये
भिः। असि। अथाना। एताः। ते। पंचदिशाः। कल्प्यतां। ब्रह्मदात्वा। ब्रह्मा। अ
सिः। ॥ सुविता। असि। सत्यप्रसव इति सत्यमुप्रसवः। वरुणा। सत्यो जा इति स

त्यः प्रीतिः ॥ इन्द्रः विराजा ॥ रुद्रः सुशेव इति मृगोवः ॥ १८ ॥ प्रियं कुरेति प्रियं करः प्रियं
 करः प्रियं कुरेति प्रियं ॥ करः भूयः करः भूयः कुरेति भूयः ॥ करः इन्द्रस्य वज्रः प्रसि
 नेन मित्रं ध्या ॥ १९ ॥ अग्निः एयुः ॥ धर्मः एयुः ॥ अग्निः एयुः ॥ धर्मः एयुः ॥ प
 तिः ॥ अज्येस्य हविषं विनुः स्वाहा कृता इति स्वाहा ॥ कृताः ॥ रुद्रस्यारशिभिरिति
 शिवः ॥ २० ॥ यत्तु ॥ सुजातानां मिति सुजातानां ॥ मध्यमेष्ट्याय ॥ मध्यमेष्ट्यायेति म
 ध्यमेष्ट्याय ॥ २१ ॥ सुवित्रा ॥ सुवित्रेति पुः सुवित्रा ॥ सरस्वत्या वाचा त्वष्टा ॥ रूये ॥ पु
 द्या ॥ पुदुभिरिति पुदुभिः ॥ इन्द्रेण ॥ अस्मे ॥ २२ ॥ हस्यति ना ॥ वृक्षणावरुणे नाओज
 सः ॥ अग्निना तेजसा तेनेना राज्ञा ॥ विद्युना देवतया ॥ शम्भ्या ॥ इमेत्युज्ञा विष्णुः ॥
 प्रवानि ॥ २३ ॥ अग्निभ्यामित्यग्निः ॥ अग्निः ॥ पृथ्व्या सरस्वत्यै ॥ इन्द्राय ॥ सुत्राण इति

सुःत्राभ्यां। पञ्चः। वायां। पूतः। पवित्रेणां पुच्छः। सोमः। अनिसुत इत्यनिः सुतः। इ
 दं। सुतः। सर्वा। शकुविता। अंगा यवं मंतु इति यकं मंतः। ययै। चित्। यथा। होति। अ
 नुपूर्वमित्यनुः पूर्वान्वित्येति विः। इहे। हेती। हः। इह। एयां। कृणुहि। भोजनानि।
 पावर्हिषः। नैमउक्तिमिति नमः। उक्तिं। नाज्जमुः। अश्विभ्यानि। अश्विभ्यां। त्वा।
 रस्वती। इद्रया। सुत्राम्। इति सुःत्राभ्यां। रायुवं। सुराम्। अश्विनाः। नमुं। वा। आसु
 रि। त्वा। विपिपांनेति विः। पिपां। अश्वः। पत्नी इति यती। इदं। कर्मस्वितिकर्मः। सुआ ५८
 दनम्॥३॥ पुत्रमिवेति पुत्रेऽइव। पितरां। अश्विनां। उभा। इद्रा। आवक्षुः। काव्यः। ६७ राम
 सनाभिः। यत्। सुराम्। वि। अश्विवा। रावीं। मिः। सरस्वती। त्वा। मघवन्निनिमघः। व
 नां। निस्तुक्॥३॥॥ इत्येकादशोऽध्यायः समाप्तः॥ ॥ हरिः॥ ३०॥ ॥

पुनः॥ प्रथमे। मन्ः। तत्वायां। सविता। धियः। अग्नेः। ज्योतिः। तिचाभ्यानेति चार
 व्या। एथिभ्याः। अधिः। आ। अभुरत्। शयुक्तेनामनसा। वयं। देवस्य। सवितुः। सवे। स्व
 गेयायेति स्वः। गेयायां। शक्त्वा। रायुक्त्वायां। सविता। देवानां। स्वः। यत्। धिया। दि
 तं। हन्। ज्योतिः। कर्मिष्यतः। सविता। प्रासुताति। तान्। ३। येन ते मन्ः। ४। युजे।
 वो। ब्रह्म। पूर्ये। नमो। भिरिति नमः। मिः। विष्ठाः। कः। एतु। पृथ्येवेति पृथ्याः। इव
 । सुरेः। एवतु। विश्वे। अमृतस्य। पुत्राः। आये। धामां। दिव्यानि। तस्यः। ५॥ यस्य।
 प्रयाणः। प्रयानमिति प्रः। यानं। प्रतुः। अन्ये। इतः। ययुः। देवाः। देवस्य। महिमानं।
 आर्जसः। यः। पार्थिवः। नि। विमम इति विदुः। ममे। सः। एतः। शः। रजां। ७। मिः। देयः। सविता
 । महित्वनेति १॥ १॥ लना। इदेव। सवितुः। रिभिः। सवितः। प्रासुव। यज्ञः। प्रासुवाय

रतिस्वस्तः गतिः अमयानि कृत्वा स युजे तिस्रः युजाः सहा ॥ ४ ॥ एधि
 व्याः सधस्थितिः सधस्थिता अग्निः पुरीष्यो अंतिः स्वतः आभरा अछा इमः
 ॥ भुरिण्यमा ॥ ५ ॥ अनु अग्निः उपसा अयो अख्यता अनु अहोनि प्रथमः ज्ञा
 तवेदा इति ज्ञात वेदाः ॥ अनु सूर्यस्या पुरुत्रेति पुरुः प्राचारमीदं अनुधावा
 एधि ॥ इति धावा एधि वी आतनेथा ॥ आ गत्येत्वाः गत्यो वानी अध्वानं सर्वाः
 ॥ ६ ॥ वि धूते अग्निः सधस्थ इति सधस्थो महति वसुधा निचिकीषते ॥
 ॥ ७ ॥ आकस्यत्याः क्रम्य वाजिन एधि वीम अग्निः इच्छा रुचा तमू भूमे हृत्वा य ६०
 नः ब्रूहि यतः खनेमाते वयं ॥ ८ ॥ धोः ति एधं एधि वी सधस्थ मिति सधः ॥ राभ
 स्थं गोत्मा अंत रिक्षम सुमुद्रः योनिः विख्यायेति विख्याय वसुधा त्वमा अ

भिनिता एतन्मृतः ॥ ९ ॥ उता क्रमा मरुते सौभंगाया अस्मात् आस्थातादित्याः स्या
 नाता विष्णो रा इति विष्णोः रा वाजिन वयं स्यामा सुमुता इति सुः मुतो एधिव्याः
 अग्निः खनेतः उपस्थ इत्युपः स्या अस्याः ॥ १० ॥ उता अक्रमीता इति विष्णो रा इति इ
 ति वाः रा वाजी अवा अकृत्यकः मुलोको सुहेतमिति सुः हेत एधिव्याः त
 तः खनेमाता सुप्रतीक मिति सुः प्रतीकः अग्निः खरिति स्वः ॥ रुहाणाः अधिवा ॥
 ॥ ११ ॥ आत्वा जिघृक्षि मनस्ता धूतेना प्रतिक्षियंत मिति प्रतिः शि
 यते भुवना निविष्ठा एधुं निरञ्जा वयं ता रुहना य विष्टा अन्तैः रभसं हं दशो
 नं ॥ १२ ॥ आविष्वतः प्रत्ययौ जिघृक्षि अरक्षसा मनः ॥ १३ ॥ ननु जपेता मय श्री रि तिम
 यः श्रीः स्फुटं ॥ इति स्फुटयत वर्णः ॥ अग्निः ज्ञा अग्नि मृश इत्यग्निः मृशतः

स्वाजमराणाः ॥ १३ ॥ परिवाजपतिमितिवाजः पतिः कविः । अग्निः । हव्यानि । अकभी
 तारमिति । राशुषे ॥ १४ ॥ परिवत्ता । अग्ने । पुरा । वयं । विप्रः । सद्यः । श्रीमहि । धृषवर्ण
 मिति धृषवः । वर्णः । दिवे । दिव इति दिवे । दिवे । भुंतां । भंगुरा । वतां । भंगुरवतामिति भुं
 गुरवतां ॥ १५ ॥ तं । अग्ने । धुमिरिति धुः । मिः । आपुष्पसर्णिः । अज्य इत्युत्तः । भ्यः । अ
 र्मनः । पतिवनेभ्यः । ह्येषधीभ्यः । नृणां । नृपतरिति नृः । पते । ज्ञापसे । श्रुतिः ॥ १६ ॥ एधि
 व्याः । सुधस्यादिति सुधः । स्यात् । अग्निः । पुरीष्यः । अगिरस्वता । रवनामि । ज्योतिष्मतां ।
 त्वा । अग्ने । सुप्रतीकमिति सुः । प्रतीकः । अजस्रेण । भातुना । दीद्यते । शिवः । प्रजाभ्य इति ६९
 प्रजाभ्यः । अहिः । संते । एधिव्याः । सुधस्यादिति सुधः । स्यात् । अग्निः । पुरीष्यः । अगि । राम
 रस्वतः । स्वनामः ॥ १७ ॥ अग्ने । एष्टा । अ । सि । यो निः । अग्ने । ससुदे । अभितः । पितृमाने ।

वर्धकानः । मरुता । आ । पुष्करे । दिवः । मात्रेया । वृत्तिगणा । प्रयुक्ता । ॥ १८ ॥ राम । वास्यः ।
 वना । च । स्यः । अछिदे इत्यच्छिदे । बकुले इति बकुले । उभे इत्युभे । व्यचसती इति व्यचस
 नी । सं । वसा । थां । भूतं । अग्निः । पुरीष्यः । ॥ १९ ॥ सं । वसा । थां । स्वविदेति स्वः । विरा । समीची इ
 तिसतीवी । उरसा । त्मना । अग्निः । अतः । भुरियंती इति भुरिः । ष्यंती । ज्योतिष्मतां । अज
 स्वा इतः । पुरीष्यः । अग्निः । विश्वभरा इति विश्वः । भराः । अथवा । त्वा । प्रथमः । निः । अमंथ
 रा । अग्ने ॥ २० ॥ तं । अग्ने । पुष्करात् । अधिः । अथवा । ॥ २१ ॥ भनिः । अमंथताम् । ध्रुः । दिवस्यवा
 घते ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ इत्यं । त्वा । दध्यङ् । कपिः । पुत्रः । ईधो । अथर्वणः । वृत्रहणः । मावृत्रहणमिति
 वृत्रहणः । पुरंदरमिति पुरंदरः । हाने । कुः । इत्यं । त्वा । पयः । वृषा । सं । ईषे । दस्युहंते म
 मितिरस्युहंते ॥ २४ ॥ धनेनयमिति धनः । नयः । रणे । रण इति रणे । रणे । ॥ २५ ॥ सीदा । होतमि

निहोतः स्वः कं ३ खं। लोके। चिकित्वा न। सादरा। यज्ञोऽसु कृतस्येति सुः कृतस्यो जे। देवा
 ३। मेति देवः अवीः देवान्। हविषा। युजा। सि। अने। वृत्तः। यजमाने। वयः। धाः। ८।
 मि। होता। होतृसदनं। होतृसदनं इति होतृऽसदनं। विद्वानः। तेषः। सीदियानि तिदी
 हिः वाना। असदृत्। सुदस इति सुऽदसः। अद्वयत प्रमतिरित्यद्वयतऽप्रमतिः।
 वसिष्ठः। सहस्रं भूरिति सहस्रं। भूरः। सुचिजिह्व इति सुचिऽजिह्वः। अग्निः। ९॥ सं।
 सीदत्तामहान्। अग्निः। शोचं हि स्वाववीतम इति देवः वीतपा। वि। मधू। अग्ने। अ
 रूपे। मिथेयः। सृजा प्रः। शमेति प्रः शस्तः। दर्शते। १०। अयः। देवीः। उपाः। सृजा मधुमती ६२
 रि निमधुः सतीः। अयश्मायः। प्रजाभ्य इति प्रजाभ्यः। तासां। आस्थाता रित्याऽस्था
 नात्। इत्। जिह्वा। ओषधेयः। सुविष्यता इति सुऽविष्यताः। ११। सं। ते। वायुः। मातरि

श्वारधातु। उन्नानायाः। हृदयो यत्। विक्रममिति विऽकसायः। देवानां चरसि। प्राणाय
 नाकस्ये। देवा वषट्। अस्तु। नु स्ये। २। सुजात इति सुऽजातः। ज्योतिषा। सहाशमे। वरु
 या आ। असदृत्। स्व रित्ति स्वः। वासः। अग्ने। विश्वरूपमिति विश्वः रूपः। सं। व्ययसु।
 विभक्त्या इति विभाः वसो। ३। उत। ऊं इत्यं। तिष्ठ। स्वधरेति सुऽअध्वर। अवानः। दि
 व्या। धरा। हशे। वा। भासा। हता। मुपुक्कति रिति सुऽपुक्कनिः। आ। अग्ने। याहि। सुश
 स्तिभि रिति सुशस्तिऽभिः। ४। ऊं इत्यं। सु। कृतये। तिष्ठ। देवः। न। मविता।
 धो। वजस्ये। मि विनिता। यत्। अं। जिह्वा रित्यं जिऽभिः। वाघ द्वि रिति वाघतऽभिः। वि
 या म ह इति विऽकया म ह॥ ५॥ सं। जातः। गर्भः। अग्निः। रोदस्याः। अग्ने। वारुः। विभक्त
 इति विऽभूतः। अग्ने। वधीयु। विभः। शिष्यः। परि। तमोऽ। सि। अरून्। प्र। मान्। म्य इति म्य

रुः भ्याः अधि। कनिकदत्ता गा॥६॥ स्त्रिः। भवा वीडुं गइति वीकुः अंगा आ भुः भवा।
 वाजी अरेन। एयुः वैभे। सुषदः। सुसदः इति सुः सदे। अग्नेः। पुरीषवाहणः। पुरी
 षवाहन इति पुरीषवाहनः। शिवः भवा प्रजा इति प्रजाभ्यः। मानुषाभ्यः। अंगि भ्य
 ॥५॥ प्राणु वाजी। कनिकदत्ता नानदत्ता रामेभः। पत्नी। भरना अग्निः। पुरीष्याः। मा पादि
 आनु कपुरा॥९॥ वषणा। भरना अपा। गर्भे। सुमुद्रिया अग्ने। आयाहि वीतयोक्तं
 । सयं अग्निः पुरीष्या अगिरखत्। मरामः। १०॥ ओषधयः। प्रति। मोदधु। अग्निः। ६३।
 शिवः। आयंतु मित्यर्थं। अभि। अत्र। युष्मा। व्यस्य नि निविः अस्थं। विन्वा। अनिरः। राम
 । अमीवा। निषीद न। निसीद नि निः सीद न। न। अपा। दु मेति मि ति दुः मति। जहा। ॥

दुषध्वः। इति। गृहीता। पुष्यवती रिति पुष्यवतीः। सुपिप्लवा इति सुः पिप्लवाः। अया
 वः। गर्भे। कृत्वियः। प्रत्ने। सधस्यमिति सधः स्या। आ। असदत्त॥१२॥ वि। पाजंसा। एयु
 ना। शोभुवानः। वाधस्वाधिपः। रससः। अमीवा। सुशर्मणा इति सुः शर्मणा। वृद्धतः। श
 मिति। स्या। अग्नेः। अहः। सुह वस्येति सुः हवस्या। प्रतीतो। प्रनीता इति प्रः नीता। १३॥
 आपः। हिः। स्या। भयो भुव इति भुयः। भुवतोः। ऊर्जे। दधात न। महे। रणा। पाचसे
 १४॥ यः। वः। शिवतमः। इति शिवतमः। रसः। तस्ये। भाजु यत। इह। नः। उ। शती रिवेद्युश
 ताः। इदं। मानरः। १५॥ तस्ये। अरे। गुमा मावः। यस्या सयाया तिन्येय। आपः। जनयथ
 तः। १६॥ मित्रः। सः। सृज्ये तिसं। सृज्ये। एयि वी। भूमि। ज्ञोतिष सहा। मुजातमिति म
 १७॥ जाते। जातवेदमपि जातवेदसमा अयस्माया त्वा। सं। मृजामि। प्रजाभ्य इति प्र

जाभ्यं प्रतिपद्यन्ते ॥ ४॥ रुद्रशसं संज्येति संसृज्या एथिवीम ब्रह्म ज्योतिः सं
 इधिरं नेयां भानुः अजं सः इतां युक् दिवेषु रोचते ॥ ५ ॥ स संष्टा मिति सं संष्टा
 वेम मिति वसु सं मिः रुद्रैः धीरैः कर्म स्यात् सृष्टं हस्ताभ्यां सृष्टी कृत्वा सिनीवाली
 कृणोत तां ॥ ६ ॥ सिनीवाली सुकपदं तिसुः कपदी सुकरीरे तिसुः कुरीरा खो पशे
 तिसुः ओषणा सातुभ्यां अदितिः मेहिआ उखाद धातु हस्तयोः ॥ ७ ॥ उखा कृणोत
 शतप्या वाङ्म्या मिति वाङ्म्या अदितिः धिया माता पुत्रं यथा उपत्यु इत्युप
 म्या सा अग्निम् विभक्तुं गर्भे आत्मा मरुत्यं शिरः असि वसवः त्वा कृण्वतु ६४
 गायत्रेणा छंदसा अगिरस्वत् कृत्वा असि एथिवी असि धारया मयि ॥ ८ ॥ रा म
 जा मिति मे जा रा यः यो यमो गोपत्यं सुवीर्य मिति सुवीर्यं स जाता निति स जा

जातेन॥ यत्तमानाय रुद्राः त्रैलोक्येन त्रैलोक्येन त्रैलोक्येन अंतर्विशं आदित्याः ज्ञा
गतेनाद्यौः विष्ट्वैत्वा देवाः वैश्वानराः कुरुवंतु आनुष्टुभेन आनुष्टुभेन स्यानुः
स्तुभेन। छंदसा अंगिरस्वता क्रवा असिदिशः। असि अदित्ये रास्ता असि अ
दितिः। त्रिविंशं गृह्णातु। कृत्वा यस्ता मही उखा। मृगयामिति मृत्
मयी। योनिं अग्नये पुत्रेभ्यः प्रा अयच्छत् अदितिः। अपयाना इति। १० व संवः।
त्वा धूपयतु। गायत्रेण छंदसा। अंगिरस्वता रुद्राः त्रैलोक्येन त्रैलोक्येन त्रैलोक्ये
ना आदित्याः ज्ञा गतेना विष्ट्वैत्वा देवाः वैश्वानराः धूपयंतु आनुष्टुभेन आनु
ष्टुभेन स्यानुः स्तुभेन। छंदसा॥ अंगिरस्वता इंद्रः। तं रणे विष्टुः। त्वा धूपयतु
॥ १०॥ अदितिः त्वा देवी। विश्वदेव्यवती। विश्वदेव्यवतीति विश्वदेव्यवती। एषि

याः॥सुधस्य इति सुधजेष्ठं अगिरखेत। खनुतु। अवता। देवानां। त्वापत्नीः। देवी
विश्वदेवा वतीः। विश्वदेव वती रिति विश्वदेव वतीः। पृथिव्याः। सुधस्य इति सुध
अगिरखेत। दधुतु। दुखे। धिपणाः। अभि। दधुतो। वरुनीः। अपपयंतु। ग्नाः। पव
ता। जनयः। अछिनपत्रा। इलछिनः पत्राः। रमित्रस्या। वर्षणी धृतः। वर्षणि धृत इति
वर्षणि धृतः। अकं। देवस्य। सानुसि। धुत्रा। चित्रश्रवसममिति चित्रश्रवः। तम
॥ देव। त्वा। सविता। उत। वपुतु। सुपाणि रिति सुः पाणि। खगुरि रिति सुः अंगुलि
सुवाङ्गुरि रिति सुः वाङ्गुः। उत। शक्त्वा। अययमाना। पृथिव्या। आशाः। दिशः। आ। पृ
था। अउत्थाय। बृहती। भवः। उत। कुं। ईसू। तिष्ठ। ध्रुवा। त्वे। मित्रा। एनी। ते। पुखा। पत्नी
ददामि। अभित्ये। एका। मा। भेदि। वसवः। त्वा। आ। धृदंतु। प॥ आकृतिमियाः कृति।

अग्निं प्रयुज्मिति प्रयुजो स्वाहा मनः मेधा निमम् विज्ञानमिति विज्ञोता वाव वि
धृतिमिति विधृतिं अग्निं प्रयुज्मिति प्रयुजो स्वाहा प्रजापतयुः इति प्रजापतये।
मम वा अभये विष्णु नारायण ॥ १ ॥ विश्वो देवस्य ॥ २ ॥ मा सुभित्या ॥ मा सु रिषः ॥ अर्वा धृ
धृती र्यस्य सु अग्निः ॥ वा इदं कुरिष्ययुः ॥ ३ ॥ इह स्वादे वि पृथिवि सुसाये आसु
रा माया सुधया कृता अमि जुष्टे देवस्य ॥ इहो अस्तु हव्या अरिषा वी अन् इति
यज्ञो अस्मिन् ॥ इदं इति दुः अन्नः ॥ सु पिरो मुक्ति मिति मयिः ॥ आसुतिः नलः होता वर
यः सहसः पुत्रः अद्भुतः ॥ ५ ॥ परस्याः ॥ अधिः सुवन इति सुवनतः अवरान् अभि आ
हरायन् अहः अस्थितान् अवा ॥ ६ ॥ परमस्यः परवत् इति परा वतः रोहिदे पृथु
तिरोहितः अश्वः इह आ गति पुरीषः ॥ पुरु प्रिय इति पुरु प्रियः अग्ने त्वं नरा म

33



नमीनस्य। शुष्मिताः। प्रप्रेति प्रः प्रादात्तारं। तारिषु। कृत्तारं। धेहि। विपद इति विः
 पदे। वचुष्यदे। वचुः पद इति वचुः। पदे। विष्वक्मण इति विष्वः कर्मणे। स्वाहा॥१८॥ पुन
 निति पुनः। ला। आदित्याः रुद्राः। वसवः। स। इधुता। पुनः। ब्रह्माणाः। वसुनीयेन वसु
 नीयायुते। धृतेनां त्वे। त्वे। वधुयस्व। पयसाः। सन्तु पयजमानस्य। कामाः स्वाहा॥१९॥
 ॥॥ इति द्वादशोऽध्यायः समाप्तः॥ ॥ हरिः॥ ॐ॥ ॥ दृशानः। रुक्मः।
 उद्यो। वि। अद्योत। दुर्मर्षमिति दुः। मर्षो। आयुः। श्रियं। रुचानः। अग्निः। अमृतः। अ
 नुवृत्ता। वज्रो। सिरिति वयः। मिः। यत्ता। एनं। ध्याः। ब्रजनयता। सुरेता इति सुरेताः। ११। न ह
 न कोपासा। न कोपसेति न कोपसा। समनसेति सः। मेनसा। विरूपे इति विरूपे। रम
 धापयेते इति धापयेते। शिष्टे। एकै। समी। इति सं। ईनी। ध्यावा। सामा। रुक्मः। अ

तः। वि। भोतिदेवाः। अग्निः। धारयन्। इविणोदी इति इविणः। दाः। शवित्र्यः। रूपाणि। प्रमि
 मुं वृताकविः। पा। अमावीत। मद्रः। विपद इति विः पदे। वचुष्यदे। वचुः पद इति वचुः। प
 दे। वि। नाकम्। अग्नयः। सन्तिना। वरेण्यः। अनु। प्रयाणा। प्रयानमिति प्रः। यानम्। उपसे।
 विराजति। ३॥ सुपर्ण इति सुः। पर्णः। अक्षि। गरुत्मान्। विहृदिनि विः। वृत्ता। तो। शिरः
 । गपुत्र। वसुः। वृहदयन्तरे इति वृहन्। रयन्तरे। पक्षौ। ४। स्तोमः। आत्मा। छंदाः।
 सि। अंगोनि। यज्ञः। छपि। नामा। सामेति। तन्मः। वामदेयमिति वामः। देयः। यज्ञा। यज्ञिय
 मिति यज्ञा। यज्ञियै। पुछं। धि। ध्याः। शफाः। पा। सुपर्ण इति सुः। पर्णः। अक्षि। गरुत्मान्
 दिवो। गच्छ। खरिति खः। एन। विचोः। क्रमः। अक्षि। सुपर्णेति सुपर्णः। हा। गायन्
 मच्छंदाः। आतोह। इति दी। अनु। वि। क्रमय। अभिमातिहयमिमातिः। हा। ने। एम

मे। वयुनानि विद्यानाम्। एतानि पसाया। अविद्या। अमि। शेषी। अंतः। अस्या।
 शुक्रज्योतिरिति शुक्रः स्याति। विना हि। १६। अंतः। अग्नि। रुचा। त्वं। उरवायाः। स
 दन। स्वे। तस्याः। त्वं। हरसा। तपन्। जातवेद इति जातः वेदः। शिवः। भव। १७। शि
 वः। भूत्वा। मया। अने। अथो इत्यथो। सीद। शिवः। त्वं। शिवाः। कृत्वा। दिशः। सर्वो।
 स्यादिति। उह। आ। असुदः। १८। दिवः। पति। पृथमे। जज्ञो। अग्निः। अस्मत्।
 द्वितीयः। पर। जातवेद इति जातः वेदः। तृतीयः। अस्वित्यपः। सु। नृमणाः। नृमना
 इति नृमनाः। अजस्रः। इधानः। एने। जरते। स्वाधीरिति। सुः। आधीः। शविनाते। ६९
 अग्निः। वेधा। ज्ञाणि। विपत्ति। धामे। विभृतेति विः। भृता। पुरुषेति पुरुः। आ। विप्रः। राम
 ते। ज्ञाभा। परमे। उहा। पत्। विप्राते। उह्यं। यत्तः। आजगं धत्वाः। जगं थ॥ २॥ सु

मुदे। ला। नृमणाः। नृमना इति नृमनाः। अस्वित्यपः। सु। अंतः। नृवसा इति नृव
 साः। इधे। दिवः। अमे। रुधन्। तृतीयः। ला। एजः। स। त्स्थिता। लं। समिति। त्स्थि। स्वा
 सं। श्रयो। उपस्थ इत्युपः। स्था। मदिपाः। अवर्धन्। ३। अकंदरग्निः। ४। श्रीणां।
 उदार इत्युतः। आरः। धरुणः। रयीणां। मनीषाणां। प्रापेण इति प्रः। अपेणः। सोम गोपा इति
 सोम गोपाः। वसुः। सनुः। सहसः। अस्वित्यपः। सु। राजा। वि। भाति। अग्ने। उपसां।
 इधानः। ५। विश्वस्य। केतुः। भुवनस्य। गतेः। आ। रोदसी इति रोदसी। अ। एणात जाय
 मानः। की। लुं। चित्। अर्हि। अभिनन्। परायन्ति। निपराः। यन्। जनोः। यत्तः। अग्निः। अय
 जता। पत्नी। ६। उशिक। पावक। अरति। सुमेधा इति सुमेधाः। मर्तेषु। अग्निः। अय
 तः। नि। धावि। इयं। निर्धूमे। अरुषे। भरिभन्। उत्तः। शुकेण। शोविपा। ध्या। इनसब।

प०॥

७१॥

तवामः ध्यायथीः। अनुसूयसे। गर्भे। सना। जायसे पुनः। रिति पुनः। ॥१॥ गर्भे। अस्ति। उ
पधीना। गर्भे। वनस्यतीना। गर्भे। विश्वस्य। भूतस्य। अग्ने। गर्भे। सपो। अस्ति। दा। प्र
सद्येति प्रसद्य। भस्मना। योनि। अप। च। एधि। वी। अ। स। सज्येति संसृत्य। मोह
भिरिति माहः। भिः। ले। न्योति। भान। पुनः। आ। असदः। ॥१॥ पुनः। आसद्ये। याः। सद्य।
सदनं। अयः। वा। एधि। वी। अग्ने। शेषे। मातुः। यथा। उपस्य। इत्युपस्ये। अंतः। अस्या
शि वतं। मंड। निशि वः। तं सः। ॥१०॥ प्रनेरूज्जी। ॥११॥ सहरया। ॥१२॥ बोधा। मो। अस्या। व
चसः। य। विष्णु। म०। हिष्ठस्य। प्रभृतस्येति प्रभृतस्य। स्वधावदति। स्वधाः। वः। पीयति। ॥७१॥
तुः। अनु। त्वः। भ्राणति। वंदरुः। ने। तव। वंदे। अग्ने। ॥११॥ सः। बोधि। सूरिः। म। वेति। ॥ राम०॥
म। वा। वसुपतइति वसुपते। वसुपतुं। निति वसुपतुं। रावत। युयोधि। अस्मन्दि पां०

ध

१३

५

सि। ॥१४॥ पुनस्त्वा। ॥१५॥ अपो। इतवि। इत। वि। सपत। अतः। यो। अत्रा। स्या। पुराणाः। यो
चानृतेना। अदात। यमः। अनु। सान। नित्यं वः। सानो। एधि। याः। अक्रे। न। इमे। पितरः। को
के। अस्मे। ॥१॥ संज्ञान। मिति संज्ञानि। असि। कामधरण। मितिकामधरण। मयिते।
कामधरण। मितिकामधरण। मयात। अग्नेः। भस्म। अस्ति। अग्नेः। पुरी। पो। अस्ति।
चितः। स्या। परिचितइति परिचितः। ऊर्ध्वचितइत्यूर्ध्वचितः। मयधुं। ॥१॥ अयं।
स। अग्निः। यस्मिन्। सोम। इदं। सुतं। दधा। नृदरे। वावशानः। सहस्रिया। वाजं। अ
त्ये। न। सति। ससुवा। निति ससुवान्। सना। स्यसे। जातवेदइति जातवेदः। ॥३॥ अग्ने
भवति। दिवि। वधुः। एधि। याः। यत। नृपधी। पु। मुष्वित्युपसु। आ। युजुः। येन। अ
नरिसं। उरु। आतनेयेत्यातनेयात्वे पः। सः। भानुः। अणवः। नृवक्षाइति नृवक्षः।

१०॥

११॥

॥१॥ अग्नेः दिवः अरिः अरिः जिगासि अरिः देवान् रुचिबुधि स्याः व्योपाशो
चने परस्तावः सत्यस्यायाः वा अस्वसा वा उपनिष्ठं तद्भुपतिष्ठेने आयः ॥५॥ पु
रीयसः अग्नयः प्रवृणोमिः प्रवृणोमि रिति प्रवृणोमिः सजो र्यसु इति सुसोष
सः जुषती युज्ञो अद्भुतः अनमीवाः इषः मुहीः इको अग्नेः पुरुदह सुमि
ति पुरुदह सः सनि गोः शश्वत्तममिति शश्वत्तमे हवया नाया साधु स्या
वा नुः सुनुः सनयः विजावेति विजाः अग्नेः साते सुमु रिति सुः मुनिः भू ॥१२॥
नु अस्मिदत्यस्ये ॥ अग्नेः चित् अस्मि तया देवतया अंगिरस्वत् क्रवासी ॥१३॥ राम ॥
दा पृथिविदिनि पृथिवि अस्मि तया देवतया अंगिरस्वत् क्रवासी ॥१४॥
कोक एण छिदे एण अयो इत्ययो मीर क्रवात्वा इन्द्रा नीती द्रा नीत्या लुख

तिः अस्मिन् योने असीषदन् असीसदं नित्यसी सदन् ॥१०॥ नाः अस्य सुदहादस
इति सुदहादसः सोमो दीरुति ए अयः जन्मन् देवानो विशाः त्रिषु आ रोचने
दिवः ॥११॥ इन्द्रा विश्वाः अवी वधन् समुद्रव्यवसुमिति सुमुद्रव्यवसो गिरः रथीत
मे रथित सुमिति रथि तमे अशीनो रथिनामिति रथिः नो राजानो सत्यं दित्ति स
स प्रया वः पति पति ॥१२॥ संप्रता साकल्ये थो संप्रियो रोचिष् इति रोचिष् सुमुद्रव्य
नि मना इति सुमनस्यमानो इषो कर्जो अग्निः संवसाना इति संवसानो ॥१३॥ सोमो
मनो लसि सो व्रता सो ऊदर्यो विनामि आ अकुरा अग्ने पुरीष्य अधिपा इय
धिः पा भवा लो नः इषो कर्जो यजमानाया धुहि ॥१४॥ अग्ने त्वा पुरीष्य रथिमा
निति रथिः मान पृथिमानिति पृथिमान् अग्निः सिवाः कृत्वा दिशः सवोः स्वः

५०॥ योनिः इह आत्मा असुतः १५॥ मन्त्रेन नः १६॥ मातेव निमातः देवा पुत्रा एयि वी। पुरी
 ५१॥ अमृतिस्वो योनौ। अभाः। उरवा। नां। विश्वे। देवैः। क्रतुभिरित्युतः भिः। संविदान
 इमि संविदानः प्रजापतिरिति पुत्राः यतिः। निश्चकर्मति विश्वः केमी। विमुचतु १७।
 असुन्वेतममृयं जमानम। इच्छा। स्तेनस्य। इला। अनु। इहिनस्करस्य। अन्य। अस्म
 त्। इच्छा। साते। इला। नमः। देवि। निरुत इति निः। क्रते। तुभ्यं। अस्तु। १। नमः। सु
 ति। निरुत इति निः। क्रते। तिस्मते ज इति तिग्म। तेजः। अयस्सयम्। विवृत। बंधं १७३।
 एते। यमेन। त्वं। यम्या। संविदाने। ति संविदाना। उतम इत्युतः। तमे। नाके। उधिर। रो १८०।
 हय। एत। १२। यस्याः। ति। धोरा। आसन्न। जुलोमि। एषा। बंधानाम्। अवसज्जनायैलकु
 सज्जनाया। त्वा। जनः। भूमिः। इति। प्रमेदत इति प्रः। मेदंते। निरुतिमिति निः। चक्रंति

५२॥ अहं। परि। वेद। विश्वतः। ३॥ याते। देवी। निरुतिरिति निः। क्रतिः। व्यावयं धेया
 ५३॥ बंधं। पात्री। ग्रीवासु। अविचृत्यमित्यविचृत्यते। ति। वि। स्था। मि। आयुष्म। नाम। र
 ध्यात्। अथ। एते। पितुं। अहि। प्रसृत इति प्रः। सतः। नमः। भूयो। या। इह। वृकार। ४।
 निवेशन इति निः। वे। शनः। मगमन इति सं। गमनः। धसूनां। विश्वा। रूपा। अभि। चष्ट
 ५४॥ शमीभिः। देव इवेति देवः। इवा। सुविता। सुत्यधर्मेति सुत्यधर्मी। इह। नातस्थो। सम
 ५५॥ रह नि सं। अरो। पथीनो। ५॥ सीरा। युजति। कवयः। युगा। विनन्वते। एथकु। धीराः।
 ५६॥ देवेषु। सुस्रयेति सुस्रः। या। ६। युनक्तं। सीरा। वियुगा। तनुधुम्। कृते। योनौ। वृपता
 ५७॥ इह। बीजं। गिरा। वृ। अष्टिः। सभरा इति सभराः। असन्तः। निदीयः। इत। सृएष। प
 ५८॥ के। आ। इयात्। ७। पुने। सुफालाः। वि। कृपंतु। भूमिम्। पुने। कीनाशः। अभि। युत।

॥राम०॥

कृतांगो भज इति गोः भजः इति किल। अमुं यथा सन्वयः। पुरुषमिति पु
 रुषम्॥ यथा यथा ओषधीः समग्रमेति संऽअग्रमेत। राजानः समिता इवेति समितोः
 इवाविप्रः सः इत्युते। भिषकः रक्षो हतिरसुः हा। असीवृत्तं न इत्यसीवृत्तं नः
 । ६। अश्ववती अश्ववतीमित्यश्ववती। सोमवती। सोमवतीमित्यसोमवती। कृती
 यती। उदौ जसमित्युत्तः औजसो आ। अविस्ति। सर्वाः आषधीः। अस्मे अरिहताता
 योत्यरिहतातया। ७। उतः पृथुः आषधीनां। गावः गोहा दिवा गोस्था दिवेति गो
 स्थान् इवा इत्येते। धनैः सनिष्यतीनाम्। आत्मानं तव। पुरुषः पुरुषेति पुरुषात्। उतः
 तिः। नामावः। माता अयो इत्यथो। यूयः स्थानि कृतीः। निः कृती रिति निः कृतीः। सी
 यत विणीः कृता यता आ मयति निः कृयुः। ९। अति विव्वाहः पुरिदाः। पुरि

१७५॥
गमः॥

इति परिष्णाः स्तेन इवेति स्तेनः इवा प्रज्ञा अक्रमुः ओषधीः। प्रा अतुच्यवुः य
 तः किं चतुर्वेः। १०। यत्। इमाः। वाजयन्। अहः। ओषधीः। हस्तो आरध इ
 त्या इधो। आत्मा यस्मै स्थानस्यति। पुरा जीव गृभ इति जावः गृभः। यथा। ११। य
 म्य ओषधीः। प्रमर्षयेति प्रः सपथो अंगमेगमित्येगः अंगः। परुष्यरुः। परुः परुरि
 ति परुः। परुः। ततः। यश्म वि। वाधधे। उग्रः। मध्यमशी मिवेति मध्यमशी इव।
 १२। साकं। युष्म। प्रापत। चापेणा किं विरीविना। साकं। वातय। आज्या। साकं।
 नस्या निहा कयेति निः हाकया। १३। अन्यावः। अन्या। अवतु। अन्या। अन्यस्याः। उ
 यो अवतताः। सर्वाः। सं विद्वाना इति सं विद्वानाः। इदमे। प्रा अवतता ववेः। १४। या।
 फुर्निलिनीः। अफलाः अपुष्पाः। याः। च। पुष्पिणीः। बहस्यति प्रमृता इति बह



स्यतिः प्रसूताः। ताः। नः। मुंचतु। अ० ह० सः। १५। मुंचतु। मा। शपथ्यातः। अथोइत्य
 थोवृहण्यात। उत। अथोइत्यथो। यमस्य। पद। शात। स्वस्मात्। देवकि। त्विषादि
 तिदेवः। कि। त्विषात्। १६। अवपतीरित्यवः। यतीः। सं। अवदंत। दिवः। ओषधयः। १७।
 रित्योजीव। अश्वामहे। नासः। रिप्या। ति। पूरुषः। पुरुषइतिपुरुषः। १७। याः।
 ओषधीः। सोमरात्री। रितिसोमः। राजीः। वकीः। शतविवक्षणाइतिशतः। विवक्षणाः
 तोसा। असि। त्वं। उतमेयुतः। तमा। अरं। कामाय। शं। हुदे। १८। विष्टिताः। विष्टिता
 इतिविष्टिताः। प्रथिवी। अनु। बृहस्यतिप्रसूताइतिबृहस्यतिः। प्रसूताः। अस्ये। सं ॥ ७६ ॥
 । दत्तावीर्यम्। १९॥ याः। वा। इदे। उपपृष्टवतीत्युपः। पृष्टं। वा। च। इरं। परागताइति ॥ २० ॥
 परागताः। सवीः। सगलेतिहः। गत्यवीरुधः। अस्याः। सं। दत्तावीर्यम्। २०। नाशयित्री।

वेतासस्याअशिसः। उपविता। मितुपः। चितो। असि। अथोइत्यथो। शतस्य। यक्ष्माणां। पा
 क। गेमितिपाकः। अरोः। असि। नाशनी। २१। मा। व। रिप्या। खनिता। यस्याः। वा। अहं। खनमि
 । वः। द्विपदिनिहिः। यतः। चतुष्यतः। चतुः। पुरितिचतुः। पतः। अस्माकं। सर्वे। अस्तु। अतनु
 रं। २। ओषधयः। सं। वदन्ते। सो। मेनः। सुहारासा। यस्याः। कृणोति। ब्राह्मणः। तं। राज्ञः।
 पारयामसि। २३। त्वां। राधवीः। अखननः। त्वां। इदे। त्वां। बृहस्यतिः। त्वां। ओषधे। सोमः
 । राजा। विद्वान्। यश्मात्। अमुच्यत। २४। त्वं। उतमेयुतः। तमा। असि। ओषधे। तवः। वृहाः
 । उपस्ययः। उपसिः। अस्तु। सः। अस्माकं। यः। अस्यात्। अभिरासनी। सभिः। रासनी।
 २५। मा। मा। हिः। सीत। जनिता। यः। एयिष्याः। यः। वा। दिवं। सत्यधुमे। वि। आनदः। यः।
 का। अपः। चंद्राः। प्रथमः। जजानः। कस्यै। देवाय। हविषा। विधेम। १। अमिओ। वत



सत्यधुमे

॥२॥

॥३॥

स्व। एषि वि। यजेना। पयसा। सह। वयां। ते। अग्निः। इषितः। अरोहत्। रा। अग्ने। यतः। ते।
 पुं। कं। वंदे। पूतम्। वा। यज्ञियं। तत्। देवेभ्यः। भू। रा। मु। सि। ॥ इषं। कर्जं। अहं। इतः।
 आदं। क्रतुस्य। योनिं। महिषस्य। धारं। आ। मा। गो। पु। त्रि। शतं। आ। तृ। नृ। पु। जहा। मि। से।
 हि। अजि। रां। अमी। वां। ॥ अग्ने। न। व। ष्व। वयः। महि। वा। जते। अर्चयः। वि। भा। वु। सो। इ।
 ति। वि। भा। वं। मो। दृ। द्र। क्र। मो। इति। दृ। हत्। भा। ने। शर्वसा। वा। जं। उ। क्यं। दधा। सि। दा। शु। वं। क।
 वे। ॥ ॥ पा। वृ। क। वं। च्छी। इति। पा। वृ। कः। वं। च्छीः। ॥ शु। क्र। वं। च्छी। इति। शु। क्रः। वं। च्छीः। ॥ अन्। न। व। वी। इ। स्य
 नूनः। वं। च्छीः। उ। नृ। इ। म। वि। भा। नु। ना। पु। त्रः। मा। तरो। वि। चर। न्नि। ति। वि। चरं। नृ। उ। प। अ। वृ।
 सि। ए। ण। सि। रो। दसी। इति। रो। दसी। उ। भे। दृ। भे। ॥ कर्जं। न। पा। दा। जातवेदइति। जातवेद
 इ। मु। श। स्ति। भि। रि। ति। सु। रा। सिः। भिः। गं। दृ। स्व। धी। ति। भि। रि। ति। धी। ति। भिः। हितः। त्वे। इति। त्वे।

॥ श्री ॥

॥ ३ ॥

दधः। सं। दधुः। भूरि। वर्पसइति। भूरिः। वर्पसः। वि। चेतयइति। चित्रः। कृतयः। वामनाताइ
 ति। वामः। जाताः। ॥ ७ ॥ इर। त्य। ना। अ। नं। प्र। थय। स्व। जंतु। भि। रि। ति। जंतुः। उ। मिः। अस्मे। इत्यस्मै
 । रा। यः। अ। मर्त्यः। मः। दृ। जंतस्यः। वपुषः। वि। रा। जसि। ए। रा। सि। सा। न। सि। क्रतुः। ॥ इषु।
 नां। र्मा। अ। धर। म्यः। प्रचेतसमिति। प्रचेतसं। शयंतं। राधसः। महः। राति। वामस्य। सु
 भगमिति। सुभगां। मुही। इषं। दधा। सि। सा। न। सिं। रयिं। ॥ १ ॥ क्रतावा। नानं। क्रतवा
 नुमि। युतः। वानां। ॥ ॥ इषं। वि। श्वदं। शतमिति। विश्वदं। शतं। अग्निं। सुभा। य।
 इषि। रो। पुरः। जनां। ॥ अ। क्तं। गे। मिति। अक्तः। कर्णं। सु। प्र। धं। स। मिति। सप्रधः। नमं। त्वा।
 शि। गं। दे। व्यं। मा। नु। धा। यु। ग। ॥ १० ॥ आ। प्या। यु। स्व। सं। एनु। ते। वि। श्वतः। सो। मा। दृ। ष्यं। भव।
 वा। जस्य। सि। ग। थइति। सुः। गथे। ॥ ११ ॥ सं। ति। प। या। लं। सि। सा। ऊ। इ। दृ। यंतु। वा। जा। सं।



दध्यानि अभिमानि बाहः असि मुनि सद्गुरु इति मानिः सहः आप्यायमान इत्याः
 व्यायमानः अमृतोयः सोमादिविः प्रवाले सिः पुनः मानी सुतः तमानिः धिष्णः ॥ १२ ॥
 आः व्यायस्वामदितु मेति मदिनः तमाः सोमनिश्चिभिः अः पुमिरित्यः पुमिः
 भवः नः सप्रथममुदितिसु प्रथः तमः सखाः वृधेः ॥ १३ ॥ आतिः वृत्तः मनः पु
 मुत्तः परमत्तः चितः सुधः स्यादिति सुधः स्यात् अग्नेः त्वां कामये नि त्वां काम
 यो गिरा ॥ १४ ॥ तुसाः ताः अंगिरस्तम्यंगिरः तमविष्वाः सुहितयुदितिसुः सि
 तयः एषकः अग्नेः कामोयः यमिरे ॥ १५ ॥ अग्निः प्रियेषु धामस्विति धामः सु ॥ १६ ॥
 कामः भूतस्य भव्यस्याः संवाविति सं राट् एकः विराजन्ति ॥ १७ ॥ इति व
 दः शोध्यायः समस्तः ॥ ॥ हरिः ॥ ॥ अम् ॥ ॥ मदिगृह्णाति ॥

अग्नेः अग्निः रायः पोषायाः सुप्रजाः स्नायेति सुप्रजाः त्वायः सुयया देति सुः वीर्यायः
 मः कः इत्यं देवताः सचतो ॥ १ ॥ अयाः एष्टः ॥ २ ॥ ब्रह्मज्ज्ञानं प्रथमं पुरस्तात् दि
 सीमतः मुकुच इति सुः रुचः वेना आवरित्यावः सः बुध्याः उपमा इत्युपमाः
 ॥ ३ ॥ सुविद्याः विष्या इति विः स्थाः सतः च योनिः असतः च विविरिति वः ॥ ३ ॥ दि
 रण्यगर्भ इति दिर्गः रण्यः गर्भः सं अवर्ततः अग्नेः भूतस्य ज्ञातः पतिः एकः आ
 सीतः साहाधारः एषिवीः धोः उता इमां कस्मै देवाय हविषा विधेमाः ॥ ४ ॥ इष्टः
 चस्कः एषिवीः अनुः धोः इमे च योनिः अनुः यः चः पूर्वः समानो योनिः अनुः स
 वस्तुमिति सं चरन्तः इष्टो जुहोमि अनुः सन्ना होवाः ॥ ५ ॥ नमः अस्तु सूर्येभ्यः यि
 के च एषिवीः अनुः यो अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सूर्येभ्यः नमः ॥ ६ ॥ याः इषवः

धातुधानामिति यातुः धाना नायेवाः वनस्पतीनाः अतुयेवाः अवेदेषु शरीरतोते
 भ्यः सपेभ्यः नमः ॥ ७ ॥ ये वाः अमी इत्यमी तेषु नैः दिवः ये वाः सूर्यस्य रश्मिषु
 येषां अश्वित्पदसु सदः कृतं तेभ्यः सपेभ्यः नमः ॥ ८ ॥ कृणुष्व पाजः ॥ प्रसि
 तिमिले प्रसितिमिष्टधीयादि राजे वेति राजा इवा अमवानित्यमः वान् इमे
 नावृषीः अनुप्रसितिमिति प्रसितिः दुष्णानः अस्मा असि विध्या रक्षसः नपि
 ह्यै ॥ ९ ॥ तवाभ्रमासः आपुयेत्याप्सु यो पतति अनुस्पृश धृपता शोष्कानः ॥ १० ॥
 तपूष्पि अग्ने जुष्वा पतंगान् असंहित इत्यसंहितः विः सृज विधकृषत्का रामे
 ॥ १० ॥ प्रतिः स्वशः विः सृज नृर्णितम इति नृषीः तमः भव पायुः विशः अस्याः
 अदब्धः यः नः दूरे अघशः सदस्य घशः सः यः अति अग्नेमाकिः तेभ्य

विः आदधयता ॥ ११ ॥ उता अग्ने तिष्ठा प्रती आतनुष्वानि अभिवा न ओषतात्
 तस्महेत इति तिमस्महेते यानुः अरतिः समिधाने तिसं इधान भक्ते नीवा तं
 धृष्टि अतसं माशुक् ॥ १२ ॥ रुधः भव प्रति विध्या अधि अस्मत् आविः कृणुष्व
 देः गानि अग्ने अवः स्थिरा तनुहि धातुज्जना मिति यातुः नृनां जामि अज्यामि ॥
 प्रामृणीहि शत्रून् ॥ १३ ॥ अग्नेः स्वाते जसा सादयामि इदं स्वात्वा ओजसा साद
 यामि ॥ १४ ॥ भुक् यज्ञस्य रजसः वनेता यत्र नियु क्षिरि ति नियुतः मिः सचं स
 शिवा मिः दिवि सूक्ष्मं दधिपं स्वषोः स्वः सामिति स्वः सां जिह्वा अग्ने वरुण
 इध्रवा ह मिति हव्यः वाह ॥ १५ ॥ ध्रुवा अग्नि धरुणा आस्तु ते स्वाः स्तुता तिष्ठक
 मृणे तिष्ठि श्वः कमेणा मात्वा समुद्रः उता वधीतां मा सुपर्णे इति सुः पर्णेः अव्य



१०१ अमानासुधिवी। ६६६॥ प्रजापतिरिति प्रजापतिः। वा। सादयतु। अया। एष्टे। स
 १०२ सुष्ट्या। एमेन। व्यवेखनी। प्रयस्वती। प्रयस्व। एष्टिवी। असि। शम्। भूमिः। अदितिः
 विष्वधाया इति विष्वधायाः। विष्वस्यामुवमस्या। धुनी। एष्टिवी। अष्टा। एष्टिवी।
 ६६६ हो। एष्टिवी। मा। द्विः। सीः। ३॥ विष्वस्ये। प्राणाय। अपानायेत्यपः। आनाय। व्या
 नायेति विः। आनाय। उरुनायेत्युदः। आनाय। प्रनिधायै। प्रतिस्थाया इति प्रतिस्था
 यै। विरिधाया। अग्निः। वा। अभि। प्रातु। उद्या। स्वस्या। छदि। शतेमेनेति शंतेमेन। ८०॥
 तया। देवतया। अंगिरस्वत। कुवा। सीदु। १॥ कांटा। कांटा। इति कांटातः। कांटात। प्र
 मेद्वितीति प्रः। रोहनी। परुषः। परुष इति परुषः। परुषः। परि। एव। उः। इवे। प्रातु
 सुद्वेष्टेण। शतेन। च। पाया। शतेन। प्रतनेपीति प्रतनोः। पि। सहस्रेण। विरो

इति विः। रोहसि। तस्याः। ते। द्वेष्टि। इष्टुके। विधेयः। द्विषी। वयं। द्यायाः। अन्तास्ये।
 रुदः। दिवै। अनुचनेतीत्याः। तन्वेति। रुषि। प्रि। रिनि। रुषिः। मिः। नाभिः। नः। अथा। स
 योमिः। रुवे। जनाय। नः। कुपिते। याः। सुद्विवाः। स्वयै। रुवः। गोषु। अश्वेषु। याः। रु
 ये। ईश। श्री। इतीशनी। नाभिः। सर्वाभिः। रुवः। नः। धन्ना। बृहस्पतिः। तविरालिनि वि
 उराट्। ज्योतिः। अधारयत। स्वरालिनि सुः। राट्। ज्योतिः। अधारयत। प्रजापतिरे
 ति प्रजापतिः। वा। सादयतु। एष्टिव्याः। ज्योतिषाती। १॥ विष्वस्ये। प्राणाय। अपा
 नायेत्यपः। आनाय। व्यानायेति विः। आनाय। विष्वस्योतिः। अष्टा। अग्निः। ते। अधि
 पतिरित्यविधिः। पतिः। तया। देवतया। अंगिरस्वत। कुवा। सीदु। १०। मधुः। वा। मा
 धनः। च। वासतिको। कुरु। इत्यनू। अये। अंतः। स्तेष। त्वेतः। स्तेष। अष्टिक



मि। अग्नि। जज्ञाना। रजसः। पञ्चमाता। मृती। साहस्री। असुरस्या। माया। अग्ने। माहि
 । ६सी। परमेष्ठे। मन्त्रितिवि। श्रोमन्। ७। यः। अग्निः। अग्नेः। अधि। अजायते। शो
 ना। एधि। याः। उता। वा। दिवः। परि। येन। प्रजाइ। विप्रः। जाः। विश्वकृते। मिति। चः। कमा।
 जानो। तौ। अग्ने। हवः। परि। तौ। वृणु। कु। ८। नि। वेदे। बानां। ९। ३। मां। मा। हि। ६सीः। द्वि। पद
 मिति। द्विः। पादौ। पृथुं। सह। घ्रा। से। ति। नदं। मः। अस्मा। मे। धी। या। स्वी। यमी। नः। मयुं। पृथुं।
 मोनं। अग्ने। जु। पस्व। तेन। विन्वा। नः। तन्वः। नि। सीद। मयुं। ते। म्यु। कः। कृणु। नु। यो। द्वि
 म्यः। नो। तौ। म्यु। कः। कृणु। नु। १। एकं। शकु। मित्येकं। शकं। पृथुं। कृणु। कृदं। वा। जिनं। वा
 जिनं। सु। गोरं। आरं। एमसु। अनु। ते। दि। श। मि। वि। सा। हसुं। शत। धी। र। मिति। शतः। धी
 १। ३। सी। व्यु। च्यमानं। मिति। विः। अच्यमानं। स। गिरस्य। मध्यं। धृते। दु। कानां। अदिनि।

८३
 गम०

यो। गव्यं। ३। कृणु। यं। वरुणस्ये। नार्मि। लवः। पृथुं। द्वि। पद। मिति। द्विः। पदौ।
 चनु। पदा। लवः। पद। मिति। लवः। पदौ। प्रजा। न। मिति। प्रः। जानो। पृथुं। मा। जनित्रं।
 उष्टं। ४। अजः। हि। अग्नेः। अजे। नि। द। शो। कान्। सः। अयु। श्यन्। जनिता। रं। अग्ने। ति। नू
 दिवा। दिवतौ। अग्ने। आयु। न। तेन। रोदं। आयु। न। उ। पो। मे। ध्या। सः। शर। भा। यः। नं। यति
 म्। दा। यु। पः। वृन्। पाहि। म्यु। गु। धि। गिरः। र। दौ। तो। कं। उत। तानां। ६। अयां। त्वा। ए। मे। न
 सः। द्या। मि। ओ। मन्। भस्व। जाति। वि। अयं। न। अ। लो। वे। म्। सु। दं। सु। ति। रो। स्ये। मा। धे
 नि। लदे। ना। सध। स्य। इति। सधः। स्ये। यो। नो। पुरी। षो। पाथे। सि। गा। यत्रे। लो। त्रे। धे। मे। न। त्रे
 क्त्वे। ने। ति। त्रे। क्त्वे। ने। जा। र्गते। न। आनु। ए। मे। ना। आनु। क्त्वे। ने। द्यानुः। क्त्वे। ने। ना। पा। नु
 त्वा। छं। द्या। म्। द्या। मि। १। १। अयां। पुरः। भुवः। नस्यं। ज्ञा। णः। मो। वा। यन। इति। मो। वः



५०. अ० अधिपती० त्र्यधि० पत्नी०। सुव० नाना० ऊर्मिः० दृष्टः० अपा०। अ० सि० वि० श्व० क०
 ६०. मेति० वि० श्व० क० मा० ते० क० पि०। शु० क०। शु० वि०। प्रे० मो०। क० तु० इ० ल० न०। पा०। स० च० रि० ति० स०
 ७०. क० तु० मि० रि० ल० न०। मि०। वि० धा० मि० रि० ति० वि० धा०। मि०। दे०। दे०। व० यो० ना० धे० रि० ति०
 ८०. व० यः० ना० धे०। अ० न० य०। त्वा० वि० श्वान० रा० य०। व० सु० मि० रि० ति० व० सु० मि०। रु० द्रे०। आ० दि० त्थे०
 ९०. वि० धे०। दे०। १॥ पा०। ए०। मो०। पा० हि०। अ० पान० मि० त्थ० प०। आ० न०। त्वा० न० मि० ति० वि०। आ० म०।
 १००. च० स०। मे०। उ०। र्वा०। वि०। भा० हि०। ओ०। त्र०। मे०। त्वा०। क०। या०। २॥ अ० प०। पि०। न्वा०। ओ०। व० धी०। जि०
 ११०. त्वा०। वि० पा०। दि० ति० द्वि०। या० न०। अ० वा०। च० नु०। प्या० न०। च० नु०। पा०। दि० ति० व० नु०। पा० न०। पा० हि०। दि० वः०
 १२०. त्रि० हि०। आ०। दि० र० या०। ३॥ मू० द्रो०। व० यः०। प्र० जा० प० ति० रि० ति० प्र० जा० प० ति०। छे० दः०। स० त्र०। मे०। धे०।
 १३०. ति०। ४॥ अ० अधि० प० ति० रि० त्थ०। पि० प० ति०। वि० श्व० क० मे० ति० वि० श्व० क० मा०। प० र० मे० धी०। प० र० मे० धी०।
 १४०. १। ति० प० र० मे० धी०।

८६
रास.

[illegible]

५० दक्षिणेऽंशमा भूतिः सं राट्। प्रतीची। स्वराक्षितिः सं राट्। उदीची। अधिपतीत्य
 ५१ धिः पत्नी। अस्मि ब्रह्मतीति कृ। नभः। भेने स्यात्पार्थिवोऽपः। ऊर्जः। शारदो॥
 कुरुद्वयतू। ३। आयुः। मे। पाहि। प्राणा। अमानमियपः। आनोऽयममिति विः
 आनोऽवसुः। योत्रोऽवाचं। पिन्वः। मनः। जिन्वा। आत्मानं। पाहि। ज्योतिः। मे। य
 छा। १॥ मा। रुदः। प्रमेति प्रः मा। प्रतिमेति प्रतिः मा। अस्वीवयः। पट्टिः। उद्विक्
 ॥ २॥ ब्रह्मती। अनुष्टुप्। अनुक्तवित्तनुः। स्तुप्। विशलिति विः राट्। गायत्रीवि
 पुष्प। विस्तविति विः स्तुप्। जगती। ॥ ३॥ पृथिवी। अंतरिक्षं। द्यौः। समा। नक्ष
 रणि। राका। धमनः। रुक्मि। हिरण्यं। मे। अजा। अश्वः। छंदः। ॥ ४॥ अग्निः। दे
 वः। वातः। स्वरा। चंद्रमा। वसवः। रुद्रः। आदित्याः। मरुतः। विश्वेदेवाः। ब्रह्मस्यनिः

न
 राम

॥ ५॥ वरुणः। देवताः। मूर्त्ती। अस्मि राट्। ध्रुवा। धरुणा। धुन्वी। धरणी। आयुषे। व
 र्त्तिसं। कुष्मा। श्रमाय॥ १॥ योत्री। राट्। योत्री। यमनी। ध्रुवा। धरित्री। ॥ २॥ ऊर्जः। रय्ये। पो
 यो। त्वा। ॥ ३॥ आपः। त्रिवृ। रिति विः। वृत्। भांतः। पंचदश। इति पंचः। दशः। योमे।
 निविः। ओमा। मनुदश। इति सप्तः। दशः। धुरुताः। गुरुविः। शड्येकः। विः। शः। प्र
 तर्त्ति। रिति प्रः। तैत्ति। अष्टादश। इत्यष्टाः। दशः। तपः। नवदश। इति नवः। दशः। अमी
 पुत्रेः। अभिवृत्तइत्यभिः। वृत्तः। सविः। शडति सः। विः। शः। वचः। द्वाविः। शः। सभर
 रुदति सं। भरणः। त्रयोविः। शडति त्रयः। विः। शः। योनिः। द्वाविः। शडति चतुः।
 विः। शः। ॥ ४॥ गभीः। नवविः। शडति नवः। विः। शः। ओजः। त्रिणवः। विनवडति विः।
 संवः। क्रतुः। सुरुविः। शडत्येकः। विः। शः। प्रतिष्ठा। प्रतिस्थति। प्रतिः। स्यात्प्रय



प० वि० श० इति ननु वि० श० ब्र० अस्या वि० ए० चतुस्त्रि० श० इति ननु वि० श० ना
 के० प० वि० श० इति ननु वि० श० वि० नते इति वि० वने० अष्टा चत्वारि० श० इत्येष्टा
 चत्वारि० श० ध० चतुष्टोम० चतुस्त्रि० श० स्तोम० रा० अग्ने० भाग० अ० सि०
 शीशाया० आधिपत्यमिष्याधि० प० य० ब० ला० स्पृते० वि० वृ० दि० ति० वि० वृ० ता० स्तोम० इ०
 द० स्था० भाग० अ० सि० वि० शो० आधिपत्यमिष्याधि० प० य० य० व० न० स्पृते० पु० च० द० श० इति
 पु० च० द० श० स्तोम० रा० नृ० व० क्ष० सा० मिति नृ० व० क्ष० सा० भाग० अ० सि० धा० तु० आधि
 पत्यमिष्याधि० प० य० ज० ति० वि० स्पृते० सम० द० श० इति ननु द० श० स्तोम० मि० व० स्या० भा
 ग० अ० सि० वरु० ण० स्या० आधिपत्यमिष्याधि० प० य० दि० व० वृ० षि० वा० त० स्पृते० एक० दि
 ० श० इत्येक० वि० श० स्तोम० रा० व० स० नो० भाग० अ० सि० रु० द० रा० त० आधिपत्यमि

८८
 राम०

योधि० प० य० चतु० ष्या० नृ० चतु० नृ० इति ननु पा० त० स्पृते० चतुर्वि० श० इति ननु वि
 ० श० स्तोम० आ० दि० स्या० नो० भा० ग० अ० सि० म० रु० त० आधिपत्यमिष्याधि० प० य० रा० ग०
 स्पृते० पु० च० वि० श० इति पु० च० वि० श० स्तोम० रा० अ० दि० ने० भा० ग० अ० सि० पू० ष्या०
 आधिपत्यमिष्याधि० प० य० ओ० ज० स्पृते० वि० ए० व० वि० न० व० इति वि० न० व० स्तोम० दे० व
 स्या० स० वि० तु० भाग० अ० सि० वृ० ह० स्या० ने० आधिपत्यमिष्याधि० प० य० सु० मी० ची० दि० ता०
 स्पृते० चतुष्टोम० चतुस्त्रि० श० इति ननु स्तोम० स्तोम० रा० य० वा० नो० भाग० अ० सि० भा
 व० वा० नो० आधिपत्यमिष्याधि० प० य० पु० ज० इति पु० ज० ता० स्या० ता० चतुस्त्रि० श० इति ननु
 नृ० चत्वारि० श० स्तोम० रु० नृ० ण० म० भाग० अ० सि० वि० श्व० यो० दि० वा० नो० आधिपत्य
 मिष्याधि० प० य० भू० त० स्पृते० व० य० स्त्रि० श० इति येन वि० श० स्तोम० म० ह० स० रु

प०
७०

एकया अस्त्वत। प्रजादिति प्रजाः अधीयता। प्र
 जापतिरिति प्रजाः पतिः। अधिपतिरित्यधिः पतिः। आसीत्। निम्नमि रिति निम्नः।
 अस्त्वत। ब्रह्मा अस्त्वत। ब्रह्मणः पतिः। अधिपतिरित्यधिः पतिः। आसीत्।
 पुंस्त्वमिति पुंस्त्वमिः। अस्त्वत। भूतानि। अस्त्वत भूतानां। पतिः। अधिपति
 रित्यधिः पतिः। आसीत्। सममि रिति समः। अस्त्वत। समं कृष्य इति स
 मः कृष्यः। अस्त्वत। धाता। अधिपति रित्यधिः पतिः। आसीत्। १। नयमि
 रिति नयः। अस्त्वत। पितरः। अस्त्वत। पितरः। अधिपति रित्यधिः पतिः। आसीत्।
 एकदशमि रिति एकदशः। अस्त्वत। कुतः। अ
 स्त्वत। आर्त्तवाः। अधिपति रित्यधिः पतिः। आसीत्। नयोरदशमि रिति न

८९
राम०

योदशमिः। अस्त्वत। मासीः। अस्त्वत। संवत्सरः। अधिपतिरित्यधिः पतिः। आ
 सीत्। पुंस्त्वमिति पुंस्त्वमिः। अस्त्वत। स्वः। अस्त्वत। ईदः। अधिपति
 रित्यधिः पतिः। आसीत्। सप्तदशमि रिति सप्तदशः। अस्त्वत। ग्राह्याः। पु
 शर्वः। अस्त्वत। वृहस्पतिः। अधिपति रित्यधिः पतिः। आसीत्। ननुदशमि रिति ननु
 दशमः। अस्त्वत। सुशयोः। अस्त्वत। अहोरात्रः। अहोरात्रे। अधिपति रित्यधिः
 पतिः। आसीत्। एकविंशत्येकः। विंशत्या। अस्त्वत। एकशतं। एकशतं। एकशतं।
 ॥ पुशर्वः। अस्त्वत। वरुणः। अधिपति रित्यधिः पतिः। आसीत्। त्रयोविंशत्ये
 त्रिंशयः। विंशत्या। अस्त्वत। सुदाः। पुशर्वः। अस्त्वत। पूषा। अधिपति रित्यधिः
 पतिः। आसीत्। ॥ पंचविंशत्येति पंचविंशत्या। अस्त्वत। आरण्याः। पुरतः



प०

७०

असृजता वायुः अधिपतिरित्यधिः पतिः आसीत्। समर्विदः शब्देनिसुप्रः वि० श
 त्या असृजता वायुः अधिपतिरित्यधिः पतिः आसीत्। समर्विदः शब्देनिसुप्रः वि० श
 ३० अमुना पत्रित्यनुः म्या यना। एवा अधिपतय इत्यधिः पतयः आसदा नर्ववि०
 शब्देनिसुप्रः वि० शत्या। असृजता वनस्यतयः असृज्यत। सोमः। अधिपतिरित्य
 धिः पतिः आसीत्। एकं नि० शतेत्येकः वि० शता। असृजता प्रजादिति प्रजाः।
 असृज्यता यतोः। अयवाः। अयवाः। अधिपतय इत्यधिः पतयः आसदा नर्ववि० श
 तेति त्रयः। वि० शता असृजता भूतानि। अशास्यता प्रजापतिरिति प्रजाः पतिः। प
 रमेयी। परमेस्थीति परमेः स्थी। अधिपतिरित्यधिः पतिः आसीत्। ४॥ ॥ त रामः
 इति यच्चदशगंध्यायः समाप्तः॥ ॥ हरिः॥ ॥ ७० मु॥ ॥ अर्जुन जा

ताना। प्रानुदानः। सपत्नानि निसुः पत्नीनां प्रति। अज्ञातानां ज्ञातवेद इति ज्ञानः वेदः। सु
 दृष्ट्वा आधेनः। ब्रुहि। सुमना इति सुः मनोः। अदं लनं नवः स्यामु। शर्मनः। निर्वर्य
 इति विः वर्यः। उद्गा इत्युतः मोः॥ सह मा ज्ञातानां प्रानुदानः। सपत्नानि निसु पत्नी
 ना नृपतिः। अज्ञानां नृदः ज्ञातवेद इति ज्ञानः वेदः। अधिनुः। ब्रुहि। सुमनुस्यमान इति सुः
 मनुस्यमानः। वयः स्यामु। प्रानुदानः। सपत्नानि निसुः पत्नीनां पालुगी। सोमः।
 ओजः। इति विणमै भुतु श्वत्वारि० श इति वनुः। वत्वारि० शः। सोमः। क्वः। इति विणमै
 १२ पुनः। पुर्मै पालुसि। अशः। नामं। तांत्वा। विष्ट्वै। अभि। गणं तु। देवाः। सोमै एष्ट
 ति सोमैः एष्टा। घृतवती ति घृतः वती। इह सीद। प्रजावदिति प्रजाः वत। अस्मै इत्यु
 त्वा इति विणमै। आ। यजस्व॥ ३॥ एवः। छंदः। वरिवः। शी भूरिति शमूः भूः। परिभूरिति

प०
९९

मन्त्रिभः आच्छदित्वाऽछत्ता मन्त्रः अथर्वः धर्मिधुः समुद्रः सरितः वकुपः विकुपः
 विनिविः ककुपः काव्यः मा अंकुषः ५॥ अक्षरपङ्क्तिः रिससः पङ्क्तिः पुष्टपङ्क्तिः रि
 तिः पङ्क्तिः विहारपङ्क्तिः विस्मारपङ्क्तिः रितिविस्मारऽपङ्क्तिः सुरः भर्जः आ
 छदित्वाऽछत्ता प्रच्छदिति प्रच्छत्ता संयदिति संयत्ता विद्यदिति विद्यत्ता ६॥ हृ
 तः अथर्जः पितृयुः तुरगः निकाय इति निःकायः विवध इति विवधः गिरः ॥
 भर्जः सुलुक्त विनिःसंस्कृता अनुष्टुप् अनुक्त वित्यनुऽस्कृता ७॥ एवः वरिवः
 वयः यैवस्कृता वयः कदितिवयः कन्ता विप्यधाः विस्यधा इति विस्यधाः विशा ९९
 लमिति तिः शाखाः छदिः दुरोहणमिति दुःरोहणं तदं अंककमिलैकः अंकः छ
 दः ८॥ रश्मिनाः सुखायाः सुखं क्षिप्रं पति प्र इति नाधर्मेणाधर्मः अश्लित्यस्य

नेति

नुः इत्यादिवादिवा सुधिनं निखेधिनं अंतरिसेना अंतरिसे १॥ प्रतिधनेने
 प्रतिधना पृथिव्या पृथिवी विष्टमेने वृष्टा वृष्टिः प्रवर्तेति प्रवर्त्या अ
 दः अनुयत्यनुयागः रागी रागी १२॥ वृशिता वसुधु इति वसुधुः वसुधुः प्रक
 तेनेति प्रकृतेने आदित्यः आदित्या न तनुना रायः योषणा रायः पादो
 सुऽसपैले तिसुः संयणः अनाया अनाया ३॥ ऐलेने आधधीभिः आधधीः उतुमे
 नेत्युतुमेने तनुनिः तनुः वयोभसे तिवयुऽधसा आधीनेत्याधीतेना आ
 धीतमेत्याधीते अभिजितेस्यभिः जिनातिजसातिजः जिवा ४॥ प्रतिपदिति प्र
 तिपतः असिः प्रतिपदुति प्रतिपदेत्या अनुपदित्यनुपतः अनुपदुत्यनुप
 दः संपदिति संपतः संपदुति संपदेत्या तेजसा ५॥ त्रिवृदिति त्रिवृत् त्रिव

नदतिविः वृत्ते। प्रवदति सुः वृत्त। प्रवदति सुः वृत्ते विवदति विः वृत्त। विवदति विः
 विः वृत्ते। मवदति सुः वृत्त। मवदति सुः वृत्ते। ६। आक्रमदत्योः क्रमः। आक्रमये
 त्योः क्रमाये। संक्रमदति संः क्रमः। संक्रमयेति संः क्रमाये। उक्रमदत्योः क्रमः
 उक्रमयेत्युतः क्रमाये। उक्तीति रिः युतः। उक्तीतिः। उक्तीत्या इत्युतः। उक्तीत्या।
 अधिपतिनेत्यधिः पतिना। कुज्जा। कुज्जीवेय श्रीरितिवेषः श्रीः। सुवाय। सुवे
 जिनो। राजी। अस्मि। प्राची। दिक। वसवते। देवाः। अधिपतय इत्यधिः पतयः। २३
 अग्निः। हेतीनां। प्रतिधुर्नेति प्रतिधुर्नां॥१॥ विवदति विः वृत्त। लोमः। एयि
 व्यां। अयतु। आज्यं। उक्ता। अव्ययाये। सुभ्रातु। रयंतुर मितिरयंतुरं। सामं। प्र
 तिष्ठित्ये। प्रतिस्थित्या इति प्रतिः स्थित्ये। अंतरिस्ते। २॥ अययः। लो। प्रययः

२३
गम०

जा इति प्रययः जाः देवेषु। दिवः। मा। त्रयावुमेत्या प्रयंतु। विधुर्नेति विः धुर्नां। अयं।
 अधिपतिनेत्यधिः पतिना। सुनि। लो। संवे। संवेदना इति संः विदना। नाके। २॥ एयं। सुगं इति
 सुगं इति सुः गे। लोके। यत्तमाने। सु। सादयेतु॥३॥ विगतिरिति विः गट्। अस्मि। दसिणां
 दिक। रुद्राः। ते। देवाः। अधिपतय इत्यधिः पतयः। देवः। हेतीनां। प्रतिधुर्नेति प्रतिधुर्नां॥
 ४॥ पवदति सुः वृत्त। लो। सामं। एयि व्यां। अयतु। प्रउगां। उक्ता। अव्ययाये। सुभ्रा
 तु। वृहता। सामं। प्रतिष्ठित्ये। प्रतिस्थित्या इति प्रतिः स्थित्ये। अंतरिस्ते। २॥ अययः। लो॥
 संवातिरिति संः राट्। अस्मि। प्रतीची। दिक। आदित्याः। ते। देवाः। अधिपतय इत्यधिः पतयः
 यः। वरुणा। हेतीनां। प्रतिधुर्नेति प्रतिधुर्नां॥ ५॥ समदति सुः वृत्त। लो। सामं।
 एयि व्यां। अयतु। मरुत्तनीये। उक्ता। अव्ययाये। सुभ्रातु। वरुणा। सामं। प्रतिष्ठित्ये। ६

२४



पं० तिष्ठित्या इति प्रतिऽस्थित्यै। अंतर्तसे॥८॥ रूपयस्वा॥९॥ खगलितिसुः राट्। अस्मि।
उदीची। दिक्। मस्तः। ने। देवाः। अधिपतयुडत्यधिः पतयः। सोमः। हेतीनां। प्रतिधनेति प्र
तिऽधुना॥१०॥ एकविंशत्युडत्यधिः शः। स्वा। सोमः। एधियां। अयतु। तिर्वत्ये।
निःकैवत्यमिति निऽकैवत्ये। उक्तः। अयथायै। सन्नातु। वेराजं। सामं। प्रतिष्टित्यै।
प्रतिस्थित्या इति प्रतिऽस्थित्यै। अंतर्तसे॥११॥ रूपयस्वा॥१२॥ अधिपुलीअधिःपली
। अस्मि। वृहती। दिक्। विधेने। देवाः। अधिपतयुडत्यधिः पतयः। वृहस्यति। हेतीनां। प्र
तिधनेति प्रतिऽधुना॥१३॥ त्रिणवत्युडत्यधिः शोः। त्रिणवत्युडत्यधिः शोः। इति त्रिणवत्यु
डत्यधिः शोः। स्वा। सोमः। एधियां। अयतु। विधेने। देवाः। मस्तः। इति विधेने। देवाः। मस्तः।
उक्तः। इत्युक्त्यै। अयथायै। सन्नातु। शाकरं। वने। इति शाकरं। वने। सामं। इति सामं।

[illegible]

पृ. ०४

द्विष्यन्त्या इति विष्यन्त्या च। तस्या रथे तडतिरथः प्रोतः। असेमरयु इत्यसमः
 रथः। प्रस्त्रो वृतीति प्रस्त्रो वृती। अनुस्त्रो वृतीत्यनुस्त्रो वृती। अस्त्रसौ। व्याघ्राः। हेति
 सपः। प्रहतिरिति प्रहतिः। तेभ्यो नमः॥६॥ अयं। उतुरात्। सुयद सुरितिसंयतः
 नसुः। तस्या नादयः। अरि एने सिरित्यरि एनेमिः। विद्यावी। धृतावी। अस्त्रसौ। आपः।
 हेति। वार्तः। प्रहतिरिति प्रहतिः॥७॥ तेभ्यो नमः॥८॥ अयं। उपरि। अर्वग्विसुरित्यु
 वाक्। वसुः। तस्य। सेनजिदिति सेनः। जित्। सुपेणः। सुसेन इति सुः। सेनः। उर्वशी। एव
 विदितिरिति सुयः। विदितिः। अस्त्रसौ। अस्त्रसुते नित्यं सुस्त्रसुते न इति। विद्युदिति वि
 द्युत्। प्रहतिरिति प्रहतिः॥९॥ तेभ्यो नमः॥१०॥ अग्निः। मृही। अयं। अग्निः। सह
 म्निः। वाजस्य। शुनिनः। पतिः। मृही। कविः। रक्षणी। २॥ त्वार्मन्ता॥३॥ भुवोयु

१४
राम०

जम्॥४॥ अवोधि। अग्निः। सुमिधे तिसुः। इधा। जनानां। प्रतै। नुमिवेति धेकुः। इव।
 आ। युतीमियाः। युती। उपासै। उपसुमित्युपसौ। युक्ता इवेति युक्ताः। इव। प्राव्या। उर
 जिहाना इत्युत जिहाना। प्रा। नानवः। मिसुते। नाकं। अक्षः॥५॥ अवोचामा। कृष
 यै। मेध्यायानवः। वंहाहं। वृषभायै। वृक्षो गवैति। रा। नमसा। स्तोमं। अग्ने। दिवैवि
 तिदिविः। इव। रुक्मः। उरुयन्तु नित्यं रुक्मः। व्यचै। अत्रै॥६॥ अयमिह॥७॥ जने स्या
 गोपाः। अजनि एजाग्रे वि। अग्निः। सुदक्ष इति सुः। दक्षः। मुविताय। नयसौ। धृतप्र
 तीकुः। तिघृतः। प्रतीकः। वृहता। दिविस्पृशति दिविः। सृजा। द्युमदिति द्युः। मत्। वि।
 नाति। भुरतस्यः। अविः॥८॥ त्वा। अग्ने। अगिरसः। गुहा। हिना। अनु। अविदन्। शि
 श्रियाणां। वनेन इति वनेः। वने। सः। जायसे। म्। थ्यमानः। सहः। मरुता। ला। आहु

१०
१०५

सहस्रः पुत्राः अंगिरः १०॥ सखायः संवत्सरे चैव। इवास्तोमैवा। अग्नये विधिं षाय
 द्वितीनां कुर्जः न त्रै (सहस्रवतो) १०॥ सः सुमिति संः स्त इत्। युवसे। वृषु न। अग्ने।
 विश्वं नि। अयः आ। दुलः। पुद सं। इध्य से। सः नु। चर्य नि। आ। भुर ॥ ११॥ त्वा। अग्ने
 ह विष्म तः देव। मनो मः। दुलुतो मन्यो त्वा। ज्ञान वेद सुमिति ज्ञान वेद सं। सः
 व्या। वृक्षि। आनुय कौ १२॥ त्वा। चित्र युव सु मेति चित्र अवः तम। हवते। विसृ जंत
 वी शो वि द्रु शो। रोविः कै श मि ति शो विः कै श। पुरु प्रिये तै पुरुः प्रिया। अग्ने।
 रुव्याये। योक्त यो रौ १३॥ एना। वः। अग्निं। न न स। कुर्जः। न पातं। आ। कुर्वै प्रिये।
 नेति षे। अग्निं स्वधर मि ति सुः अ धुरा विष्व स्य। इता अग्नी १४॥ विष्व स्या इता अ
 ग्ने ते सः। योजुतं। अरुवा। विश्व मो ज्ञ से ति विश्वः मो ज्ञ सा सः। इद वत्वा स्वा कृ त इ ति सुः

९५
राम०

आहुतः ॥ १५॥ सः। इद वत्वा स्वा कृ त इ ति सुः आहुतः। मु ब्र से ति सुः ब्र लो।
 युतः। सुशमी ति सुः शमी। वरु नो। देवा रा धः। जनी नो ॥ १६॥ अग्ने। वा जे सा गो
 म न इ ति गोऽ म नः। इ शानः सह सः। य हो इ ति य हो। अस्म इ त्य स्यो। धे। हि। ज्ञात वृ
 इ ति जात वेदः। म दि। अव गै १७॥ सः। इ पा नः। व सुः। कु विः। अग्निः। इल न्यः। गि
 रा रे वत्। अस्मभ्यं। पुत्रे णी क। पुत्रे नी के ति पुरुः अनी क। ही दि हि ॥ १८॥ क्ष पः।
 गज नः। उत। त्म नी। अग्ने। व सौः। उता इ प सं। सः। नि ग्म जं भे ति नि ग्मः जं भा र स
 सः। इह। प्र ति ॥ १९॥ म द्र श नः। अग्निः। आहुत इ त्याऽ हुतः। भृ शः। गतिः। सु भु गे ति
 सुः भ म ग। भृ शः। अ धुराः। भृ शः। उता प्र श स यु इ ति प्रः श स यो ॥ २०॥ भृ शः। उता प्र श
 स यु इ ति प्रः श स यः। भृ शः। म नः। कृ णु। वृ ष त् पृ इ ति वृ ष त् पृ यो नः। सु म स्वि ति



१० सुततः सु। सासहः। सुसहइति समहः॥ ११॥ येने। सुमस्वि निसुमत्सु। सासहः।
 ९६ सुसहइति समहः। अवः। स्थिरा। तुमुहि। भुरि। शर्वतामो वनेमते। अभिष्टि। भिरि। सु
 भिष्टि। भिरि॥ २२॥ अग्निः। तामुये। यः। वसुः। अस्मोयंयंति। धुनवः। अस्मि। अवतः।
 आशवे। अस्मि। नित्यासः। वृत्तिनः। इयै। स्तोत्रभ्युइति स्तोत्रभ्यः॥ आ। भुरो॥ २३॥
 सः। अग्निः। यः। वसुः। एलो। सः। यः। अयं नीत्याः। यंति। धुनवः। सः। अवतः। रघुइवद
 तिरुघुइवदः। संसृजतासः। इति सुज्जातासः। सूर्यः। इयै। स्तोत्रभ्युइति स्तोत्रभ्यः॥ ९६
 आ। भुरो॥ २४॥ उभेइसुभे। सुश्चंद्र। सुचंद्रेति सुचंद्र। सपिबः। इर्वीइति इर्वी। श्री। गभः।
 णी। उ। आसनि। उताइत्युतो। नः। इतः। पुष्योः। उक्थे। पु। शवसः। पुते। इयै। स्तोत्र
 भ्युइति स्तोत्रभ्यः॥ आ। भुरो॥ २५॥ अग्निः। तामुये। यः। वसुः। अस्मोयंयंति। धुनवः। अस्मि। अवतः।
 सुततः सु। सासहः। सुसहइति समहः॥ ११॥ येने। सुमस्वि निसुमत्सु। सासहः।

म। तदिसुशौक्यमते। ओदः॥ २६॥ अधादि। अनेकितोः। भुदस्य। दसस्य। साधोः।
 रयीः। कृतस्य। बृहन्तः। वृभूथी॥ २७॥ एभिः। नः। अर्कः। भवानः। अर्वाडः। स्वः। नः। योनिः।
 । अर्न। विश्वेभिः। सुमनाइति सुमनाः। अर्नको॥ २८॥ अग्निः। होतारः। मये। रास्ये
 त। वसुः। सुने। महेसः। ज्ञातवैदसमिति ज्ञातवैदसमिपेन। ज्ञातवैदसमिति ज्ञात
 वैदसोयः। ऊर्ध्वी। स्वधुरइति सुअधुरः। देवगंवाच्या। कृपा। घृतस्य। हि। श्री। पुमि
 ति विः। श्री। पि। अनु। वृष्टि। शोचिपी। आनुकानस्ये। स्याः। नुकास्य। सपिबः॥ २९॥ अ
 नेलं॥ ३०॥ येने। रूपयः। तपसासत्रं। आयेन। इधोनाः। अग्निः। सः। आभरतइत्या
 भरतः। तस्मिन्। अहं। नि। इधु। नकिं। अग्निः। यो। आहुः। मनः। स्तीर्णवर्हिपमिति स्ती
 र्णवर्हिपी॥ १॥ तं। पत्नीभिः। अनु। गुहं। देवाः। पुनेः। आतमि। रि। ति। आनः। मि।

उतावाहिरैषैनाकैः गुण्यानाः सुकृतस्यैतिसुः कृतस्य। लोके। नृतीये। एते। अ
 धेरावृजे। दिवः। रा। आ। वाचः। मर्ध्या। अरुहन्। भुरं। एषु। अयं। अग्निः। सत्यतिरिति
 सन्ः। पतिः। धेर्कैता नो। एष्ट। एष्टिव्याः। निहितइतिनिः। हितः। इविद्युत ता। अधुस्य
 दं। अधुः। पदमित्यधुः। पदं। कृणुताये। एतन्ववो। ३। अयं। अग्निः। वीरतमुइति
 वीरः। तमः। वयोधाइतिवृधः। धाः। स्रुः। स्वियः। द्योतनी। अपयुष्टनित्यप्रः। युष्टन
 विभ्राजमानइतिविः। ब्राजमानः। सरिरस्य। मर्ध्या। उप। प्रायाहि। दिव्यामि। धामो। ४।
 सुप्रवधुमितिः। प्रवधुधः। उप। सुप्रयातेतिसुः। प्रयात। अग्ने। पृथः। दिव्याना
 नितिरिवः। धानना। कृणुध्वं। पुनरितिपुनः। कृण्वाना। पितरा। सुधाना। अन्वाता
 स्तीदित्यनुः। आनो। सीता। त्वयि। तनुं। एतौ। ५। ॥ उत। बुधसु। अग्ने। प्रति। ज्ञा। गृहि।

९०

राम

वंदुष्टाप्रतेइतीष्टाप्रते। सं। सुज्ञया। अयं। वो। अस्मिन्। सधस्यइतिसधः। स्ते। अधि।
 उतरस्मिन्विस्नुः। उतरस्मिन्। विस्वा। देवाः। यज्ञमानः। वृत्तोदतु। १६। ॥ येन। न। हसि।
 सहस्र। येन। अग्ने। सर्ववेदममितिः। सर्वः। वेदसंतिने। इमम्। युज्ञान। नयास्वः। देव
 दुः। मंतवो। १७। अयं। ते। द्यातपः। तपः। एष्यः। गो। शिरो। परमेष्ठी। परमेष्ठीति। परमेः। स्त्री
 । दिवः। सूर्यो। १८। लोके। दणा। १९। ता। अस्म। ३। इदं। दिव्याः। ४। प्रोयत। अश्वः। नयव
 से। अविष्यन। युदा। मरुः। सेवरणादितिः। सेवरणान्। वि। अस्यातो। आत। अस्म।
 यानः। अनु। वानि। गोविः। अधः। स्मन्तु। वृजना। कृष्णः। अस्ति। ५। आयोः। त्वा। मर्दना
 सादृयासि। अवैतः। छायायौ। समुद्रस्य। इदं। रस्मीवती। रश्मिवतीमिति। रश्मिः
 वती। भास्वती। आ। यो। द्यो। भासि। आ। एष्टिवो। आ। उरु। अंतरिक्षो। दिव्यः। ६। सह।



सस्य प्रमेति प्रमा प्रमेति प्रमा उन्मयुतः मासा हसः असि सुहृयाया
 ॥७॥ इति पाठो ध्यायः ॥ ७॥ ॥ नमः नो रुद्रा मय वै उ नो इत्यु
 नोति इयैव नमः वाङ्म्या मिदि वाङ्म्या उ नोति नमः ॥ १॥ याति रुद्रा शिवा
 तनू अधारा अयोपकाशिनीत्ययोपकाशिनी तया नः तन्वा शंतमयेति श
 स्तमया गिरिश तेति गिरिः शंता अभिः चाकशी हि ॥ २॥ यो इयुं गिरिशं तेति
 गिरिः शंत हस्तं विभर्षि अस्तं वै शिवा गिरिः तेति गिरिः वातां कुरुमा हि ७
 सीः पुरुषा जगत् ॥ ३॥ शिवेन वचसा वा गिरिशेति गिरिः शा अष्टावदामसि
 यथा नः सर्वे इत्त जगत् अयस्सो सुमना इति सुः मनो असत् ॥ ४॥ अधि अ
 वाचत अधिवक्ते लधिः वक्ता प्रथमः देव्यः भिषकू अहीन चः सर्वा न जंभ

रामः
 १७

यनः सर्वो वायातु धान्य इति यातुः धन्यः अधराचीः परा सुवा ॥ ५॥ असोः
 गात्रः अरुणः उ नो वभुः सुमंगल इति सुमंगलः ॥ ६॥ ये वा एने रुद्रा अभिः का हि
 स्ता प्रिताः सदस्वश इति सदस्वः शः अवा एयो हे लः इम दे ॥ ६॥ अ सौ यः अव
 सयेतीत्यव सयेति नील गो व इति नील श्रीवः निः गो हित इति विः लो हितः ॥ ७॥ पुता
 एने गोपाः अहश्च न अहश्च न उदहाय इत्युदहायः सः दृष्टः मुक्त्याति नः
 ॥ ७॥ नमः अस्मानील श्रीवायेति नीलः श्रीवाया सुदस्या सायने सदस्वः असाय
 सीः कुर्वे अथा इत्यथो दे अस्या सत्वा नः अहंति भ्यः अकरं नमः ॥ ८॥ प्रमुवाध
 चमः ला उभयोः आल्योः ज्योः याः स्वति वृत्ति इयैव परा ताः स्वगव इति भग
 वः विपौ ॥ ९॥ विज्यमिति विज्यं धनुः कर्पा निः विशः यु इति विः शल्यः वाणी वा



१०॥ १०॥ परि तो धनं न हति अस्मान् वृणक्तु विप्रतः अयाः यथा यः इव धि रीति ॥
 धिः न व आरः अस्मान् विप्रतः ॥ ११॥ आः तो हति माः कुप मा मीः कुप मे ति मीः कु
 १२॥ तमा हसो वम्वतो धनुः तया अस्मान् विप्रतः अयाः यथा परि भुजता ॥ अ
 वत ये स वः तया धनुः तया स ह सति स ह सः असा शतं वुध द ति शतः इव धु नि शी च
 ति निः शयः शय्या नोः पुरवा शिवानः सुमना इति सुः मनाः भवा ॥ ३॥ नमः तो आ राम
 १४॥ अ नो तताय धृष्य वो उभाभ्याः उता तो नमः वक्रुभ्या मि ति वा कुभ्या तव ॥ १२॥
 धे न्व नो ॥ १४॥ मानः मुतो पुतमानः अमका मानः उ सते उता मानः उ सितो ना
 ना वधीः पितरं गाति उः मातरं मानः त्रियाः तव रुद्रा वी ति षः रि पि ष ड ति रि रि

१०॥ १०॥ तो क तनयो आयुषि गोयुः अश्वेषु रीरिषु रि पि ष ड ति रि रि षो वी रान्
 रुद्रा नामिनः वधीः हविर्भूतः स दः इतुः हवा मुदो ॥ १६॥ हिरण्यवा हव ड ते हिर
 १७॥ बाहवे सैनान्य इति से ना न्ये दिशः च पतन्य नमः नमः वृक्षेभ्यः ह रि केशेभ्यः
 ति ह रिः केशेभ्यः पृथु नोः शश्वि जगया विभीमं तिलि वि म त ड ति वि पिः मते प
 १८॥ यीनोः रु रि केशेभ्यः ति ह रिः केशाया उ प दी ति न ड रुद्रः वी ति नोः पुला नो ॥ १९॥ वः कुश
 २०॥ आ न्या धि न ड त्याः न्या धि नो अना ना भव स्य हय जगता रुद्राय आ न ता यिन
 स्या ननः अयि नेः क्षेत्राणाः सूता पो अ न न वना नो ॥ २१॥ गे हि ता या रूप त यो वृक्षा
 २२॥ गो भु वं त य वा सि व स्कु ता यो वा रि क रु ता ये ति रि वि वः रु ता य ओ ष धी नो मे वि ण
 २३॥ य णि जा या क क्षा णो बु व्ने वः वा ये लु च्चेः श्री या या आ क र व न

इत्याः कंदयं तेः पुत्रीनां ॥ ३ ॥ कृत्वा यथायेति कृत्स्नः आयुताया धावते। सत्वेना
 । स ह्यमानाया निष्ठाधिपुत्र इति निष्ठाधिने। आध्याधिनीनामित्याः आध्याधिनीनां
 कुभाय निष्ठाधिने। स्तनानां निष्ठाधिने। वरवोः पतिवरायेति पतिः वरायां म
 र्यानां ॥ ४ ॥ वचने। पतिवचन इति पतिः वचने। स्नायुना निष्ठाधिने। इषुधिमत्
 इतीषुधिमते। तस्कराणां स्कायिभ्य इति स्कायिभ्यः। क्षिपांश्च स इति क्षि
 पांश्च सत्। भ्यः। मुल्लतां अलिम इति लसिमत्। नक्तं चरे इति चरः। भ्यः। वि रम
 कता नमिति निष्ठाध्याधिनीनां ॥ ५ ॥ उह्नीयिणां गिरिवरायेति गिरिः वरायां कुलुचानां ॥ १००
 इषुम इतीषुमत्। भ्यः। धन्यायिभ्य इति धन्यायिभ्यः। चायः। आतन्वानेभ्य इ
 त्यान्तन्वानेभ्यः। प्रतिदधानेभ्य इति प्रतिदधानेभ्यः। आयच्छ इति आयच्छत्।

अस्य गारस्येत्यभ्यः ॥ १०

१। विस्त्रज्य इति विस्त्रज्यत्। भ्यः। विध्य इति विध्यत्।
 भ्यः। स्वप्न इति स्वप्नत्। भ्यः। जाग्र इति जाग्रत्। भ्यः। ग्रायतेभ्यः। आसीनेभ्यः।
 ण्य इति निष्ठत्। भ्यः। धाव इति धावत्। भ्यः। आसनाभ्यः। सभापतिभ्य इति स
 भापतिभ्यः। अश्वेभ्यः। अश्वयतिभ्य इति अश्वयतिभ्यः। भ्यः। आध्याधिनीभ्य इति आ
 ध्याधिनीभ्यः। विविध्यतेभ्य इति विविध्यतेभ्यः। उगणाभ्यः। उहनीभ्यः।
 गलाभ्यः। गागपतिभ्य इति गागपतिभ्यः। व्रातेभ्यः। व्रातपतिभ्य इति व्रातपतिभ्यः।
 भ्यः। गृसेभ्यः। गृसपतिभ्य इति गृसपतिभ्यः। विरूपेभ्य इति विरूपेभ्यः। विश्व
 रूपेभ्य इति विश्वरूपेभ्यः। ॥ ४ ॥ सेनाभ्यः। सेनापतिभ्य इति सेनापतिभ्यः। रथिभ्य इ
 ति रथिभ्यः। अरथेभ्यः। सृभ्य इति सृभ्यः। संयतिभ्य इति संयतिभ्यः।

मह इति महत्स्यः अन्ते भ्यः ॥ ५ ॥ तस्य इति तस्यः भ्यः रथकारे भ्य इति र
 थकारे भ्यः कुलोत्ते भ्यः कुमारे भ्यः निपाते निपादे भ्य इति निः सादे भ्यः ॥ ६ ॥
 जिष्टे भ्यः निभ्य इति निभ्यः ॥ ७ ॥ मृगयुभ्य इति मृगयुः भ्यः ॥ ८ ॥ श्वभ्य इति श्वः भ्यः
 श्वपतिभ्य इति श्वपतिः भ्यः ॥ ९ ॥ भवाय रुद्राय शवाय पशुपतये इति पशुः पतये
 नीले ग्रीवायेति नीलः ग्रीवाय शितिकं रायेति शितिः कं राया शः कपदिनेः श्रुम
 के रायेति श्रुमः कं राया सहस्राशयेति सहस्रः अश्वाय शतधन्वने इति शतः
 धन्वने निशियायेति निशिः शयाय शिपिषिषायेति शिपिः विषाय मीः कुट्टना ॥ १० ॥
 यः माः कुस्मायेति मीः कुः तमाया इषुमत्त इतीषुः मते ॥ ११ ॥ कृत्वाय वामनाय
 हृत्वा वक्त्राय स हृत्वा यस्व हृत्वा इति सः हृत्वा अय्याया प्रय्याया ॥ १२ ॥ आशवे

अतिराया शीघ्राया शीघ्राया कर्म्याया अवस्थानायेत्यवः स्तन्यायानादेयाया
 दीप्याया ॥ १३ ॥ ज्येष्ठाया कनिष्ठाया दूर्वाजायेति दूर्वाजाया अपरजायेत्यपरजाया
 मध्यमाया अथ गज्रायेत्यथ गज्राया जघन्याया बुध्याया ॥ १४ ॥ सोम्याया नितिस
 यायेति प्रतिः सुवीर्यायाम्नाया संम्याया आक्याया अवस्थानायेत्यवः स्तान्या
 या कुर्वेयाया स्वस्व्याया ॥ १५ ॥ वन्याया दह्याया अवायायेति प्रतिः अवा
 या आशुषेणाया आशुसेनायेत्याशुः सेनाया आशुरथायेत्याशुः रथाया श
 राया अवभेदिन इत्यवभेदिनः ॥ १६ ॥ विस्मिनोः कृत्वन्मिनोः वस्मिन्मिनोः वस्मिन्मिनोः वस्मिन्मिनोः वस्मिन्मिनोः
 याः कृतसेनायेति कृतः सेनाया इड्ड्याया तिहून्यायेत्याः हून्याया ॥ १७ ॥ ध्रु
 तर्वा प्रमुखायेति प्रः मुखाया निपणिणोः इषुधिमेत इतीषुधिः मते ॥ १८ ॥ स्तं

॥१॥ तितीक्षाः इयवे आयुषि नो स्वायुधयेति सुः आयुधायः सुधन्वन् इति सुः धन्व
 ॥२॥ तितीक्षाः सुखायः पथ्यायः काद्यायः नीप्यायः कुप्यायः सुरस्यायः नादयः र्वेशना
 ॥३॥ रूपायः अवधायः इन्द्रायः आतप्यायः तुष्यायः मेध्यायः विदुष्यायः विदितिः
 ॥४॥ दुस्त्यायः वप्यायः अवप्यायः ॥५॥ वास्यारिष्यायः वास्तव्यायः वास्तपः सैवेति
 वास्तः पायः सोमायः रुद्रायः तादायः अरुणायः ॥६॥ शंगव इति शंः गवैः पशु
 पतय इति पशुः पतयः उत्रायः भीमायः अत्रैव धायः तयः वधायः इरैव धायः
 तिहरेः वधायः हरेः हनीयसे ॥७॥ वृक्षभ्यः हरिकेशभ्य इति हरिः केशभ्यः ॥ गम
 तारायः शंभ इति शंभः भयो भव इति भयः भयः शंकरायः शंकेरायः ॥८॥
 मयस्कः रायः मयः करायेति मयः करायः हिशिवायः शिवतः रायेति शिवः तराय

॥९॥ पायायः अवायायः प्रतप्यायेति प्रः तरणायः उत्तरणायः सुतः तरणायः
 तीर्थ्यायः रुद्र्यायः रुष्यायः केत्यायः ॥१०॥ तिकः आयाः प्रवात्यायेति प्रः वात्यायः
 किङ्किलायः सुदणायः कपदिनोः पुलकितैः इति एयः प्रपथ्यायेति प्रः प
 थ्यायः ॥११॥ ब्रज्यायः गोक्षयः गोस्थ्यायेति गोः स्थ्यायः नत्प्यायः गोस्थ्यायः क्र
 द्यायः निवेष्यायेति निः वेष्प्यायः काद्यायः गङ्गरेष्यायः गङ्गरेस्थ्यायेति गङ्ग
 रेः स्थ्यायः ॥१२॥ शुक्ल्यायः हरित्यायः पाः सव्यारिजस्यायः लोप्यायः उलप्या
 यः ऊर्वायः स्रव्यायेति सुः ऊर्वायः ॥१३॥ पलीयः पलोः शदायेति पलीः शदायः उ
 दुरमाणायेत्युतः गुरमाणायः अभिघ्नतः अभिघ्नतः आखिदतः इत्याः खिदने
 अखिदतः इति प्रः खिदनेः इत्युक्तेः अदतीः पुकृतः भ्यः धनुः कृष्याः धनुः कृष्यः



॥१०३॥

निधुनुः कृतः भ्यः॥ वावः किं के भ्यः देवानां॥ इदयेभ्यः विचिन्वत्केभ्य इति
 निःचिन्वत्केभ्यः॥ विस्मिन्केभ्य इति विस्मिन्केभ्यः॥ आनिनेभ्य इत्यानिः इते
 भ्यः॥ ५॥ द्रापो अंधसः पते॥ दृष्टिः नीललोहितेति नीललोहितो आसो प्रजाना
 मिति प्रजानां॥ एकां पशूनां माभः मो इति मो॥ रोक्मो इति मो॥ च॥ नः किं च
 नु आममनो॥ १॥ इमाः रुद्राया नवसे॥ कपर्दिने क्षियदीराय तिस्रान्तस्वीराया
 प्राभ रामदा मती॥ यथा॥ श॥ असन्॥ द्विपद इति द्विपदे॥ चतुष्पदे॥ चतुः २०३
 इति चतुःपदे॥ विष्णुः पुष्टो गामो अस्मिन्॥ अनातुरा॥ २॥ याते रुद्रा शिवा ननु॥ ॥ रामः
 शिवा विष्वाही भेषजी शिवा कृतस्य॥ भेषजी॥ नयानुगमूला जीवसो॥ ३॥ यती नुः
 हुतिः॥ रुद्रस्य॥ ह्यज्या न॥ पति॥ तेषस्य॥ दुर्मतिरिति दुःमतिः॥ महीगता अर्वाभ्य

२०३

॥ रामः

६३

रामः वैद्यवैद्य इति सुवतः भ्यः॥ ननु घा॥ मीढः॥ तोकाया तनेयाया मूलो॥ ४॥ मीलु
 ति॥ एमामीलुस्तमे मीलुः॥ तमा शिवतमेति शिवतमा शिवः॥ ननु मनो इति सुमनी॥
 नवोपरमे॥ इहो आयुधं निधायेति निधाये॥ रुतौ वसानः॥ आचर॥ पिनकां विभ्र
 ता आगृही॥ ५॥ विर्कित इति विर्किरिद्रा विर्कोहितेति विर्कोहितानमः॥ तो अस्त
 भगव इति भगवो॥ याः॥ तो सहस्रं॥ रुतयः॥ अन्ये॥ असन्॥ निवपुनताः॥ ६॥ सह
 स्रति॥ सहस्रश इति सहस्रः॥ शः॥ बाकाः॥ तथ॥ तासो॥ इशानः॥ भगव इति भगवः ॥ तथः॥
 पुराचीना मुखा॥ हृ॥ धि॥ ७॥ असंख्यातेत्यसंख्याता सहस्राणि॥ यो रुद्रा अधिभू
 म्यतिषां॥ सहस्रयोजन इति सहस्रयोजने॥ अर्वा॥ धन्वनि॥ तन्मसि॥ ८॥ अस्मिन् सु
 हुति॥ अर्णवा॥ अंतरिक्षसया॥ अधिरे॥ नीलं ग्रीवा इति नीलं ग्रीवाः॥ शितिर्वदा



[illegible]

॥ राम ॥
॥ ७५ ॥

नृषदे॥ नृसदइति नृसदे॥ वेद्वा॥ अमुषदे॥ अमुसदइ अमुसदे॥ बर्हिषदे॥ बर्हिसदइति बर्हिषदे॥ वनसदइति वनसदे॥ स्वर्षिदइति स्वर्षिदे॥ वेद्वा॥ वेद्वाये॥ देवा॥ देवानामा॥ यज्ञिया॥ यज्ञियां॥ वा॥ संवत्सरी॥ सं॥ उपा॥ भागम्॥ आसिते॥ अहु॥ तादइ च्यहुत॥ अद॥ हविषा॥ यज्ञे॥ अस्मिन्॥ स्वय॥ मा॥ पिबन्तु॥ मधु॥ न॥ धृतस्य॥ १३॥ ये॥ देवा॥ देवेषु॥ अधि॥ देवत्तमिति देव॥ सं॥ ३॥ अथ॥ नृयो॥ ब्रह्मणः॥ पुर॥ एतारइति पुरः॥ एतारः॥ अस्यायेभ्यः॥ न॥ ऋते॥ पवन्ते॥ धामा॥ किमा॥ चून॥ नाति॥ दि॥ धा॥ ना॥ एयि॥ ॥ अधि॥ सु॥ १४॥ प्राणइति प्राणः॥ दा॥ अपानइति अपानः॥ दा॥ यानइति यानः॥ दा॥ वचो॥ दाइति वचः॥ दा॥ वरि॥ वो॥ दाइति वरि॥ वः॥ दा॥ अन्यान्ते॥ अ॥ स्मत्त॥ नृप॥ तु॥ हेतयः॥ पा॥ वेकः॥ अस्मभ्या॥ शिवः॥ भ॥ १५॥ अग्निः॥ ति॥ मि॥ न॥ सो॥ चि॥ षा॥ या॥ सत्ता॥ वि॥ श्वः॥ नि॥ अ॥ त्रि॥ शम्॥ अ॥ग्निः॥ न॥ व॥ नृ॥ ते॥ र॥ यि॥ म॥ १६॥ यः॥ इ॥ मा॥ वि॥ श्वा॥ भु॥ व॥ न॥ नि॥



पु. २५
पृ. ६६

अकं तां ऋषिः। होता। नि। असीदत्। पिता। नः। सा। आशिषेयः। शिषा। इविणम्। इहमानः। एषम्
 च। दि। नि। प्रथमः। छत्ता। अवराणा। आ। वि। वे। शः। ॥ २ ॥ किम्। स्वित्ता। असीत्। अचि। होता। अधिस्था
 ॥ ३ ॥ आरंभणमित्या। रंभरां। कनमत्ता। स्वित्ता। कथा। आसीत्। पते। भूमिम्। जनयन्। वि
 च। कर्म। नि। वि। श्वः। कर्मा। वि। द्या। और्लोत्। महिना। वि। श्वः। चक्षुः। इति। वि। श्वः। चक्षुः। ॥ ३ ॥ वि। श्वः
 तः। धुरि। ति। वि। श्वः। तः। चक्षुः। ॥ ५ ॥ ता। वि। श्वः। तो। मुखः। इति। वि। श्वः। तः। मुखः। वि। श्वः। तो। बाहु। रि। ति
 वि। श्वः। तः। बाहुः। ॥ ५ ॥ ता। वि। श्वः। तः। स्यात्। वि। श्वः। तः। पादि। ति। वि। श्वः। तः। पात्। सप्तः। बाहुभ्यामिति
 बाहुः। ॥ ५ ॥ धर्म। ति। सप्तः। पत्तत्रैः। द्यावाभूमी। इति। द्यावाभूमी। जनयन्। देवः। एकः।
 ॥ ४ ॥ किम्। स्वित्ता। वनम्। कः। दुः। इह। सः। वृक्षः। आसायते। द्यावां पृथिवी। इति। द्यावां पृ
 थिवी। नि। पृथक्। नि। सप्त। धुरि। ति। निः। तत्तक्षुः। म। वि। णः। मनसा। एहत्ता। इत्ता। दुः। इत्ये।

पु. २५
पृ. ६६

तत्पते। अथ्यतेषु। दि। त्यधिः। अतिष्ठत्। भुवनानि। धारयन्। ॥ ५ ॥ पाति। धामोनि। परमाणि।
 पा। तवमाया। मध्यमा। वि। श्वः। कर्म। नि। ति। वि। श्वः। कर्मन्। उता। इमा। शिशा। सखि। यइति। सखिः।
 भा। हविषि। स्वधावइति। स्वधाः। वा। स्वयो। यजस्वा। तन्म। रुधा। नः। ॥ ६ ॥ वाचस्पतिः। ॥ ७ ॥ वि
 श्वकर्मन्। हविषा। ॥ ८ ॥ वि। श्वः। कर्मन्। हविषा। वर्धने। नः। ॥ ९ ॥ चक्षुषः। पिता। मनसा। हि। धी
 रः। धृतेम्। एते। इत्येने। अजनता। नम्रमाने। इति। नम्रमानो। यदा। इत्ता। अंताः। अददहन्त।
 पूर्वा। आत्ता। इत्ता। द्यावां पृथिवी। इति। द्यावां पृथिवी। अपश्येताम्। ॥ १० ॥ वि। श्वः। कर्म। नि। वि। श्वः। कर्म
 मा। विमन्ना। इति। वि। श्वः। मेना। आत्ता। विहाय। इति। वि। श्वः। हायाः। धाता। विधातेति। वि। श्वः। धाता। पर
 मा। उता। सृष्टि। ति। से। इह। कृतेषाम। इष्टानि। सप्त। इष्टा। मदंति। यत्र। सप्त। कृषीनि। ति। सप्त। कृ
 षीन्। परः। एकम्। आहुः। ॥ ११ ॥ यः। नः। पिता। जनिता। यः। विधातेति। वि। श्वः। धाता। धामोनि।



पुद्गल
१०७

वेद। भुवनानि विस्वा। यदिवानां। नातिधाइति नाम। धा। एकः। एवा। तमासं प्रश्नमिति सं। प्र
 सं। भुवनानि। यति। अन्वा। ३॥ तौ। आ। अयं जेता। इविता। सं। अस्मा। कषयः। पूर्व। जरिता
 ॥ ना। भूना। असूनी। सूनी। रजसि। निषुत्ते। निसन्नइति निः। सत्तोया। भूतानि। समकृण्व
 न्नितिसु। अकृण्वन्। इमा निः। ४॥ पशु। दिवा। परः। एना। एधिवा। परः। देवेभिः। असुरैः
 ॥ यत्र। अस्ति। कस्वित्। गर्भमा। षयम्। इधो। आपः। यत्र। देवाः। समपश्येतेति सं। अ
 पश्येता। पूर्व। ५॥ तमा। इत्ता। गर्भमा। षयम्। इधो। आपः। यत्र। देवाः। समपश्येतेति सं।
 आगच्छता। विचि। अजघ्या। नामो। अधि। एकम्। अविं तमा। यस्मिन्। विस्वानि। भुवनानि।
 ॥ तस्यु। ६॥ नाते। विस्थाया। इमा। जुजाना। अस्यत्। युष्माकं। अंतरमा। बभूवानी। हरणं।
 आवृताः। जलया। च। असुत्। पश्यसु। तपः। उन्मथशसः। उक्थशसइत्युक्थशसः।

११११
११०७

नरति। ७॥ यि च कर्मेति विस्वकर्मा। हि। अजनिष्ठा। देवाः। आत्ता। इत्ता। गर्धर्वः। अमवत्। द्वितीयः। तृती
 या। तृता। जनिता। ओषधीना। अणाम्। गर्भमा। वि। अदधात्। पुरुतेति पुरः। ८॥ आशु। शिगानः। वृष
 भः। नाभीमा। घना। घनः। होमं। ९॥ वर्षणी। नामा। संकंदनइति सं। कंदनः। अतिमिषइत्यतिमिषः।
 एकवीरइत्येकवीरः। शतं। सेना। अजयत्। साकम्। इदः। १०॥ संकंदनेनेति सं। कंदनः। अतिमिष
 रेत्यतिमिषेणा। जिष्णुना। युन्करिरेति युत्। करिणा। दुश्च्यवनेनेति दुः। च्यवनेना। धृष्णुना।
 तत्। इद्रेणा। जयत्। तत्। सहधम्। युधः। नरः। इधुहस्तेनेतीधुः। हस्तेना। यः। ११॥ शासा। इधुह
 स्तेरितीधुः। हस्तेः। सः। निषंगमिरिति निषंगमिः। वही। सः। एति सं। स्तथा। सः। युधः। इदः।
 गगोना। सः। सृजिति सः। सृजित्। सोमपाइति सोमपाः। बाहुश। धीति बाहुः। धी। डन
 धनेत्यमधन्वा। पतिहि। मारि। रिनिपतिः। हितामिः। अस्मा। ३॥ बृहस्पते। परि। दीयारयेना



पद १०
म-८३

रक्षाहेतिरसः हा। अमित्रा च। अपवाधमानइत्यपः बाधमानः। प्रभंजनिनिषः भंजनी सेनाः। प्रमण
इति प्रमणः। युधाजयन्। अस्माकं मा एधि। अवि तारथानाम्॥४॥ बलविशयइति बलवि
ज्ञायः स्थविरः। प्रवीरइति प्रवीरः। सहस्वान्। वाजी। सहमानः। उमः। अमि वीरइत्यमि वी
रः। अमि सत्वेत्यमि सत्वा। सहाजाइति सहः। जाः। जेनमाइंद्र। रथः। आतिष्ठा गोविदिति गोविता।
॥५॥ गोत्रमिदमिति गोत्रः। मिदमगोविदमिति गोविदम्। नञ्बाहुमिति वज्रः। बाहुम्। जयंते।
अस्मा प्रमणं तेमिति प्रमणं नमः। अजंसा। इमः। सजाताइति सजाताः। अनु। वीरयध्यमाइ
ंद्रमासखायः। अनु। सारभध्वो॥६॥ अमि मित्राणि। सहस्वान्। सहमानः। अद्यः। वीरः। शनमन्युरि
ति शतः। मन्त्रः। इन्द्रः। दुश्च वनइति दुश्च वनः। एतन्नापाइ। अयुध्याः। अस्माकं सेनाः। अवे
तः। पायुस्त्विति युत्सु। ॥७॥ इन्द्रः। आसाम्। नेता। बहू। स्थितिः। दक्षिणा। यत्तः। पुरः। एतु। सा

नरमग
म-८४

मादेव सेनानामिति देवः सेनानाम्। अजि भंजनीनामित्यजि भंजनीनाः। जयंतीनाम्। मरुतः।
५। अनु। अमः॥८॥ इन्द्रः। वरुणः। वरुणस्या एतः। आदित्यानाम्। मरुती। शर्धः। उममा मृता
मनसमिति मरुतः। मनसाम्। भुवनस्य बानामिति भुवनस्य बानाः। घोषः। देवानाम्। जयंता
म। एतः। अस्मात्॥९॥ उत। हर्षयुः। मघवन्ति मघवन्। आयुधानि। उत। सत्वंनाम्। मामका
नाम्। मनीषिणि। उत। दृत्रहन्ति दृत्रहन्। वाजिनाम्। वाजिनि। उत। रथानाम्। जयं
ताम्। यन्तु। घोषाः॥१०॥ अस्माकम्। इन्द्रः। समृत्तेष्विति समृत्तेषु॥ ध्वजेषु। अस्माकम्।
याः। इषवः। ताः। जयंतु। अस्माकम्। वीर्यः। उत्तरइत्युत्तरः। भवेतु। अस्मान्। उइत्युद
वाः। अवन्तः। हवेषु॥११॥ अमीषाम्। चिन्म। एतिलेभयंतीति एतिलेभयंती। ग्राह्य
। अगानि। अत्रे। पणइति। अमि। पाइति। निः। दह। हस्विनिहन्तु। शोकैः। अयेन।



अमित्राः तमसा सचेतामाणाः अवसरे यवः सृष्टाः पराः पतारं यो ब्रह्मसंज्ञित इति
 ब्रह्मसंज्ञितो गच्छ अमित्रान् प्राप्य स्वामा कुमीषामां च नाउत्त विषाः ॥ १३ ॥ प्राप्य
 ता जयता नरः ॥ इन्द्रः शमी यक्ष तुष्टमाः वः सुता बाहवः ॥ अनाधृष्याः यथाः असे
 याः ॥ १४ ॥ असायाः सनां मरुतः परेषां अमित्राणां एतानां उज्ज्वलां स्पष्टं मानां तामा गृह
 ता तमसा अपत्रति नेत्यपः ॥ व्रतेन यथाः कुमीद्वयमीः अयः ॥ अयः ॥ ना जानना ॥ १५ ॥
 यत्रा बाणाः संपते तीक्ष्णः पतंति कुमाराः विविधा इवेति विविधाः ॥ इवां तत्ता नः ॥ इन्द्रः
 ॥ बृहस्पतिः ॥ अदितिः ॥ शमी यक्ष तुष्टमाः शमी यक्ष तुष्टमाः ॥ १६ ॥ ममीयि ति वमीयणां द्या
 दमामि सिमे ॥ ताराणां अमृतेनो अमु वस्त्रा मां रणे ॥ वरीयाः वरणाः ॥ तो रुणा तुज
 ॥ तमां त्वा अतो देवाः ॥ मदेतु ॥ १७ ॥ उत्ता एना उत्तरमि लं नः ॥ तृणमा नया अतिष्ट

मममम

१५-६४

तेनाः अहतेत्याहुताः एयः पोषेण सा सृजाष जयेतिषः जयाः च ॥ बहुमा रुचिः ॥ १८ ॥ इन्द्रोः प्रतर्णमि
 विपतर्णमा नया सजातामिति सृजातामां असत्ता वशी ॥ सम एनमा वरीयाः सृजादेवा
 नामा गच्छति ॥ १९ ॥ अस्तना ॥ २० ॥ यथो कुमीः ॥ २१ ॥ हविः तम अमो वर्धया तमो तस्मिं
 नाः अर्धो ब्रह्मना अयमा च ब्रह्मणाः पतिः ॥ २२ ॥ उदुत्याः ॥ २३ ॥ पंचादिशः देवी यक्षमा अवेतु ॥
 देवीः अपां अमृतीमा दुर्मृतिमिति दुःमृतिमा बाधमानाः एयः पोषे यक्षपतिमिति यक्षः पतिः ॥
 अमजं तीरित्याः मजं तीः एयः पोषे अर्धो गताः अणानां ॥ २४ ॥ समिद्धं तिस्रः इन्द्रो अना अवि
 ॥ मामहानः ॥ ममहान इति ममहानः ॥ उक्थ पत्र इ लं क्यः पत्रः ॥ इन्द्रो गमीतः ॥ तृणमा धर्ममा
 परिगृह्येति परिगृह्यो अयजेता उज्ज्वला यता यहा अयजेता देवाः ॥ २५ ॥ देवाया धर्मो ज्ञाष्ट
 ॥ देव श्रीरिति देवः श्रीः श्रीमणाः श्रीमना इति श्रीः मनाः ॥ कृतपया इति कृतः पयाः परिगृ



नाकं लोपेष्टात्स्वः स्याति । अणमू॥ ३॥ स्वं यंतः न । अपाई संते । आद्या । एह निरेद सी इति
रोद सी युक्ता यो विष्वतो धार मिति विष्वजो धार । सुविश्वसु रति सुर्विद्यस्स । वितेति ररति
चित्तेति रे ॥ ४॥ अतिपाइ हि । पुथुमा देव्युतामिति देव्युती । चक्षुः दिवानाम् । उतामसी
नाम् । इयं क्षमाणः । ममुभिरिति ममुभिः । सृजिषाडिति सृजोषां । स्वयं तु । यजेमाना ।
स्वस्ति ॥ ५॥ नाक्रौषासा समनसा ॥ ६॥ अने । सह स्वा क्षेत्रे सह स्वा । अश्वा । रात्रमूर्द्धनि शत
पूर्ध्वना । शतमाति । प्राणाः सह स्वा । यात्रा इति विश्रानां तमा सह स्वा । गये । ईशिषा । त
सो ज्ञा विधेम । वाजाया स्वाहा ॥ ७॥ सुपर्णे इति सुपर्णा । अस्थिगुरुत्वात् । पृष्ठे । पृथिव्याः सी
मासा । अंतरिक्षमा । आपृणा । ज्यानिषादिब्रम् । उता । सुभा । ना ते जसादिर्गा । उता । दृष्ट्वा ।
आजुकां न इत्या । आजुकां नः । सुषती कडिति सुषतीका । पुरस्तात् । अनि । खे । योनिं मा । ओमी

[illegible]

५३३५
३१३५

कतमिति स्वाहाः कतो वृषभः वृष्टिः हयमोः सप्तमः सप्तमः मधुमनिमधुः मानः उतः
 आरतः उपाः अष्टमः सोः अमृतत्वमिः सप्तमः सप्तमः आनृष्टः दृतस्यः नामोः मुष्टः मायनः
 अस्मिः जिह्वाः देवताः अमृतस्यः नामिः ॥३॥ वयः नामोः पात्राः वयः दृतस्यः अस्मिनाः यः
 होधारः यामः नामोः सिरिनिमः मिः उपाः वृष्टिः शृणवतः शृणवतः चतुः शृणवतिच
 तुः शृणवः अमृतामोः एतत्तः ॥४॥ चत्वारिः शृणः वयः अस्मिः पायः देवतिदेः शीर्षः इति
 शीर्षः सप्तमः हस्तः सः अस्मिः त्रिधाः बद्धः वृषभः ऐरवीतिमहः देवः मर्त्यः नाः आश्रितः ॥
 ॥५॥ त्रिधाः हितः पण्डितः सिरिनिपण्डितः मिः मुसमोः नाः गविः देवताः दृतमः अमृतः अविः
 दनः इन्द्रः एकमास्यः एकः अजानावेनातः एकः स्वधयोनिः तत्तुः ॥६॥ एतः

५१३५
०५१३५

अर्षतिः ह्योतः सप्तमः शतवज्रा इति शतः वृष्टिः अविः पुण्डितः नाः अवचक्षः त्ववः चक्षे
 दृतस्यः धारः अमिः चाकरीतिः हिरण्यः वेतनः मध्यः आश्रितः एतः अर्षतिः उर्मयः
 दृतस्यः मृगः वेतिमृगः इवः शृणवः इष्टमनाः ॥६॥ सिरिनिपण्डितः इवः पात्राः दृत
 इतिपः अमृतः शृणवतः चातः पमीयः इतिचातः पमीयः पतयतिः पतयः दृतस्यः धारः
 अरुषः नाः काजीः कापीः सिंदनाः उर्मिः सिरिनिपण्डितः मिः पित्रमानः ॥७॥ अमिः पूवताः स
 मनेवेतिरामनाः इवायोषाः कुल्याणः स्मयमानासः अग्निः दृतस्यः धारः समिधः
 इतिसेः इधः नसेताः नुषाणः हयनिः जातवेदा इति जातः वेदाः ॥८॥ कन्याः इवे
 ति कन्याः इवा वहुतुः एतयोः पुंरुः अजिः अजानाः अमिः चाकरीतिः मिः यत्रः सामः



सुयज्ञो यत्रो यज्ञः। धृतस्यो धारः। अमि। तत्॥ पंचंते॥ १०॥ अमि। अर्षन्ता सुष्ठुति। सुष्ठुतिमि
निष्ठुः सुष्ठुतिमा गच्छं। अजि। अस्या सु। मश। इविणनि। धन्ता। इमो यज्ञो नयन्ता देवताः नः
। धृतस्यो धारः। मधुमृदिति मधुं मत्। पंचंते॥ ११॥ धर्मनात्ता विश्वो भुवर्ना अधि। श्रि
नो अं नरित्युतः। सुमुद्रा दृदि। अंत्तः। आयुषो। अपां। अनी के। सुमिथेदंति सुं। इथोयः। आ
भंत्त इत्याभंत्तः। नो अस्या मा मधुमंत्तमिति मधुं मंत्तः। तुर्मिमां॥ १२॥ वाजी। चामोष
सच इति पुं मवः। पयतिरिति पुं यतिः। पयतिरिति पुं सतिः। धीतिः। कर्तुं। स्वर्ः। श्लो
कः। श्रावः। श्रुतिः। ज्योतिः। स्वरिति स्वः। चामो यत्तेन। कृत्यंत्तं॥ १३॥ पाणः। अणान इत्यं
पुं आनः। यान इति चिउ आनः। असु। चिन्ते। अधीतमि साध्यात्तं। वाक्। मनः। चक्षुः॥

১৭৭৭
১৭৭৮

[illegible]

नि

॥११७॥

१३

आ. अमृ. ती. अ. अ. पु. जा. प. ते. रि. ति. पु. जा. प. ते. पु. जा. इ. ति. पु. जा. अ. अ. मृ. सा. वे. द. खा. ह. म. म. इ. ति.
 ए. को. न. वि. श. ति. मो. अ. यो. म. अ. रि. ति. पु. जा. ज. सं. नु. म. अ. वि. श्वो. अ. यो. मृ. त. वि. श्वो. ती. वि. श्वो.
 म. व. तु. अ. न. प. स. मि. इ. ति. स. इ. द्या. वि. श्वो. न. दे. वा. अ. व. सा. अ. मृ. तु. वि. श्वो. अ. मृ.
 इ. वि. श्वो. वा. ज. अ. मृ. इ. ति. स. वा. ज. न. स. मृ. पु. दि. श. इ. ति. पु. दि. श. च. न. स. वा. प.
 व. न. इ. ति. पु. व. त. वा. ज. न. वि. श्वो. दे. वा. च. न. स. ता. इ. ति. व. न. स. ता. इ. हा. अ. व. तु. वा.
 ज. न. अ. यो. प. सु. वा. ति. श. न. वा. ज. दे. वा. न. अ. नु. मि. रि. लु. तु. मि. क. ल. यो. ति. वा. ज.
 हि. मा. स. व. वी. र. मि. ति. स. व. वी. र. च. का. र. स. व. वा. ज. प. ति. रि. ति. वा. ज. प. ति. मृ.
 वे. य. मृ. वा. ज. पु. र. स्ता. ता. उ. ता. मृ. य. त. न. वा. ज. दे. वा. न. ह. वि. श्वो. च. न. यो. ति. वा. ज.
 हि. मा. स. व. वी. र. मि. ति. स. व. वी. र. च. का. र. वि. श्वो. अ. यो. वा. ज. प. ति. रि. ति. वा. ज. प.

॥११७॥

नि. ज. पे. यो. पा. सा. मा. स. ज. मि. अ. रि. ति. य. मि. ओ. ष. धी.
 नि. सा. अ. मृ. वा. ज. स. ने. यो. अ. ने. इ. प. यो. पृ. थि. यो. प. यो. ओ. ष. धी. प. यो. दि. वि. अ. न. रि.
 हो. प. यो. यो. प. य. स्व. ती. पु. दि. श. इ. ति. पु. दि. श. स. तु. म. द्या. स. र. स्व. से. वा. च. य. तु. म. ने. र. अ.
 ने. सा. मृ. अ. ने. ति. स. ज. ये. न. अ. मि. सि. चा. मि. अ. ता. पा. इ. क. त. वा. मे. ल. त. यो. मा. अ. मि. मं. ध. व.
 त. स्यो. ओ. ष. ध. यो. अ. स. र. स. मृ. द. ना. मा. स. न. इ. द. ब. लो. अ. यो. पा. न. त. स्यो. स्वा. हा. वा. द. ता.
 यो. स्वा. हा. स. इ. ति. स. हि. त. वि. श्वो. मे. ति. वि. श्वो. सो. मा. स. र्प. यो. मं. ध. व. त. स्यो. म. र.
 च. यो. अ. स. र. स. अ. यो. च. ना. मा. यो. सु. पु. म्ना. सु. सु. मृ. इ. ति. सु. सु. मृ. स. र्प. र. मि. रि. ति. स. र्प. र.
 मि. अ. इ. मा. मं. ध. व. त. स्यो. न. श. अ. मि. अ. स. र. स. मे. क. र. यो. ना. मा. श. इ. शि. र. वि. श्व. य.
 च. इ. ति. वि. श्व. य. यो. चा. त. यो. मं. ध. व. त. स्यो. अ. प. अ. स. र. स. दु. र्ज. ना. मा. यो. मृ. अ. सु. प.



॥ ११ ॥

[illegible]

॥ १५८ ॥

[illegible]

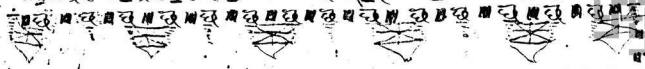
५५
१२४

शुचिं पृथुं चालीपापुनः सहायेति पुनः सहाया उद्देशः सा आत्रैश्चामिभिः सह
सेतुमिति सहस्रं तु पुरुषं तेति पुरुषं तस्मिन् तौ अहं ज्ञातुं द्रष्टुं प्रियं कुरुणं तौ अमिभू
त्रोचं माने पिपरीं अणदेमं द्रष्टुं वसी अग्र्यां यावनेः ॥ शम्भुना नमो श्रीमान् कुचुराणि
प्रियाः प्रियं स्थितिं प्रियाः पुनः पुनः तिष्ठन् वनेः ॥ अग्र्यां परं स्थानं मुक्तं मुक्तमेति
संशयः प्रविष्टा द्रष्टुं निम्नं विश्वं न तां विप्रं च द्रष्टुं ॥ ४५ ॥ वैश्वानरः नः पुनः यो
आप्यानुपुण्यवसति प्रत्यवर्तः अग्निः नः सुष्ठु तीः सुष्ठु तीरिति सुष्ठु तीः उपाया ॥ ५५ ॥
५५ ॥ द्वि विपुः अग्निः ॥ ५५ ॥ विष्वाः ओषधीः आश्विने श्वेत्वा नरः सहसा पृष्टः ॥
अग्निः सः नः दिवा सः रिषः पुनः नः ॥ ६५ ॥ अणमो नो कामौ अग्निः न वी दुती अश्या
मो रयिः ॥ ७५ ॥ तिष्ठन्ति रयिः सुवीरौ अश्यामौ नजौ अग्निः न जयंते ॥

शम
१२४

पु
१२४

अणमो नजौ अश्यामौ नजौ अग्निः न जयंते ॥ अश्यामौ नजौ अग्निः न जयंते ॥
हस्ताः नमस्ताः पुनः पुनः सद्यः यजिष्ठे नमस्ताः युद्धिदिमान् अश्वेधनाममना
विप्राः अग्निः ॥ ८५ ॥ अग्र्यां च दितीयां च त्रयां च अग्निः ॥ ९५ ॥ बुलादेका वदुपनिः सचैत
सुदृति सचैत सचैत बुलादेका वदुपनिः सचैत सुदृति सचैत सचैत बुलादेका वदुपनिः सचैत
हरिः ॥ १०५ ॥ इति विश्वानिमोऽप्यः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ ११५ ॥ सचैत
॥ १२५ ॥ अश्यामौ नजौ अग्निः न जयंते ॥ १३५ ॥ अश्यामौ नजौ अग्निः न जयंते ॥ १४५ ॥
अश्यामौ नजौ अग्निः न जयंते ॥ १५५ ॥ अश्यामौ नजौ अग्निः न जयंते ॥ १६५ ॥ अश्यामौ नजौ अग्निः न जयंते ॥ १७५ ॥



ग. र. २००० ए. १८९

ग. र. २००० ए. १८९

